इस अंक में...
शिक्षा पर संवाद :
माननीय शिक्षा मंत्री
के साथ

मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 10 | अप्रेल, 2023 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

विश्व पृथ्वी दिवस

Invest in our planet

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

अहिंसा परमो धर्म

भगवान महावीर ने अहिंसा को जीवन शुद्ध करने का आधार माना है। उनका विचार था कि किसी के प्रति मन में बदले की भावना होना भी हिंसा है। जीवन में सुख शांति के लिए अहिंसात्मक जीवन शैली की आवश्यकता होती है।

कोरोना काल में हम सभी ने स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए मास्क का उपयोग किया था, लेकिन जैन समुदाय में प्राचीन काल से ही मुखवस्त्र का उपयोग किया जा रहा है। इसके इस्तेमाल से जहाँ अहिंसा का पालन होता है, साथ ही हम खांसने-छींकने के साथ मुँह या नाक से निकलने वाले कीटाणु से फैलने वाली बीमारियों और प्रदूषित वायु के दुष्प्रभाव से बचे रहते हैं।

जैन धर्म में अनुशासित जीवन शैली पूर्णतया वैज्ञानिक है। स्वस्थ रहने के लिए आज जहाँ खान-पान नियंत्रित करने के प्रयास करते हैं वहीं जैन समाज में प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रकार के उपवास, सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं लेना, स्वाध्याय एवं ध्यान के माध्यम से व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक रूप से निरोग रहने के उपाय बताए जाते हैं। इससे शरीर का शुद्धीकरण होता है। मेरा विश्वास है कि भगवान महावीर की इन शिक्षाओं को धारण करके व्यक्ति जीवन की हर परिस्थिति में प्रसन्न रह सकता है।

आधुनिक भारत के निर्माता एवं दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जीवन में मजदूर एवं दलित वर्ग को समानता, न्याय एवं हक दिलवाने के लिए जीवनपर्यन्त प्रयास किए। बाबा साहब चाहते थे कि राष्ट्र के प्रत्येक बच्चे को शिक्षा मिलनी चाहिए। अच्छी शिक्षा प्राप्त करके ही व्यक्ति का जीवन प्रेरित होता है। शिविरा पत्रिका के माध्यम से मेरा शिक्षक वर्ग से आग्रह है कि विद्यालय में आने वाले प्रत्येक बच्चे को पुस्तक ज्ञान के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी दिए जाए ताकि उनमें नीर-क्षीर विवेक जागृत हो सके।

वैसाखी उत्तर भारत का महत्त्वपूर्ण फसलोत्सव पर्व होने के साथ-साथ सिख धर्म के खालसा पंथ का स्थापना दिवस भी है। भारतीय संस्कृति में इस प्रकार के पर्व उत्सव प्रत्येक जन के मन में प्रसन्नता एवं जोश का संचार कर जीवन को और अधिक प्राणवान बनाते हैं।

भारतीय सिविल सेवा भारत सरकार की नागरिक सेवा है। यह देश की प्रशासनिक सेवाओं की बुनियाद है। सिविल सेवक भारत की संसद एवं राज्यों की विधानसभा में जनप्रतिनिधियों के साथ प्रशासन चलाने में सहयोग करते हैं। आज के वैश्विक युग में शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है। विभिन्न संचार माध्यम से विद्यार्थी अनेक नई जानकारियाँ हासिल करते हैं। आज हर विद्यार्थी का सपना सिविल सेवा का होता है क्योंकि इस सेवा का कार्यक्षेत्र व्यापक हैं, विविधताओं एवं चुनौतियों से भरा है, साथ ही जन सेवा का अवसर भी मिलता हैं। इससे आमजन के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाए जा सकते हैं। प्रशासन समाज को प्रभावित करता है। यही कारण है कि आज युवा वर्ग इसकी ओर आकर्षित हो रहा है। विद्यार्थी प्रयास भी करते हैं, लेकिन अनेक बार उचित जानकारी के अभाव एवं सही मार्गदर्शन नहीं मिलने के कारण भ्रमित हो जाते हैं। अध्ययन की गहन नियोजित एवं निरन्तर तैयारी के साथ सफलता हासिल की जा सकती है। शिक्षा विभाग के गौरव हमारे युवा निदेशक श्री गौरव अग्रवाल इसकी मिसाल हैं। इन्होंने कठिन परिश्रम, धैर्य और लगन से सिविल सेवा परीक्षा वर्ष 2013 में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वयं को साबित किया। विद्यार्थियों को मेरी सलाह है कि ऐसे आदर्शों का अनुकरण कर स्वयं को प्रेरित करें तथा एकाग्रता से लक्ष्य केन्द्रित प्रयास करें।

रमजान के पवित्र माह में इस्लाम समुदाय के लोग प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक रोजा रखते हैं। ईद-उल-फितर पर्व परस्पर भाई-चारे की भावना के साथ प्रत्येक इंसान को समाज के उत्थान के लिए निजी इच्छाओं का त्याग कर समर्पण भाव से कार्य किए जाने का सन्देश देता है।

संसार के प्रचलित सभी धर्मों में दान, पुण्य, जकात देना बताया गया है। यह धर्मों की समानता है। परोपकार को सबसे बड़ा धर्म एवं दूसरे को नुकसान पहुँचाना पाप (अधर्म) बताया गया है। दीप प्रज्वलन, मोमबत्ती चिराग ये सभी धर्मों के धर्म स्थलों पर जलाए जाते हैं। ऐसी अनेक समान बातें सर्वधर्म समभाव को दर्शाती है।

अहिंसा व्यक्ति के जीवन में आए, इस हेतु सात्विक भोजन करना चाहिए, सात्विक भोजन सात्विक बुद्धि हेतु उपयुक्त माना गया है। विद्यार्थियों को संतुलित सात्विक भोजन करना चाहिए ताकि वे सात्विक बुद्धि का विकास करते हुए अहिंसावादी बन सकें। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे सभी धर्मों का आदर करें तथा सर्वधर्म समभाव रखते हुए अपने-अपने धर्मों का पालन करे।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

"अध्ययन की गहन नियोजित एवं निरन्तर तैयारी के साथ सफलता हासिल की जा सकती है। शिक्षा विभाग के गौरव हमारे युवा निदेशक श्री गौरव अग्रवाल इसकी मिसाल हैं। इन्होंने कठिन परिश्रम, धैर्य और लगन से सिविल सेवा परीक्षा वर्ष 2013 में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वयं को साबित किया। विद्यार्थियों को मेरी सलाह है कि ऐसे आदर्शों का अनुकरण कर स्वयं को प्रेरित करें तथा एकाग्रता से लक्ष्य केन्द्रित प्रयास करें।"

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

कर्त्तव्य-पथ पर समर्पण भाव

यह माह वर्तमान शैक्षिक सत्र के अवसान के साथ ही नवीन शैक्षिक सत्र 2023-24 के आगमन का संधि काल है। विगत शैक्षिक सत्र की गौरवमयी उपलब्धियों यथा माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा बजट घोषणा में विगत दो वर्षों में कक्षा 3-8 के विद्यार्थियों के लर्निंग लॉस की पूर्ति करने के लिए राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। इस हेतु कार्यक्रम के राज्य नोडल प्रभारी डॉ. अरूण कुमार शर्मा को उनके द्वारा प्रत्येक शुक्रवार को किए गए वेबिनार को इनोवेशन के रूप में पुरस्कार के लिए चयन किया गया। यह सम्पूर्ण प्रदेश के लिए गौरवमयी पल है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं के साथ ही कक्षा 5 व 8 की परीक्षाएँ भी चल रही है। विद्यार्थी जिस उत्साह, आशा एवं अपेक्षा के साथ सत्रारम्भ में विद्यालयों में प्रविष्ट हुए थे, उसे किस सीमा तक वह प्राप्त कर पाए यह परिणाम से परिलक्षित होगा। मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के संयुक्त प्रयासों से परीक्षा परिणाम में छात्रों को यथोचित स्थान प्राप्त होगा। राज्य के शिक्षकगण प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य करते हुए शिक्षकीय दायित्वों का भली-भाँति निर्वहन करते रहे हैं। मैं उन्हें बधाई देते हुए कर्त्तव्य पथ पर पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से आगे बढ़ने की मंगलकामना करती हूँ।

> **"विद्यार्थी जिस उत्साह, आशा एवं अपेक्षा के साथ सत्रारम्भ में विद्यालयों में प्रविष्ट हुए थे, उसे किस सीमा तक वह प्राप्त कर पाए यह परिणाम से परिलक्षित होगा। मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के संयुक्त प्रयासों से परीक्षा परिणाम में छात्रों को यथोचित स्थान प्राप्त होगा। राज्य के शिक्षकगण प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य करते हुए शिक्षकीय दायित्वों का भली-भाँति निर्वहन करते रहे हैं।"**

इस माह महावीर जयन्ती, गुड फ्राइडे, डॉ. अम्बेडकर जयन्ती, ईदुल-फितर, परशुराम जयन्ती सहित कई उत्सव, पर्व है। अप्रैल माह उत्सव, पर्व, मेले-मगरियो का महीना है। इनमें हमारे लोक जीवन, लोक संस्कृति के विविध रंग बिखरे पड़े हैं जो हमें सामूहिक जीवन व मानवीय अस्मिता का बोध कराते हैं। जैन धर्म के प्रवर्तक एवं करुणा व क्षमा के अवतार महावीर स्वामी के उपदेश विश्व में प्रेम, सहयोग, समन्वय, सहिष्णुता, करुणा एवं क्षमा जैसे उच्च मानवीय गुणों की स्थापना करते हुए वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को सिद्ध करते हैं।

इदुल-फितर का पर्व भी इसी माह है जो रमजान माह की समाप्ति पर चाँद का दीदार होने पर मनाया जाता है। इस्लामी वर्ष का पवित्र नौंवा माह रमजान कहलाता है। रमजान के दिनों में खुदा ने जिब्रील नामक फरिश्ते द्वारा हजरत पैगम्बर मोहम्मद साहब के पास अपना संदेश भेजा था। हजरत जिस संदेश को लाए, उसी का नाम कुरान शरीफ है। रमजान माह शरीर और मन पर संयम रखने की शिक्षा देता है। भूखे-प्यासे रहने से शरीर की इन्द्रियों पर अंकुश लगता है। इससे धैर्य, सहन शक्ति और दृढ़ता विकसित होती है।

भारतीय संविधान निर्माता तथा दलितों की मुक्ति और सामाजिक समता के लिए आजीवन संघर्ष करने वाले डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती भी इसी माह 14 अप्रैल को है। हम सभी के लिए इनका जीवन अनुकरणीय है। ऐसी महान विभूतियों के जीवनानुभव को हमें अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए।

Zahida
(जाहिदा खान)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

परीक्षाओं का सफल संपादन

समय का चक्र अबाध गति से चलते हुए निरन्तर आगे बढ़ रहा है। सामाजिक त्योहारों की रंगत से निकलकर हमारे शिक्षक और विद्यार्थी माह मार्च में आयोजित कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं के लिए अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा के साथ परीक्षा रूपी शैक्षिक त्योहार के आयोजन में लगे हुए हैं। परीक्षा स्वयं का मूल्यांकन करने की कसौटी है। शिक्षक, अभिभावक एवं विद्यार्थी सभी परीक्षाओं को सहज रूप में स्वीकार करें। जीवन में प्रत्येक कार्य को पूर्ण समर्पण के साथ करने की प्रवृति विद्यार्थियों में विकसित करते हुए शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि स्व मूल्यांकन के भाव का विकास करते हुए तनाव रहित वातावरण में विद्यार्थियों को श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेंगे, यह समझाते हुए कि कोई भी परीक्षा अंतिम नही होती। बोर्ड परीक्षाओं के पश्चात गृह परीक्षाएँ आरम्भ होगी। बोर्ड परीक्षाओं के समान ही गृह परीक्षाओं को सफलता पूर्वक सम्पादित करना हमारा ध्येय है।

राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। इसी कड़ी में RKSMBK के राज्य नोडल प्रभारी डॉ. अरूण कुमार शर्मा द्वारा प्रत्येक शुक्रवार को आयोजित किए गए वेबिनार के नवाचार को राष्ट्रीय पुरस्कार के रूप में चयनित किया गया है। भारत सरकार द्वारा दिए गए इस राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए डॉ. शर्मा एवं टीम RKSMBK को अशेष शुभकामनाएं.....

RKSMBK के तहत विभाग द्वारा आगामी सत्र हेतु कक्षा 01 से 02 के लिए NEP के अनुसरण में नवीन पाठ्य पुस्तकें अनुमोदित की गई है। इन पाठ्य पुस्तकों का लक्ष्य पाठ्य वस्तु को रटने की बजाय समझने पर केन्द्रित करना है। इतनी बेहतरीन पुस्तकें तैयार करने के लिए RSCERT और निदेशालय की टीम का आभार, जो उन्होंने विश्व स्तरीय पुस्तकें तैयार की है और राजस्थान को नवीन पाठ्यक्रम को लागू करने में अग्रणी बनाया है।

इस सत्र में कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी, हिन्दी विषयों में रटने की प्रवृति से दूर करते हुए आनन्ददायी वातावरण में सम्बन्धित दक्षता में समझ विकसित कर कार्यक्रम की मूल भावना के आधार पर शिक्षकों ने कार्य किया है। रटी हुई बात भूल सकते हैं पर सीखा हुआ याद रहता है। RKSMBK कार्यक्रम परम्परागत रूप से रटने पर आधृत शिक्षण व्यवस्था को परिवर्तित कर समझ कर सीखने के बहुआयामी व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का स्पष्ट मत था कि विद्या, प्रयत्न और परिश्रम द्वारा व्यक्ति पराक्रमी बन सकता है। मूल्यों के इस दौर में मेरी शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे हमारे विद्यार्थियों में महावीर स्वामी के त्रिरत्नों सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र के गुणों का विकास करते हुए उन्हें आदर्श नागरिक बनाएंगे।

प्रेम और भाईचारे के संदेश से युक्त इदुलफितर की आप सभी को हार्दिक बधाई .....

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

"इस सत्र में कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को गणित, अंग्रेजी, हिन्दी विषयों में रटने की प्रवृति से दूर करते हुए आनन्ददायी वातावरण में सम्बन्धित दक्षता में समझ विकसित कर कार्यक्रम की मूल भावना के आधार पर शिक्षकों ने कार्य किया है। रटी हुई बात भूल सकते हैं पर सीखा हुआ याद रहता है। RKSMBK कार्यक्रम परम्परागत रूप से रटने पर आधृत शिक्षण व्यवस्था को परिवर्तित कर समझ कर सीखने के बहुआयामी व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होगा ऐसा मेरा विश्वास है।"

Rajasthan Education Department

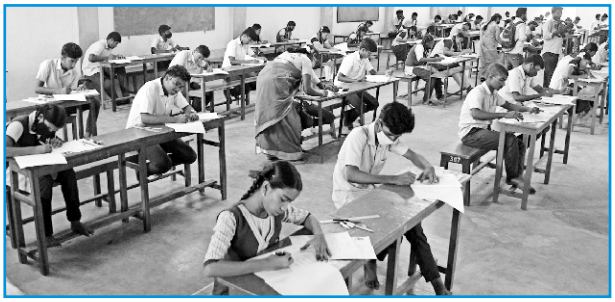

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 10 | चैत्र-वैशाख २०७९-८० | अप्रेल, 2023

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल
❄
वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला
❄
सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित
❄
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
❄
प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात
- अहिंसा परमो धर्म 3

मेरा संदेश
- कर्त्तव्य-पथ पर समर्पण भाव 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- परीक्षाओं का सफल संपादन 5

आलेख
- माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला से शिक्षा पर संवाद के कुछ अंश 7
  डॉ. संगीता पुरोहित
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता 13
  डॉ. रणवीर सिंह
- पर्यावरण संरक्षण 14
  पार्वती
- संघर्ष की प्रतिमूर्ति : भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर 15
  कमलेश कटारिया
- भारतीय इतिहास में जलियाँवाला बाग 16
  योगेश कुमार सैन
- अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या : निदान और नियमन 18
  कृष्ण बिहारी पाठक
- देव अरस्तु पंचारिया : अगले अल्बर्ट आइंस्टाइन 20
  शिवशंकर व्यास
- शब्द और संप्रेषण कौशल की उद्गम होती है-'मातृभाषा' 21
  सुनील कुमार महला
- भगवान महावीर का दर्शन और प्रासंगिकता 23
  संदीप जैन
- महात्मा ज्योतिबा फुले के समाज और शिक्षा पर विचार 24
  पृथ्वीराज लेघा
- Challenge and Future 30
  Rimpa Talwar
- धरा की कोख उजड़ रही... 33
  सत्यनारायण नागोरी
- हिन्दी बाल-पत्रिकाओं एवं हिन्दी समाचार-पत्रों में बच्चों की दुनिया 34
  डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
- ग्लोबल वार्मिंग : कारण और प्रभाव 36
  पूनम
- कैसे तैयार हो अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी 38
  जसवंत सिंह
- गणित का दैनिक जीवन में उपयोग 40
  दिनेश कुमार
- मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर! 41
  दिनेश कुमार यादव

रपट
- हैण्डबॉल एवं बास्केटबॉल मैदान शिलान्यास 33
  अजय पाल सिंह
- शैक्षिक भ्रमण : बीकानेर से गुजरात-महाराष्ट्र 37
  ओमप्रकाश व दिव्या

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : मार्च, 2023 25-29
- शिविरा पञ्चाङ्ग : मार्च, 2023 29
- Telecast Schedules of PM e-vidya 29
- बाल शिविरा 42-43
- शाला प्रांगण से 45-46
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 47-48
  हंसराज मीना
- हमारे भामाशाह 48
- ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट 51

पुस्तक समीक्षा 44
- पराक्रमी परमारां रौ प्रकास
  लेखक : संग्राम सिंह सोढ़ा
  समीक्षक : अशोक कुमार व्यास

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary
मुख्य अवरण : आशीष राजोरिया

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

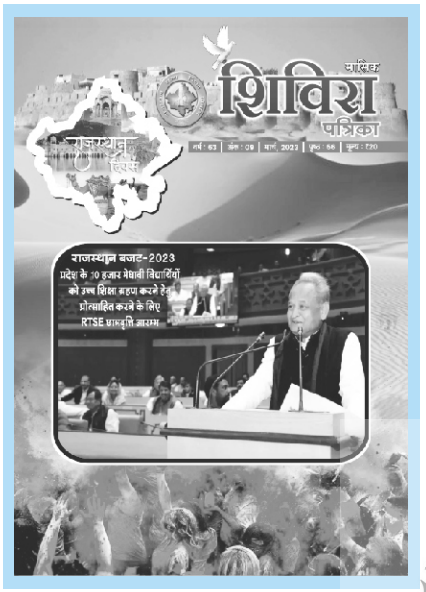

▼ चिन्तन

पात्रापात्र- विवेकोऽस्ति
धेनुपन्नगयोः इव।
तृणात् सञ्जायते क्षीरं
क्षीरात् सञ्जायते विषम्!

–सुपात्र और कुपात्र के भेद को समझना गाय और साँप के भेद को समझने के समान है। (गाय द्वारा खाये हुए) घास से दूध पैदा होता है। अर्थात् गाय घास खाती है और दूध देती है। परन्तु साँप के पिये हुए दूध से जहर उत्पन्न होता है। इससे स्पष्ट है कि गाय के सुपात्र और सर्प के कुपात्र होने के कारण ऐसा ही होता है।

पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका का मार्च 2023 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। इस अंक का मुखावरण पृष्ठ माननीय मुख्यमंत्री महोदय का राजस्थान बजट 2023 के परिप्रेक्ष्य में बजट प्रस्तुत करने का चित्र एवं राजस्थान दिवस पर विशेष साज सज्जा के साथ आकर्षक लगा। अपनों से अपनी बात में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने विद्यार्थियों को मार्च में शुरू होने जा रही बोर्ड परीक्षाओं में बिना भय व तनाव के परिश्रम करते हुए आत्मविश्वास से अच्छे अंक लाने का आशीर्वाद निसंदेह विद्यार्थियों की कठिनाइयाँ दूर करेगा। 22 मार्च को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा व नववर्ष प्रारंभ पर माँ जगदम्बा की अराधना करने व खुशहाल राजस्थान की कामना प्रशंसनीय है। माननीया शिक्षा राज्य मंत्री महोदया जाहिदा खान ने शिक्षकों को विनम्रता, धैर्य एवं मेहनत से विद्यार्थियों में मानवीय गुणों को विकसित करने का आह्वान प्रेरक है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविता के अंश प्रेरणादायी लगे। दिशाकल्पः मेरा पृष्ठ में निदेशक महोदय ने विद्यार्थियों को लगन व मेहनत से अच्छे अंक लाने का प्रोत्साहन सटीक लगा। महिला दिवस (अंतर्राष्ट्रीय) पर महिला विकास हेतु संकल्प लेने की आवश्यकता पर जोर देना उचित ही है। 'राष्ट्रीय मूल्यों के प्रणेता के रूप में शिक्षक' आलेख शिक्षक को अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा से कार्य करने व समाज में अच्छे नागरिकों का भार शिक्षक को बहुत ही झेलना पड़ता है तभी तो पूरा समाज शिक्षक की ओर उम्मीद की किरण की आशा करता है। शिक्षा व शिक्षक का राष्ट्र निर्माण में योगदान अविस्मरणीय है। डॉ. रमेशचंद्र टांक का आलेख 'भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्वों का विवेचन' में भारतीय संस्कृति व पारंपरिक मूल्यों की महानता का विस्तृत विवेचन है। दुनिया में भारतीय संस्कृति सनातन है। हमें इस पर गर्व होना चाहिए। 'जुगनुओं का जीवन' आलेख में प्रकृति के जुगनू नाम के छोटे से जीव में विभिन्न रंगों में टिमटिमाता दिखने वाला यह प्राणी मनुष्य के लिए आकर्षण का केन्द्र है। 'रपट' में 30वाँ राज्य स्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह का विस्तृत विवरण बहुत ही जानकारीपरक लगा। इसको पूर्ण पढ़ने के बाद ऐसा महसूस होता है कि जैसे हम प्रत्यक्ष इस समारोह में उपस्थित हो। अपनी मेहनत, लगन व कर्त्तव्य निष्ठा से विभाग के कर्मशील कार्मिकों का सम्मान तो होना ही चाहिए क्योंकि मंत्रालयिक व सहायक कार्मिक किसी भी कार्यालय की रीढ़ होती है। बुलाकी शर्मा का सामाजिक संबंधों से संबंधित आलेख सामाजिक सरोकार का आलेख है। समाज और मनुष्य का अटूट संबंध है। एक दूसरे के बिना कल्पना असंभव है। इस अंक में अन्य स्थाई स्तंभ यथा पाठकों की बात, शाला प्रांगण से, पुस्तक समीक्षा, हमारे भामाशाह, बाल शिविरा, आदेश परिपत्र व शिविरा पंचांग शिविरा की शान में चार चाँद लगाते हैं। इस रंगीन व आकर्षक अंक व स्तरीय रचनाओं के चयन के लिए 'शिविरा टीम' को साधुवाद। सादर।

रामजीलाल घोड़ेला, बीकानेर

- शिविरा माह मार्च 2023 का अंक आद्यन्त पढ़ा। रोचक, ज्ञानवर्धक व अभिप्रेरित करने वाला था। अपनों से अपनी बात से लेकर विविध पहलुओं को छूते आलेख पठनीय और विचारणीय थे। मेरा सुझाव है कि जिस प्रकार मार्च माह के अंक में भावी अप्रेल माह और मई– जून के लिए पूर्व में विषय सुझाए गए हैं जिन पर कलम चलाई जा सके। नए सत्र में भी प्रत्येक माह हेतु विषयों का चयन एवं आलेखों की सीमाएँ तय की जाए। निर्धारित 56 पृष्ठों की संख्या को भी बढ़ाया जा सकता है। बाल शिविरा के माध्यम से बालकों की अभिव्यक्ति की भागीदारी बढ़ी है। यदि शिक्षक बालकों की सृजनात्मक कौशल व अभिव्यक्ति को अभिप्रेरित करें तो बहुत रोचकता आएगी साथ ही पठन कौशल का विकास होगा।

भगवान सिंह राठौड़, नागौर

Rajasthan Education Department

माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला से शिक्षा पर संवाद के कुछ अंश

❒ डॉ. संगीता पुरोहित

राजस्थान के यशस्वी शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला के नव नवोन्मेषी चिंतन एवं कुशल नेतृत्व से विभाग शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर रहा हैं जिन्हें देश भर में सराहा जा रहा हैं। सहज, सरल, उदार व्यक्तित्व के धनी डॉ. कल्ला से शिक्षा के क्षेत्र में किए प्रयासों को जानने हेतु प्रस्तुत हैं बातचीत के कुछ अंश......

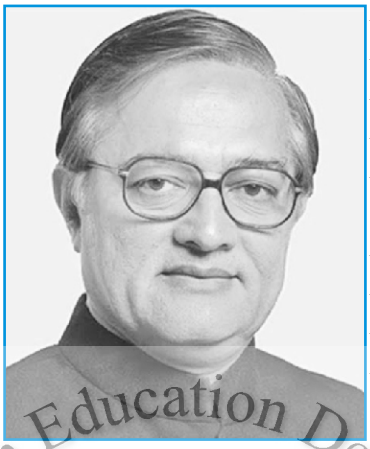

शिविरा : 1 वैश्विक महामारी कोरोना काल में छात्रों के विद्यालय से दूर होने के कारण वैकल्पिक शिक्षा से संबंधित सराहनीय प्रयास किए गए। अभी भी बहुत से छात्रों के अध्ययन नुकसान की भरपाई होना अपेक्षित है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा विभाग द्वारा क्या कार्य नीति अपनाई गई है?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : कोरोना वायरस वैश्विक महामारी ने समान रूप से सभी विभागों एवं वर्गों पर असर डाला है, परन्तु शिक्षा विभाग राजस्थान ने इस विषम परिस्थिति में छात्रों के अध्ययन संबंधित हानि को कम करने हेतु स्माईल 1.0, 2.0, 3.0, आओं घर से सीखे, हवामहल कार्यक्रम जैसे नवाचार पूर्ण सफलता के साथ किए हैं।

हमने कोविड दौर में शुरू किए तकनीकी कार्यक्रमों की रूपरेखा को पोस्ट कोरोना काल में और व्यापक बनाया है। शाला संवाद कार्यक्रम अंतर्गत शिक्षक से बात, ई-पत्रिका जैसे-ई-गार्गी, ई-गपशप, ई- बचपन द्वारा छात्रों के लिए अध्ययन सामग्री व 'प्रयास' माध्यम से प्रश्न बैंक, किताबें एवं उत्तर पुस्तिकाएँ उपलब्ध करवाई गई है। RBSE[1] व NCERT[2] से ई सामग्री संसाधन, ई-कक्षा, ई-ज्ञान पोर्टल आदि पर पाठ्यवस्तु व ई-लर्निंग उपलब्ध है। राजीव गाँधी कॅरियर गाइडेंस पोर्टल विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक का कार्य कर रहा है। इन समस्त कार्यो से हमारे बच्चों का भविष्य उज्ज्वल होगा। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में व्यवधान को दूर करने हेतु राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम ब्रिज कोर्स द्वारा कक्षा 1 से 8 के लिए लर्निंग आधारित अठारह कलस्टर वर्कबुक्स विभाग द्वारा तैयार की गई है।

हमने शिक्षा की गुणवत्ता पर भी पूरा ध्यान केन्द्रित किया है। ऐसे छात्र जो कोविड के समय से ही अध्ययन में पीछे छूट गए हैं, उन्हें कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के समान स्तर पर लाने के लिए RKSMBK[3] द्वारा लर्निंग लॉस को कम करने के सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए स्कूलों में आई.सी.टी. लैब, डिजिटल लैब, सेन्ट्रल हब, स्मार्ट क्लासेज जैसे विकल्पों से अध्यापन कार्य सुगम बनाया गया है। इस कालखण्ड में प्रतिदिन कक्षावार एवं विषयवार विषयवस्तु विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के मोबाइल पर उपलब्ध करवाई गई है। साथ ही इसका आकलन भी पूर्ण सहजता के साथ तकनीकी तौर पर उपलब्ध करवाया गया है। जिन गाँव, ढाणियों के विद्यालयों में तकनीक एवं ऑनलाइन सुविधाओं की कमी थी वहाँ हमने कलस्टर के माध्यम से अभाव दूर करने के प्रयास किए हैं। हमारी सरकार लर्निंग लॉसेस की पूर्ति हेतु पूर्ण प्रतिबद्ध है एवं इसके लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए शिक्षकों को भी तकनीकी प्रशिक्षण समय-समय पर दिया जा रहा है।

भविष्य में ऐसी विपदा की आशंका को ध्यान में रखते हुए विभाग ने 2023-24 से गैर सरकारी वर्चुअल विद्यालय संचालित करने की अनुमति प्रदान की है। यह उन विद्यार्थियों के लिए है जो कोविड-19 या अन्य परिस्थितियों में स्कूल नहीं जा सके तो भी वर्चुअल स्कूल में प्रवेश लेकर घर से अध्ययन कार्य की ऑनलाइन सुविधा प्राप्त कर सकेंगे। विभागीय प्रशासन, तकनीक और विद्यालयी स्टाफ के सहयोग से भविष्य की आपदा से (शैक्षिक संकट) निपटने में तैयार है। वर्तमान विद्यालयों में माननीय मुख्यमंत्री के डिजिटल इनिशिएटिव और क्वालिटी एज्युकेशन कार्यक्रम के तहत स्मार्ट टीवी से पढ़ाई हो रही है।

शिविरा : 2 विभाग द्वारा विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में समस्त वर्गों के छात्र-छात्राओं के प्रोत्साहन हेतु क्या कदम उठाए जा रहे है?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : शिक्षा समानता की जनक है। समान शैक्षिक अवसर कल्याणकारी राज्य की संकल्पना व संविधान में वर्णित राज्य के नीति निदेशक तत्वों की सार्थकता दर्शाते हैं। महात्मा गाँधी का सपना था कि हर वर्ग के विद्यार्थी की शिक्षा तक पहुँच हो एवं बालिका शिक्षा उन्नत हो तो हम बेहतर कल बना सकेंगे। हमारी सरकार इसी मूलतंत्र के साथ जुटी हुई है। उदाहरण स्वरूप कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना समाज के सभी वर्गों अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामान्य वर्ग में आर्थिक पिछड़े वर्ग, विमुक्त, अर्ध घुमंतु वर्ग की छात्राओं में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा विकसित कर सकेंगी। 12वीं कक्षा की छात्राएँ अधिक अंक प्राप्त कर इस योजना का लाभ उठा सकती है।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

गौरतलब है कि इस वर्ष 17537 स्कूटी वितरित की जानी प्रस्तावित है एवं हमारी सरकार ई-स्कूटी पर भी विचार कर रही है। आर्थिक पिछड़ा वर्ग की कक्षा 6 से 8 की छात्राओं हेतु 5800 एवं विमुक्त घुमंतु, अर्द्धघुमंतु समुदाय के कक्षा 6 से 11 के विद्यार्थियों हेतु 3333 निःशुल्क साइकिल वितरण की जानी है। इसी बजट सत्र 2023 में प्रदेश के 10,000 मेधावी विद्यार्थियों के प्रोत्साहन हेतु RTSE[4] छात्रवृत्ति आरंभ की जा रही है। आई एम शक्ति उड़ान योजना बालिकाओं के स्वास्थ्य पर केन्द्रित है। इसके तहत हर माह सेनेट्री नेपकिन वितरित किए जा रहे हैं। आइ एम शक्ति कॉर्नर एवं वॉल सरकारी विद्यालयों में स्थापित किए गए है। इस वॉल पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की महिलाओं की जीवनी प्रदर्शित की गई है। चुप्पी तोड़ो, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं, बालविवाह रोकथाम आदि जागरूकता अभियान चलाएं जा रहे हैं। निजी विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 तक छात्राओं की शिक्षा जारी रखने व अभिभावकों के आर्थिक बोझ को कम करने के लिए इंदिरा महिला शक्ति निधि से फीस पुनर्भरण की घोषणा की गई है। मैं यह भी बताना प्रासंगिक मानता हूँ कि इन सभी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन का परिणाम है कि विद्यालयों में ड्रॉप आउट विद्यार्थियों के आँकड़ों में निरंतर कमी देखने को मिली है। यह सुखद विषय है कि बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार के साथ 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ' योजना का दायरा वर्तमान में और बढ़ा दिया गया है। KGBV[5] हॉस्टल व अन्य योजनाओं के माध्यम से पिछड़े वर्ग की छात्राओं को प्रोत्साहित कर उच्च शिक्षा तक पहुँचाना व रोजगारोन्मुख बनाना हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

बजट सत्र 2023-24 में दिव्यांग विद्यार्थी (मूक बधिर, नेत्रहीन, शारीरिक अक्षमता युक्त) हेतु आर्थिक सबलता पुरस्कार का क्षेत्र भी बढ़ाया गया है। विद्यार्थियों हेतु लर्निंग ऐड सामग्री युक्त संदर्भ कक्षों के निर्माण हेतु 40 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। दिव्यांगों हेतु संचालित एडेड एज्यूकेशन इन्स्टीट्यूशन में ब्रेल पुस्तकें तथा प्ले एलिमेन्ट्स उपलब्ध करवाने हेतु 15 करोड़ रुपये का प्रावधान है। राज्य में कक्षा 10 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली 3 छात्राओं को जो राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत हो उन्हें विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु भेजने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। कस्तूरबा गाँधी विशेष सावधि जमा रसीद योजना, देवनारायण स्कूटी योजना, राजस्थान एकल पुत्री योजना, राजस्थान मुख्यमंत्री निशुल्क कोचिंग योजना से भी हमारी सरकार द्वारा बालिकाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। जनजाति क्षेत्रों में शिक्षा के विकास हेतु एकलव्य मॉडल ई-बोर्डिंग विद्यालय, जनजाति बालिका आश्रम छात्रावास एवं शिक्षा सहित स्वास्थ्य सुविधाओं हेतु इसी सत्र में 250 माँ-बाड़ी केन्द्र खोले जाएंगे। इसी क्रम में अल्पसंख्यक छात्रावास योजना द्वारा शैक्षिक विकास को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

शिविरा : 3 विद्यालय विद्यार्थी के शैक्षिक विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास का कार्य भी करता है। शिक्षा विभाग विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु किस प्रकार के नवाचार कर रहा है?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास के लिए शिक्षा को आनंददायी बनाकर विद्यालय से विद्यार्थी को जोड़ना हमारा प्राथमिक कदम है। विद्यालयों में शनिवार को 'नो बैग डे' के रूप में आयोजित किया जा रहा है। इस दिन अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए गए है। इन कार्यक्रमों द्वारा शनिवार को शुभवार बनाने का हमारा संकल्प है जिससे विद्यार्थी एक ओर राजस्थान के इतिहास एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त करते हैं वहीं दूसरी ओर उच्चारण, लेखन, नेतृत्व एवं सृजनात्मक क्षमताओं का विकास भी करते हैं। हमारे समक्ष नो बैग डे की पंचधीम योजना के अतिरिक्त ऐसे उदाहरण आऐ हैं जहाँ संस्था प्रधानों ने विद्यार्थियों में प्रकृति व पर्यावरण के प्रति जागरूकता हेतु पर्यावरण मित्र, हरियाली शाला कार्यक्रम आयोजित किए हैं तो दूसरी ओर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व मुखरता हेतु संसदीय वाद-विवाद, मॉडल यूनाइटेड नेशन (MUN) आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाई है। हमारी सरकार ने 67 वर्ष पश्चात प्रदेश में जम्बूरी का सफल आयोजन करवाया है। इसके लिए प्रत्येक प्रदेशवासी गर्व का अनुभव करता है। N.S.S.[6]/N.C.C.[7]/स्काउट व गाइड आदि गतिविधियाँ विद्यालयी स्तर से बालमन में देशप्रेम, समाज कल्याण व मानव हितार्थ सेवा के मूल्यों को सहेजने का कार्य करती है।

विद्यालयों में 'गुड टच बैड टच' 'माहवारी स्वच्छता प्रबंधन' पर कार्यशाला आयोजित कर सरकारी अध्यापकों को मास्टर ट्रेनर (महिला पुरुष समान रूप से) के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। साथ ही बच्चों के विकास हेतु तनाव मुक्ति, योग, बुक्स, हमारे अधिकार, कॅरियर काउंसलिंग के लिए भी काम हो रहा है। वर्ष 2022-23 बजट घोषणा अंतर्गत राजकीय विद्यालयों में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास योजना शुरू की गई है। जिसमें मेधावी छात्रों द्वारा शैक्षिक व सहशैक्षिक कार्यों यथा- वाद-विवाद, देशभक्ति, गीत-गायन, निबंध प्रतियोगिता में अति उत्तम प्रस्तुति वाले विद्यार्थियों को अन्य राज्यों में 10 दिवसीय शैक्षिक सांस्कृतिक भ्रमण करवाया गया है। इस अंतर्राज्य भ्रमण में विद्यार्थी कश्मीर से कन्याकुमारी तक की यात्रा कर 'भारत एक राष्ट्र' और उसकी विविधता में एकता को मजबूत करने वाली सांस्कृतिक ऐतिहासिक धरोहर से परिचित हुए। ढाणियों में रहने वाले धोरों की धरती राजस्थान के नौनिहालों के लिए नदियों को देखना भी एक सपना था, विभिन्न योजनाओं के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने भारत के समुद्रों पार छात्रों की पहुँच बना दी है। वर्तमान युग वैश्विक मुखरता का युग है। हम बच्चों को समयानुसार उच्च शिक्षित व स्वावलंबी बनाने का प्रयत्न

Rajshri Education Foundation
सत्यमेव जयते

कर रहे है जिससे भारत की सांस्कृतिक विरासत को संभालने में प्रदेश के विद्यार्थी अग्रणी दायित्व निभा सकेंगे।

शिविरा : 4 भारतीय संस्कृति में शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम् कहा गया है, छात्र-छात्राओं के शारीरिक विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हो रहे हैं?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मस्तिष्क के विकास का आधार है। विद्यार्थियों को आकर्षित करने हेतु खेल एक विशिष्ट आयाम है। विद्यार्थी जीवन में खेल स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ सहभागिता व अनुशासित जीवन शैली के लिए प्रेरित करता है। हम संकल्पित हैं कि सरकारी विद्यालयों से अधिक से अधिक खिलाड़ी निकलकर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पटल पर देश व प्रदेश का नाम रोशन कर सके। भारत शतरंज का जनक माना गया है। 19 नवम्बर, 2022 को चेस इन एक्टिविटि में हमारे प्रदेश के 54977 विद्यालयों में बुद्धिबल के इस खेल का आयोजन कर एक दिन में 36,13,169 विद्यार्थियों के खेलने का अन्तर्राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किया गया है। यह प्रदेश के शिक्षा विभाग की सफलता के साथ-साथ विद्यार्थियों के खेल के प्रति सकारात्मक रुझान को दर्शाता है। विद्यालयी स्तर पर खेल संबंधित सामग्री उपलब्ध कराने से लेकर विभिन्न खेल टूर आयोजनों तक हमारा विभाग धरातल पर सार्थक कार्य कर रहा है।

इस क्षेत्र में 'राजीव गाँधी ग्रामीण एवं शहरी ओलंपिक खेल' योजना मील का पत्थर सिद्ध हुई है। राज्य में संभवतः यह प्रथम बार है जब कक्ष 11 व 12 में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा को ऐच्छिक विषय के रूप में सत्र 2022-23 से लगभग 250 विद्यालयों में संचालित किया जा रहा है। विद्यालयों में शारीरिक शिक्षकों के पदों का संतुलन बनाए रखने के लिए माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने लगभग 6000 पद स्वीकृत किए हैं जिन पर भर्ती प्रक्रियाधीन है। राज्य में खेल मैदानों के नवीनीकरण का विकास कार्य मेजर ध्यानचंद योजना के अन्तर्गत हो रहा है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय विजेताओं को राजकीय सेवा में नियुक्ति प्रदान की जा रही है। अब तक आऊट ऑफ टर्न पॉलिसी के अन्तर्गत सात विभागों में 229 नियुक्ति प्रदान की गई है। हमारी सरकार द्वारा बच्चों व युवाओं को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण देने के लिए इस बजट सत्र में कोच के 100 पद स्वीकृत किए गए व 105 करोड़ रुपये से हर संभाग पर सलीम दुर्रानी आवासीय स्पोर्ट्स स्कूल हेतु भी प्रावधान किया गया है।

शिविरा : 5 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 राजस्थान के शिक्षा जगत में क्या-क्या सुधार ला सकती है एवं इसके लिए क्या रूपरेखा तैयार की गई है?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : भारतीय संविधान की यही विशेषता है कि शिक्षा राज्य और केन्द्र दोनों के लिए ही प्राथमिक विषय रहा है। भारत सरकार के निर्देशानुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए राजस्थान पूरी तरह तैयार है। इसके लिए विभिन्न स्तरों पर समितियों का गठन एवं नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की जा चुकी है। राज्य के लिए उपयोगी पाठ्यचर्या व तकनीकी साक्षर ज्ञान हेतु विषयवस्तु का चयन कर शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार से तारतम्य स्थापित किया गया है। शिक्षा नीति 2020 के तहत 5+3+3+4 डिजाइन वाले शैक्षणिक संरचना का प्रस्ताव किया गया है जिसमें फाउण्डेशनल स्टेज, प्रीपेट्री स्टेज, उच्च प्राथमिक व माध्यमिक चरण होंगे। इसके अन्तर्गत प्रारम्भिक 2 वर्ष आँगनबाड़ी, 1 वर्ष बाल वाटिका के पश्चात प्री प्राइमरी शिक्षा से मुख्य स्कूली शिक्षा की शुरूआत होगी। इस शिक्षा नीति के प्रमुख बिन्दु जैसे विद्यालय में ड्रॉप आउट को कम करना, नामांकन शत-प्रतिशत करना, शिक्षण में तकनीकी कुशलता, छात्र-छात्राओं का हॉलिस्टिक विकास एवं विद्यालयों में साझेदारी, छात्र-अध्यापक गुणवत्ता, खेल द्वारा सर्वांगीण विकास व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षक शिक्षा प्रमुख विषय है जिन्हें हमारी सरकार के विभिन्न कार्यक्रम और योजनाओं द्वारा केन्द्रीय मापदण्डानुसार तैयार कर भारत सरकार के साथ समन्वय कर आद्योपांत किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हेतु अलग-अलग कोर ग्रुप के हिसाब से 6 समितियों का गठन किया गया है जिसमें एक नोडल अधीकरण के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों जैसे-राष्ट्रीय साक्षरता एवं ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत) मिशन हॉलिस्टिक कार्ड, FLN[8] मॉड्यूल, शिक्षक मार्गदर्शिका आदि का क्रियान्वयन कुशलतापूर्वक हो सके इस हेतु विभागीय स्तर पर तैयारी हो रही है। मैं पूर्णतः आशावान हूँ कि राज्य सरकार के अनथक प्रयासों से समावेशी शिक्षा अधिगम सामग्री एवं आनंददायी पाठ्यक्रम बाल्यावस्था से छात्रों की शैक्षिक एवं चारित्रिक उन्नति में सहायक साबित होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने हेतु केन्द्रीय सरकार को राजस्थान राज्य हेतु अतिरिक्त बजट का प्रावधान करना चाहिए।

शिविरा : 6 राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम एवं महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल शिक्षा विभाग के प्राथमिक फ्लैगशिप योजनाओं में हैं। इन योजनाओं से शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार विकास हो सकता है?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : वैश्वीकरण के इस युग में प्रदेश के विद्यार्थी अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर शैक्षिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करे। इस दिशा में राजस्थान में सतत प्रयत्न हो रहे हैं। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान वर्तमान समय की मांग है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अनुसार गाँव और ढाणी का प्रत्येक बालक वैश्विक स्तर पर देश का सफल नेतृत्व करने की क्षमता रखता है। इस हेतु राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के अवसर पर सत्र 2019-2020 से राजकीय विद्यालयों को महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में रूपांतरण का निर्णय लिया गया है।

1621 MGGS[9] में अब तक 3,03,932 विद्यार्थियों का

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

नामांकन हो चुका है। इन विद्यालयों की लोकप्रियता एवं इनमें प्रवेश लेने के लिए अभिभावकों एवं विद्यार्थियों की मांग को देखते हुए शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में एक-एक हजार महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय और शुरू किए जाने की घोषणा इस बजट सत्र में की गई है। इन विद्यालयों को जिलों एवं ब्लॉक के साथ-साथ गाँवों एवं कस्बों में उत्कृष्टता के केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। गौर तलब है कि हमारी सरकार ने पूर्व में किसी भामाशाह या शहीद के नाम से संचालित विद्यालय के महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में रूपान्तरण के पश्चात भी उनके नाम में किसी प्रकार का संशोधन नहीं किया है। इन विद्यालयों की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए एक्सपर्ट कमेटी का गठन कर निर्धारित कार्य योजना बनाई जाएगी। इन स्कूलों के स्टाफ को स्पोकन इंग्लिश, प्रशासनिक क्षमता व नेतृत्व गुणों की मुखरता के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा। 20 करोड़ की लागत से 358 शैक्षणिक ब्लॉक पर English Language labs की स्थापना का इसी बजट सत्र में प्रावधान है।

देखा यह गया है कि निजी क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की सुविधा मुख्यतः उच्च आय वर्ग एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों को सुलभ है। ग्रामीण पृष्ठभूमि एवं निम्न आय वर्ग के छात्रों के लिए इन विद्यालयों में अध्ययन करना सपना है। अब हमारे विद्यार्थी महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर अन्य निजी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के छात्रों के समकक्ष अध्ययन कर होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए विभिन्न अवसरों का लाभ उठाएंगे। इन स्कूलों में पढ़ रहे बच्चे अखिल भारतीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगिताओं में बेहतर उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकेंगे।

MGGS हेतु 10,000 संविदा आधारित शिक्षकों का नवीन कैडर बनाया गया है। इन संविदा शिक्षकों की भर्ती प्रक्रियाधीन है एवं विभाग में कार्यरत अध्यापकों एवं संस्थाप्रधानों को साक्षात्कार के माध्यम से लगभग 10,563 पदों पर भर्ती दी गई है।

लोक कथनानुसार आसमान की ऊँचाईयों पर उड़ने से पहले हमें अपने पंख और जमीन को मजबूत रखना चाहिए। इसी विचार के साथ RKSMBK कार्यक्रम विद्यार्थियों को रटने की प्रकृति से मुक्त करते हुए सीखने की आदत का विकास करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों के लर्निंग लॉस को समाप्त कर निर्धारित दक्षताओं की प्राप्ति में मदद मिलेगी। इस नवाचार की मूल धारणा कक्षा में सिलेबस पूर्ण कराने की अपेक्षा प्रत्येक बालक को उसकी क्षमता के अनुसार 'कम्पीटेन्सी बेस्ड टीचिंग' से अपने वर्तमान कक्षा स्तर तक लाना है। यह कार्यक्रम कोविड में हुए लर्निंग लॉस का उपचारात्मक अध्ययन का माध्यम बन गया है। इसमें गुणवत्ता सुधार के प्रयास आनन्ददायी शिक्षण के माध्यम से किए जा रहे है एवं अध्यापकों के कार्यभार को (AI) एप के सहारे कम किया गया है। RKSMBK में AI आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस द्वारा 50 लाख से अधिक विद्यार्थियों के 1.38 करोड़ उत्तर पत्रक की जाँच की गई। यह प्रयास देश में ही नहीं विश्व में शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय नवाचार है। इसके लिए वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस लंदन द्वारा शिक्षा विभाग को सर्टिफिकेट दिया जाना प्रसन्नता का विषय है। विद्यार्थियों की दक्षता के मूल्यांकन हेतु रिपोर्टकार्ड भी तैयार किए गये हैं जिन्हें डिजिटल माध्यम से प्रेषित कर अभिभावकों से चर्चा की जाती है। RKSMBK कार्यक्रम विद्यार्थियों में मौलिक चिन्तन बढ़ाने में सहायक होगा। मेरा विश्वास है कि महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल एवं राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम दोनों कार्यक्रम शैक्षणिक नावाचार से शिक्षा व्यवस्था के भविष्य की आधारशिला बनेंगे। देश के पूर्व राष्ट्रपति एवं भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने सही कहा था कि विद्यार्थी का मस्तिष्क धरती पर सबसे शक्तिशाली संसाधन है। इसे सही दिशा दी जाए तो वह नए समाज का निर्माण कर सकता है।

शिविरा : 7 भौगोलिक दृष्टि से देश के सबसे बड़े राज्य राजस्थान में शिक्षा की वर्तमान स्थिति से आप कहाँ तक संतुष्ट है और राजस्थान में शिक्षा की स्थिति के बारे में आपके क्या विचार हैं?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : देशभर में शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान राज्य में शैक्षिक नवाचारों की यशस्वी शृंखला बनी है। यह इसी समय में देखा गया है कि सरकारी विद्यालयो में नामांकन वृद्धि ने नवीन कीर्तिमान स्थापित किया है। महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में दाखिले हेतु विशेष उत्कण्ठा वेटिंग लिस्ट के रूप में देखी गई है। इसी क्रम में भौतिक संसाधनों एवं मानवीय व्यवस्थाओं को सुचारू करते हुए 8000 विद्यालय क्रमोन्नत किए हैं। 900 से अधिक विद्यालय खोले गए है।

लगभग 76 हजार से अधिक भर्तियाँ सरकार विभिन्न शैक्षिक, गैर शैक्षिक एवं प्रशासनिक पदों पर कर चुकी है माननीय मुख्यमंत्री जी के दिशा निर्देशन में लगभग 10,400 पदों पर विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा हेतु बेसिक एवं वरिष्ठ कम्प्यूटर अनुदेशक भर्ती प्रक्रियाधीन है। शिक्षा विभाग के प्राध्यापक व स्कूल शिक्षा के विभिन्न विषयों की रिक्तियों की भरपाई हेतु लगभग 6000 पदों पर अक्टूबर माह में परीक्षा करवाई गई एवं पदोन्नति से लगभग 29,000 संवर्ग पद भरे गए हैं। स्कूल शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों जैसे शैक्षिक एवं मंत्रालयिक संवर्ग के विभिन्न पदों की डी.पी.सी. (विभागीय पदोन्नति समिति) हमने वर्ष 2022-23 में करवाई है। इसी प्रकार अन्य विभिन्न पदों की डी.पी.सी. प्रक्रियाधीन है। सरकार की संवेदनशीलता को समाज के उत्थान, सुधार एव शैक्षिक नवाचार के लिए भरपूर समर्थन मिला है।

राज्य के शिक्षा क्षेत्र में हमने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं जो

Rajasthan Education Department

हमारी शिक्षा विभाग की टीम की कार्य क्षमता एवं सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। आजादी के अमृत महोत्सव में 12 अगस्त 2022 को सामूहिक देशभक्ति गीत गायन 2 अक्टूबर, 2022 को महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती पर सामूहिक प्रार्थना सभा का आयोजन हुआ। हमारी सरकार में शासन-प्रशासन तालमेल द्वारा सुशासन के मंत्र है। इसी के अंतर्गत तकनीकी विकास राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा के विषय है। शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से अध्यापक-छात्र उपस्थिति, रिजल्ट, APAR[10] सहित कार्यग्रहण व कार्यमुक्ति आदेश इत्यादि उपलब्ध है जिससे सुदूर विद्यालय भी विभाग से वन क्लिक के साथ जुड़े हुए है।

इंस्पायर अवॉर्ड में राजस्थान लगातार तीसरे वर्ष प्रथम स्थान पर रहा है। यह उपलब्धियाँ सभी राजस्थान वासियों के लिए संतोष का विषय है। यह इस बात की ओर भी इंगित करता है कि शिक्षा के क्षेत्र में हमारी सरकार के नवाचार प्रदेश वासियों में विश्वास एवं संतोष का कारक है। हमारे विभाग की प्राथमिकता में महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय एवं राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम कार्यक्रमों को रखा गया है। इन दोनों ही क्रांतिकारी कदमों की सराहना आज राष्ट्र पटल पर नजर आती है। हमारे विभाग का आधार अध्यापक और विद्यार्थी ही है। इन दोनों के हित में वाजिब कारणों को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों की पीड़ा दूर करने हेतु हमने पूर्ण पारदर्शिता के साथ स्थानांतरण भी किए है एवं भविष्य हेतु स्थानांतरण नीति भी बनाई जा रही है। पिछले सत्र की बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम संतोषजनक रहा है। आने वाले समय में हमारी सरकार राज्य में शिक्षा की स्थिति को नवीनतम ऊँचाइयों पर पहुँचा सुनहरा इतिहास गढ़ने के लिए प्रतिबद्ध एवं संकल्पित है।

शिविरा : 8 राजस्थान में शिक्षा को नवीनतम ऊँचाइयों पर पहुँचाने के लिए सरकार, भामाशाह और जनता की त्रिवेणी किस प्रकार सफलता की सीढ़ी पर एक-दूसरे से कदम मिलाते हुए आगे बढ़ रही हैं?

माननीय शिक्षामंत्री महोदय : किसी भी राज्य में शिक्षा विभाग की यह प्राथमिकता होनी चाहिए कि प्रदेश के अंतिम विद्यार्थी तक पर्याप्त शिक्षा सुविधाएँ एवं विद्यालय उपलब्ध करा सके। जागरूकता प्रयास व प्रोत्साहन पूर्ण योजनाओं से छात्रों का विद्यालय में नामांकन करवा कर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करवाना विभाग का मूल संकल्प है। विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं के शारीरिक स्वास्थ्य के सामयिक परीक्षण एवं न्यूनता की पूर्णता हेतु स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 7 जिलों में क्रियान्वित हो रहा है। इसी कार्यक्रम हेतु चिकित्सा विभाग और राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उदयपुर की साझेदारी में 11 बिंदुओं को पाठ्यक्रम का रूप दिया गया है। छात्रों व शिक्षकों को इस अभियान का मैसेंजर व एंबेसडर बना 'हेल्थ एंड वेलनेस', स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, मानसिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा पर फोकस किया गया है। हाल ही में 'बाल गोपाल योजना' के माध्यम से सप्ताह में 2 दिन निःशुल्क दुग्ध वितरण योजना प्रारंभ की गई है।

इसी प्रकार राजकीय विद्यालयों में कक्षा 8 तक अध्ययनरत सभी बालक-बालिकाओं को निःशुल्क यूनिफॉर्म योजना के अंतर्गत पोशाक एवं सिलाई पेटे 200 रुपये DBT[11] द्वारा वितरित किए जाने है। इस योजना का शुभारंभ 29 नवम्बर, 2022 को माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा किया गया। समग्र शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत 4849758 विद्यार्थी (सभी लड़कियाँ अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति, बीपीएल वर्ग के लड़के) को निशुल्क यूनिफॉर्म हेतु 290.40 करोड़ अनुमोदित किए गए है। इस योजना से सामाजिक समरसता, एकरूपता तथा अनुशासनात्मक परिवेश का विकास होगा। हम हर विद्यार्थी को उसी के निवास स्थान तक बुनियादी सुविधाओं युक्त विद्यालय प्रांगण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु प्रतिबद्ध है। राज्य के 4000 से अधिक माध्यमिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किया गया है। इसी क्रम में 350 से अधिक प्राथमिक विद्यालय खोले गए है, 1503 प्राथमिक विद्यालय से उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1194 उच्च प्राथमिक को सीधे उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत किया गया है।

RTE[12] के क्षेत्र को व्यापक बनाते हुए माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने कक्षा 9 से 12 की छात्राओं के लिए निजी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षण व्यवस्था के साथ छात्रों के लिए भी यह व्यवस्था करते हुए शिक्षा के प्रति सजगता को दर्शाया है। विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं के विकास यथा- कक्षा-कक्ष, लैब, शौचालय निर्माण एवं अन्य मरम्मत कार्य हेतु 200 करोड़ रुपये का प्रावधान है। प्रत्येक ब्लॉक मुख्यालय पर एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में चारों संकाय-कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं कृषि विषय उपलब्ध करवाने का प्रावधान किया गया है। 4000 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 256 करोड़ की लागत से ICT[13] परियोजना अन्तर्गत कम्प्यूटर लैब की स्थापना प्रस्तावित है। संभाग स्तर पर एक-एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में डिफेंस सर्विसेज प्रिपेट्री इन्स्टीट्यूट की स्थापना हेतु 35 करोड़ रुपये का प्रावधान है तो वहीं ग्रामीण विद्यार्थियों को लाभान्वित करने हेतु व्यावसायिक शिक्षा और आई स्टार्ट इनोवेशन स्कूल हब की स्थापना की जाएगी।

शिक्षा सिर्फ सरकार की प्राथमिकता नहीं रही अपितु प्रदेश के हर व्यक्ति का उत्साह, भरोसा इंगित करता है कि इस महायज्ञ में जनता जनार्दन स्वयं यजमान बन चुकी है। जिनके माध्यम से खुले आसमान में पेड़ों की छाया से निकलकर हमारे विद्यार्थियों के लिए नवीन भवन और जीर्णशीर्ण भवनों का नवीनीकरण जैसे आवश्यक निर्माण कार्य किए जा रहे हैं अनेक ऐसे उदाहरण राज्य में सामने आए हैं, जब भामाशाहों ने विद्यालयों को धार्मिक स्थलों से अधिक धन देकर विद्या मन्दिर के रूप में आगे बढ़ाया है।

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से 317 करोड़ की कुल राशि प्राप्त हुई जिसमें से 239 करोड़ की प्राप्ति हमारी सरकार की प्रेरणा का शुभ फल है। इस प्राप्त राशि से शिक्षा हेतु 656 परियोजनाएँ है एवं जिनसे लगभग 64000 विद्यालय सीधे लाभान्वित हुए है इनमें 29 अंगीकृत विद्यालय है। इस महत्ती योगदान में भागीदार भामाशाहों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए राज्य सरकार ने 26वाँ भामाशाह सम्मान समारोह 12 अक्टूबर 2022 को आयोजित किया था। SDMC[14] जैसी विद्यालय अधिकृत संस्थाएँ विद्यालय के चहुँमुखी विकास में सहायक बनी है। यह समाज की बदलती सोच का परिचायक है कि विद्या मंदिरों को विकास का आधार मानने लगे है।

शिविरा : 9 राजस्थानी भाषा नै राजभाषा री दर्जो (मिलनै) मिलन माथै आपरा कांई बिचार है इण परिपेरछ मांय सिरख्या रै छेत्र मांय आपां नै कांई फायदा हुए सकै ?

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय : नूंई सिक्षा नीति मांय मायड़ भाषा मांय सिक्षा देवण रा विधांण ई है। म्है म्हारा बिचार विधानसभा मांय ईस्पस्ट राख्या है कै मायड़ भाषा राजस्थानी नै राजभाषा रै दर्जो मिलनो चाइजै। इण खातर कमेटी काम चालू कर चुकी है। म्है ओ बी मानू कै राजस्थानी भाषा नै राजभाषा रै सागै ई भारतीय संविधान री आंठवीं अनुसूची मांय सामिल करणी चाईजै। सीताकांत महापात्र कमेटी राजस्थानी भाषा नै आंठवी अनुसूची मांय सामिल करणै जोग मान्यो। राजभाषा रै रूप मांय राजस्थानी भाषा घणी गिरबजोग है। इणरौ मोकळौ सहित्य मिलै। मान्यता मिलणै सूं सिक्षा रै छेत्र मांय मायड़ भाषा रौ दर्जो बढ़ेला। नूंई सिक्षा नीति रै मुजब सुरूआती सिक्षा-दीक्षा मांय मायड़ भाषा नै परोटनै सूं दूजी भाषावां सागै अधिकारिक रूप सूं राजस्थानी भाषा री दक्षता अर इणरै सायरै ग्यान री बढ़ोतरी हुवैला। राजस्थानी भाषा नै मान्यता मिलणो, आपणै राज्य खातर अेतिहासिक अर सांस्कृतिक गौरव री हूंस बढ़ासी। भणेसरी राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै मैतव नै ओळ खेला अर इणरै सागै देस अर विस्व स्तर माथै मायड़भाषा राजस्थानी नै ले जावैला। राजस्थानी भाषा नै राजभाषा रौ दर्जो मिलण सूं माध्यमिक शिक्षा स्तर रा पढेसरी तीसरी भाषा रै विकल्प रूप मांय इण मायड़ भाषा नै ले सकैला। राजस्थानी भाषा रौ लूंठौ व्याकरण, साहित्य अर साहित्य रै इतिहास सूं भणाई खातर नूवां मारग खुलैला।

शिविरा : 10 माननीय शैक्षिक क्षेत्र में विकास की इस यात्रा को और अधिक सुदृढ़ एवं गतिशील बनाने हेतु आपका संदेश अपेक्षित है.....

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय : शिक्षा विभाग मेरा परिवार है। इस विभाग के माध्यम से शैक्षिक जगत की सेवा करने का अवसर मुझे समय-समय पर मिलता रहा है। विद्यार्थियों से मेरी अपेक्षा है कि समय का सदुपयोग करें। अंक परीक्षा की कसौटी है, जीवन की नहीं। जीवन में सफल वही होता है जो निरंतर मेहनत करें। आधुनिकता की दौड़ में अपनी संस्कृति एवं संस्कारों के साथ प्रदेश व देश का नाम रोशन करें। अभिभावकगण सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ प्राप्त कर प्रगतिशील दृष्टिकोण के साथ बालकों के विकास में उनके सहायक बने।

संस्थाप्रधान सहित विद्यालय के समस्त स्टाफ से यह आग्रह है कि प्रतिदिन इस भावना के साथ विद्यालय में प्रवेश करें कि वे भारत के भविष्य को निष्ठा के साथ तैयार कर रहे हैं। सरकारी के साथ निजी विद्यालय भी शिक्षा के विकास में सहभागी है। अतः वे अपने कार्य को निर्धारित नियमों एवं शर्तों के अनुरूप विधिवत करें। अधिकारीगण से मैं आशा करता हूँ कि विभाग की आकांक्षा पूर्ति हेतु पूर्ण संवेदनशीलता के साथ कर्मठता एवं कुशलता के साथ काम करें। सभी के सहयोग से शिक्षा विभाग नित नूतन ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा। हम सभी भारतीय संस्कृति के मूलमंत्र-

अष्टादश पुराणेषु, व्यासस्य वचनम द्वय।
परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीड़नम।।

को जीवन का आधार मान कर कार्य करें।

शिविरा : माननीय शिक्षा विभाग के मुखपत्र शिविरा के माध्यम से आपने शिक्षा से जुड़े समस्त ज्ञान पिपासुओं का मार्गदर्शन किया है। सरकार द्वारा शिक्षा की दशा एवं दिशा बदलने में उठाए गए सकारात्मक प्रयासों की जानकारी प्राप्त कर निश्चित ही शिविरा के पाठक लाभान्वित होंगे। शिक्षा विभाग आपके नेतृत्व में उत्तरोत्तर सफलता के शीर्ष की ओर उन्मुख है। संपादक मण्डल हृदय की अतल गहराइयों से आपका आभारी है। निसंदेह आपके नेतृत्व में हम अपने विद्यार्थियों को मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान कर पुनः भारत को एक बार फिर विश्व गुरु बनाने की दिशा में अग्रसर होंगे।

संपादक शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9950956577

1. RBSE - माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर
2. NCERT - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
3. RKSMBK - राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम
4. RTSE - राजस्थान प्रतिभा खोज परीक्षा
5. KGBV - कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय
6. NSS - राष्ट्रीय सेवा योजना
7. NCC - नेशनल कैडेट कोर
8. FLN - बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान
9. MGGS - महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
10. APAR - वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन
11. DBT - प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण
12. RTE - शिक्षा का अधिकार
13. ICT - सूचना और संचार प्रौद्योगिकी
14. SDMC - विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

❒ डॉ. रणवीर सिंह

आपसे वर्तमान समय की सबसे परिवर्तनकारी तकनीकों में से एक के बारे में बात करना चाहता हूँ। कृत्रिम बुद्धिमता या एआई (Artificial Intellegence) और शिक्षण और सीखने के क्षेत्र में इसके निहितार्थ।

AI का पूरा नाम Artificial Intellegence (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) होता है। यह कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो बुद्धिमान मशीनों के निर्माण से संबंधित है जो आमतौर पर मानव बुद्धि की आवश्यकता रखते हैं, जैसे दृष्टिगति, भाषा पहचान, निर्णय लेना और भाषा अनुवाद। AI तकनीकों का आधार उन एल्गोरिथ्मों पर है जो डेटा से सीख सकते हैं, पैटर्न की पहचान कर सकते हैं और उस सीख से निर्णय या फैसले ले सकते हैं। AI एक त्वरित विकसित हो रहा क्षेत्र है और यह स्वास्थ्य सेवा, वित्त, शिक्षा, परिवहन और अन्य क्षेत्रों को संवर्धित करने की संभावना रखता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक शक्तिशाली माध्यम है जिसने कई तरह से शिक्षा में क्रांति लाना शुरू कर दिया है। एआई के सबसे महत्त्वपूर्ण लाभों में से एक इसकी व्यक्तिगत छात्रों के लिए सीखने को वैयक्तिकृत करने की क्षमता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिथम की मदद से एआई विद्यार्थी डेटा का विश्लेषण कर सकता है, उनकी प्रगति को ट्रैक कर सकता है और आगे के अध्ययन के लिए व्यक्तिगत प्रतिक्रिया और सिफारिशें प्रदान कर सकता है।

AI सीखने के अंतराल की पहचान करने और कुछ क्षेत्रों में संघर्ष कर रहे के लिए लक्षित सहायता प्रदान करने में भी मदद कर सकता है। यह बड़ी कक्षाओं में विशेष रूप से मूल्यवान हो सकता है, जहाँ शिक्षकों के पास प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत ध्यान देने के लिए समय या संसाधन नहीं हो सकते हैं।

शिक्षा में AI का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लाभ शिक्षण और सीखने की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाने की इसकी क्षमता है। ग्रेडिंग और डेटा विश्लेषण जैसे प्रशासनिक कार्यों को स्वचालित करके AI शिक्षकों के समय को पाठ योजना

और विद्यार्थी जुड़ाव जैसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मुक्त कर सकता है।

इसके अलावा AI छात्रों के लिए सीखने के अनुभव अधिक इमर्सिव और आकर्षक बनाने में मदद कर सकता है। आभासी और संवर्धित वास्तविकता जैसे AI- संचालित उपकरणों की मदद से विद्यार्थी अधिक संवादात्मक और यादगार तरीके से जटिल अवधारणाओं का पता लगा सकते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के प्रयोग से स्कूलों में शिक्षण और सीखने सहित कई तरीकों से शिक्षा में क्रांति लाने की क्षमता है। स्कूली शिक्षण अधिगम में AI का उपयोग कैसे किया जा सकता है, इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार से हैं :

1. वैयक्तिकृत शिक्षण : AI- संचालित शिक्षण मंच विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप वैयक्तिकृत शिक्षण कर सकते हैं। AI एल्गोरिदम से विद्यार्थी डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं और सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए व्यक्तिगत सामग्री, पेसिंग और फीडबैक प्रदान कर सकते हैं।

2. इंटेलिजेंट ट्यूटरिंग : AI- पावर्ड इंटेलिजेंट ट्यूटरिंग सिस्टम छात्रों को उनकी सीखने की वैयक्तिक जरूरतों के आधार पर व्यक्तिगत संबलन और मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। यह सिस्टम विद्यार्थी के प्रदर्शन को समझने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग कर उन्हें बेहतर बनाने में मदद करने के लिए फीडबैक प्रदान कर सकते हैं।

3. ग्रेडिंग और मूल्यांकन: AI का उपयोग विद्यार्थियों के काम को देने और उनकी प्रगति का आकलन करने के लिए किया जा सकता है। यह शिक्षकों के लिए समय बचा सकता है और अधिक वस्तुनिष्ठ और सुसंगत ग्रेडिंग प्रदान कर सकता है।

4. चैटबॉट्स AI- संचालित चैटबॉट्स का उपयोग विद्यार्थियों के सवालों के जवाब देने और कक्षा के बाहर सहायता प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। यह शिक्षकों के समय को अन्य कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए खाली कर सकता है।

5. अनुकूली आकलन : AI का उपयोग अनुकूली आकलन के लिए किया जा सकता है जो विद्यार्थी की समझ के स्तर को समायोजित करता है। ये आकलन उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद कर सकते हैं जहाँ छात्रों को अधिक सहायता की आवश्यकता होती है और उन्हें लक्षित प्रतिक्रिया (targeted feedback) प्रदान करते हैं।

6. भाषा सीखना : AI संचालित भाषा सीखने के मंच से विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत भाषा सीखने के अनुभव प्रदान कर सकते हैं। ये प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों के लिए प्राकृतिक रूप से भाषा का विश्लेषण करने, व्याकरण, शब्दावली और उच्चारण पर प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

AI में व्यक्तिगत सीखने के अनुभव, व्यक्तिगत संबलन और अधिक वस्तुनिष्ठ आकलन प्रदान करके स्कूलों में शिक्षण और सीखने को बदलने की क्षमता है। हालांकि, यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि AI एक उपकरण है, और इसका उपयोग प्रभावी शिक्षण अभ्यासों के संयोजन में किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी सीखने पर AI के प्रभाव का अधिकतम उपयोग

Rajasthan Education Department

कर सकें।

किसी भी तकनीक की तरह, AI भी चुनौतियों और चिंताओं को अपने साथ लाया है। AI एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह और भेदभाव की संभावना सबसे बड़े मुद्दों में से एक है। यह सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है कि इन एल्गोरिदम को इस तरह से डिज़ाइन और परीक्षण किया गया हो जो सभी छात्रों के लिए उचित और न्यायसंगत हो।

एक और चिंता कि AI पूरी तरह से शिक्षकों का स्थान लेने की क्षमता रखता है। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं हो सकता। AI निश्चित रूप से शिक्षण और सीखने को की क्षमता को बढ़ा सकता है और support कर सकता है, लेकिन यह प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षकों का स्थान नहीं ले सकता तथा शिक्षण में आवश्यक मूल्यवान मानवीय संबंधों को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है।

शिक्षण और सीखने के क्षेत्र में AI के निहितार्थ विशाल और जटिल हैं। हालांकि निश्चित रूप से चुनौतियों और चिंताओं को दूर भी करना है, लेकिन इस तकनीक के संभावित लाभ निर्विवाद हैं। अभी हाल ही में राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम (RKSMBK) कार्यक्रम में लगभग पैंतालीस लाख विद्यार्थियों की 1.35 करोड़ उत्तर पुस्तिकाओं का आकलन AI की सहायता से कर विश्व रिकार्ड बनाया है।

जैसा कि हम शिक्षा में तकनीकी के अनुप्रयोग के इस नए युग में प्रवेश किसी भी संभावित जोखिमों से बचाव के साथ-साथ AI की क्षमता को पूरी तरह से समझने के लिए एक विचारशील और समालोचनात्मक मानसिकता के साथ AI का शिक्षा में अनुप्रयोग करना महत्त्वपूर्ण है। समय की मांग के अनुसार इस नवीन विधा को शिक्षकों और शिक्षा प्रशासन से जुड़े अधिकारियों को स्वीकार कर विद्यार्थियों के हित में स्वयं की क्षमता को संवर्धित कर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ाना होगा।

विशेषाधिकारी शिक्षा
शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग,
शासन सचिवालय जयपुर
मो.नं.: 9414180951

पर्यावरण संरक्षण

❐ **पार्वती**

सदियों से मानव जीवन संघर्ष करते हुए अपने ज्ञान और अनुभव से अन्य जीवों से अलग पहचान रखता है। मानव को जीवित रहने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की प्रथम आवश्यकता होती है लेकिन साथ-साथ प्राणवायु अत्यंत आवश्यक है। ऑक्सीजन से मानव जीवित रहता है और ऑक्सीजन पेड़-पौधों से हमें प्राप्त होती है इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पाबूबेरा, जिला बाड़मेर, राजस्थान के शिक्षकों के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने कोरोना की महामारी को देखते हुए अपने विद्यालय में विभिन्न प्रकार के औषधियुक्त एवं अन्य पेड़ पौधे लगाने का संकल्प लिया और परिश्रम करते हुए विद्यालय परिसर में तीन वाटिकाओं जिसमें सबसे बड़ी वाटिका शिक्षक से भारत के राष्ट्रपति बने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति में राधाकृष्णन वाटिका, दूसरी कर्ण वाटिका व तीसरी मोनू वाटिका को विकसित किया। तीनों वाटिकाओं में विभिन्न प्रकार के पौधे जिनमें कनेर, पीपल, नीम, अशोक, एलिस्टोनिया, शीशम, तुलसी, बरगद, गिलोय, चम्पा, मधुमालती बेल, कोर्नोकार्पस, जेट्रोफा, मोरपंख, कचनार, मोगरा, लाल गुलाब, सफेद गुलाब, क्रिसमस ट्री, करंज के पौधे व हरी-भरी घास लगाकर विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को पर्यावरण संरक्षण की नवीन सीख देकर अनूठा उदाहरण पेश किया।

इतना ही नहीं पौधों की सार संभाल की जिम्मेदारी लेते हुए विद्यालय परिसर में ट्यूबवेल एवं पाइप के माध्यम से फव्वारे के सेट व ड्रिप लगाकर पौधों व घास को पानी और खाद देकर हरा-भरा रखने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। विद्यालय के विद्यार्थी एवं अभिभावक जो विद्यालय में प्रवेश करते हैं तो विद्यालय के बगीचे को देखकर अभिभूत होने के साथ प्रसन्नता का अनुभव करते हैं कि सरकारी विद्यालय जिसमें इस प्रकार की अनोखी व्यवस्था जिससे पर्यावरण शुद्ध रहने के साथ-साथ उसका संरक्षण भी बराबर हो रहा है। सरकारी अधिकारी एवं विभाग के अधिकारी इस प्रकार की नवीनता को देखकर दूसरों को भी प्रेरित करने में पीछे नहीं रहते। एक शिक्षक ने विद्यालय में स्वयं परिश्रम करके पौधों की देखभाल एवं सुरक्षा करने में विद्यालय समय के अतिरिक्त समय में प्रयास कर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने में स्वयं के खर्चे से तथा अन्य भामाशाह को प्रेरित कर जो संदेश दे रहे हैं इससे आस-पास के विद्यालय भी पर्यावरण संरक्षण के लिए समयानुसार मेहनत करने लगे हैं।

प्राचीन समय में पेड़ पौधों की रक्षा करने के लिए गाँव के बुजुर्ग एवं पंच पटेल पूर्ण मुस्तैद रहते थे। जमीन पर लगे पेड़ पौधों को काटने नहीं देते थे। यदि कोई व्यक्ति पेड़ पौधा काट लेता तो उस पर जुर्माना लगाया जाता था ऐसी व्यवस्था के तहत् आज जहाँ कहीं भी हरियाली दिखती है तो मन में बड़ी प्रसन्नता होती है। बाड़मेर जिले के दुर्गम क्षेत्र में इस प्रकार की स्थिति का होना अपने आप में बड़ा उदाहरण है। इरादे मजबूत होने से ही सफलता मिलती है।

जोधपुर के खेजड़ली गाँव में मरुस्थलीय पेड़ खेजड़ी की रक्षार्थ 363 स्त्री-पुरुषों ने अपना बलिदान देकर प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपहार पेड़ पौधों की रक्षा की थी। ऐसे उदाहरण को चरितार्थ करने वाले शिक्षक विरले ही होते हैं। वनस्पति को हरा भरा रखना अपने जीवन को खुशहाल बनाने का सुनहरा अवसर तब सार्थक सिद्ध होगा जब प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएँ जिससे हमारा जीवन शुद्ध ऑक्सीजन प्राप्त कर सकें एवं हम पूर्ण रूप से स्वस्थ रह सके। जनप्रतिनिधियों, सरकारी अधिकारियों एवं गणमान्य लोगों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के समय-समय पर चलाए जा रहे अभियान की सफलता तभी सार्थक होगी जब हम लोग अधिक से अधिक पौधे लगाकर मरुस्थल भूमि को हरा भरा बनाने में भागीदारी निभाएँगे ऐसा संकल्प होना महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

कक्षा-11
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पाबूबेरा,
धोरीमन्ना, बाड़मेर (राज.)
मो.न.: 9610111900

Rajshri Education Department

संघर्ष की प्रतिमूर्ति : भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर

❒ कमलेश कटारिया

भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर को शिक्षा का पर्याय कहा जाए तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय संविधान के निर्माता व स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का जन्म 14 अप्रेल, 1891 को ब्रिटिश भारत के मध्य प्रांत (अब मध्य प्रदेश) में स्थित मऊ नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल व माता का नाम भीमाबाई था। बी.आर. अंबेडकर अपने माता-पिता की चौहदवीं व अंतिम संतान थे। उनके पिता रामजी मालोजी सकपाल भारतीय सेना की मऊ छावनी में सेवारत थे तथा यहाँ काम करते हुए सूबेदार के पद तक भी पहुँचे थे।

ये हिंदू महार जाति से संबंध रखते थे जो उस समय अछूत कही जाती थी और इस कारण इन्हें सामाजिक और आर्थिक भेदभाव सहन करना पड़ा था। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का बचपन बहुत संघर्षों में बीता। अपनी जाति के कारण बालक भीम को सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा। विद्यालय पढ़ाई में सक्षम होने के कारण भी बालक भीम को छुआछूत के कारण कक्षा-कक्ष में प्रवेश नहीं दिया गया। वह कक्षा कक्ष के बाहर बैठकर भी पढ़ाई में मन लगाता था। विद्यालय में शिक्षक व अन्य छात्र बालक भीम को हेय दृष्टि से देखते थे तथा विद्यालय में सार्वजनिक बर्तन भी छूने नहीं देते थे व बालक भीम को पानी पीने के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। अंबेडकर के बचपन का नाम भिवा था। अंबेडकर का मूल नाम सकपाल की बजाय अंबेडकर लिखवाया था जो कि उनके गांव से संबंधित था, क्योंकि कोंकण प्रांत के लोग अपना उपनाम गाँव के नाम से रखते थे अतः अंबेडकर के गाँव से आबण्डवेकर उपनाम स्कूल में दर्ज करवाया उसके बाद देवरु के ब्राह्मण शिक्षक कृष्णा केशव आंबेडकर जो उनसे विशेष लगाव व स्नेह रखते थे ने उनके नाम से आबण्डवेकर हटाकर अम्बेडकर नाम जोड़ दिया था तब से आज तक वे अम्बेडकर नाम से जाने जाते हैं। जब भीमराव अंबेडकर 15 साल के थे तब उनकी शादी 9 साल की लड़की रमाबाई से करा दी गई, उस समय वे पाँचवी कक्षा में पढ़ रहे थे, उस समय बाल विवाह का प्रचलन था। बालक भीम की प्राथमिक शिक्षा की शुरुआत सातारा नगर राजवाडा चौक पर स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल में 7 नवंबर, 1900 को अंग्रेजी की पहली कक्षा में प्रवेश लिया इस दिन से उनके शैक्षिक जीवन का आरंभ हुआ इसलिए 7 नवंबर को महाराष्ट्र में विद्यार्थी दिवस मनाया जाता है।

1907 में उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और अगले वर्ष एलफिंस्टन कॉलेज में प्रवेश लिया जो बॉम्बे विश्वविद्यालय से संबंध था। इस स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले ये अपने समुदाय के पहले व्यक्ति थे।

1912 में ही बॉम्बे विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र व राजनीतिक विज्ञान में कला स्नातक (बी.ए) प्राप्त की। 2 फरवरी, 1913 को इनके पिता का निधन हो गया।

22 वर्ष की आयु में डॉ. भीमराव अंबेडकर अमेरिका चले गए वहाँ उन्हें शिवाजीराव गायकवाड (जो बड़ौदा के गायकवाड थे) द्वारा स्थापित एक योजना के अंतर्गत न्यूयॉर्क नगर स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की।

1916 में वे लंदन चले गए वहाँ उन्होंने बैरिस्टर कोर्स में प्रवेश लिया। लंदन से अध्ययन पूर्ण कर भारत वापस लौटते हुए भीमराव अंबेडकर 3 महीने जर्मनी में रुके वहाँ उन्होंने अपना अर्थशास्त्र का अध्ययन बॉन विश्वविद्यालय में जारी रखा किंतु समय की कमी से वे विश्वविद्यालय में अधिक नहीं ठहर सके। उनकी तीसरी और चौथी डॉक्टरेट्स (एलएलडी. कोलंबिया विश्वविद्यालय 1952 और डि.लिट उस्मानिया विश्वविद्यालय 1953) सम्मानित उपाधियाँ थी।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा कि 'छुआछूत गुलामी से भी बदतर हैं।' भीमराव अंबेडकर ने स्वयं छुआछूत, भेदभाव व अस्पृश्यता का गहरा आघात झेला था। अतः उन्होंने निश्चय किया कि गरीब, दलित, पिछड़े लोगों को इन सब का सामना करना पड़ रहा है किसी तरह से समाज में समानता हो, बराबरी लायी जाए इसके लिए उन्होंने बहुत संघर्ष किया।

तालाब में पशु तो पानी पी सकते थे मगर दलित, पिछड़े व वंचित लोग नहीं पी सकते थे। अंबेडकर ने मनुस्मृति का विरोध कर सभी को समानता के सूत्र में पिरोने का कार्य किया जिसका विरोध भी कई लोगों ने किया लेकिन अम्बेडकर पीछे हटने वालों में से नहीं थे बहुत संघर्ष करके उन्होंने दलित, गरीब व पिछड़े लोगों को महाड शहर में सत्याग्रह कर चवदार जलाशय से पानी लेने का अधिकार दिलाया, कालाराम मंदिर सत्याग्रह कर मंदिरों में प्रवेश दिलाया तथा अनेक ऐसे कार्य जैसे सार्वजनिक स्थानों पर दलित गरीबों को भेदभाव, छुआछूत से मुक्त करवाया इसलिए भीमराव अंबेडकर को 'दलितों का मसीहा' भी कहा जाता है।

भीमराव अंबेडकर का राजनीतिक जीवन 1926 में शुरू हुआ और 1956 तक राजनीति में विभिन्न पदों पर आसीन रहे। वर्ष 1926 में मुंबई के गवर्नर ने उन्हें मुंबई विधान परिषद के सदस्य के रूप में नामित किया। 13 अक्टूबर, 1935 को अंबेडकर को सरकारी लॉ कॉलेज का प्रधानाचार्य नियुक्त किया। उन्होंने अपने घर में एक निजी पुस्तकालय का निर्माण करवाया जिसमें 50,000 से अधिक पुस्तकें थी तब यह दुनिया का सबसे बड़ा निजी पुस्तकालय था। 1936 में अंबेडकर ने स्वतंत्र लेबर पार्टी की भी स्थापना की थी। 1942 से 1946 के दौरान अंबेडकर रक्षा सलाहकार समिति और वायसराय की कार्यकारी परिषद में श्रम मंत्री के रूप में सेवारत रहे। अम्बेडकर दो बार राज्यसभा के सदस्य (महाराष्ट्र से) रहे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। इस समिति ने 2 वर्ष 11 माह 18 दिन की अथक मेहनत से संविधान का निर्माण किया। अम्बेडकर एक बुद्धिमान व संविधान विशेषज्ञ थे। उन्होंने लगभग 60 देशों के सभी सविधानों का अध्ययन किया। इसलिए डॉ. अंबेडकर भारतीय संविधान के जनक, पिता व शिल्पी के रूप में जाने जाते हैं। संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर, 1949 को संविधान अपनाया गया। 1951 में संसद में हिंदू कोड बिल के मसौदे को रोके जाने के विरोध में अम्बेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया, हिंदू कोड बिल द्वारा भारतीय महिलाओं को कई अधिकारों को प्रदान करने की बात कही गई थी। ये दुनिया के

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सबसे पढ़े-लिखे व्यक्तियों की सूची में सर्वोच्च स्थान पर हैं इनके पास सबसे अधिक डिग्रियां थी, इन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी जिनमें 'एनीहिलेशन आफ कास्ट' 'कास्ट इन इंडिया' 'वेयर शूद्राज?' 'रिडल्स इन हिंदुइज्म' आदि शामिल है। उन्होंने 32 पुस्तकें लिखी व इन्हें 11 भाषाओं का ज्ञान था। इनके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'द प्रॉब्लम ऑफ द रूपी' से भारतीय केंद्रीय बैंक (भारतीय रिजर्व बैंक) की स्थापना हुई। उनकी आत्मकथा का नाम 'वेटिंग फॉर अ विजा' है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार को बढ़ाते हुए उन्होंने कहा था कि शिक्षा सभी समस्याओं का समाधान है', 'आधी रोटी कम खाओ और अपने बच्चों को अवश्य पढ़ाओ' और उनका सर्वाधिक प्रचलित कथन कि शिक्षा एक शेरनी का दूध है,जो पियेगा वो शेर की तरह दहाड़ेगा।

डॉ. भीमराव अंबेडकर को अनेक पुरस्कार व सम्मान मिले हैं। वर्ष 1990 में अंबेडकर को मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से नवाजा गया, द ग्रेटेस्ट इंडियन 2012, पहले कोलंबियन राइट ऑफ गैर टाइम 2004 से सम्मानित भी किया गया। 14 अक्टूबर, 1956 को डॉ. भीमराव अंबेडकर ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया और 22 प्रतिज्ञाओं के पालन का निश्चय लिया।

6 दिसंबर, 1956 को अपने निवास दिल्ली में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का महापरिनिर्वाण हो गया। 7 दिसंबर को मुंबई में दादर चौपाटी समुद्र तट पर बौद्ध शैली में अंतिम संस्कार किया गया।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर तो इस संसार से विदा हो गए लेकिन लाखों-करोड़ों दलितों, गरीबों, वंचितों के दिलों में सम्मानपूर्वक जीवन जीने की ललक पैदा कर गए।

आज हम बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की 132 वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में सादर श्रद्धांजलि देते हुए उनके नक्शे कदम पर चलने की प्रतिज्ञा करते हैं। अंत में 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो' इन्हीं बातों को हम अपने जीवन में उतारते हुए बाबा साहब को सच्ची श्रद्धांजलि देते हैं।

अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)
तिंवरी, तहसील-तिंवरी, जोधपुर (राज.)-342306
मो. नं.: 9783182683

भारतीय इतिहास में जलियाँवाला बाग

❐ योगेश कुमार सैन

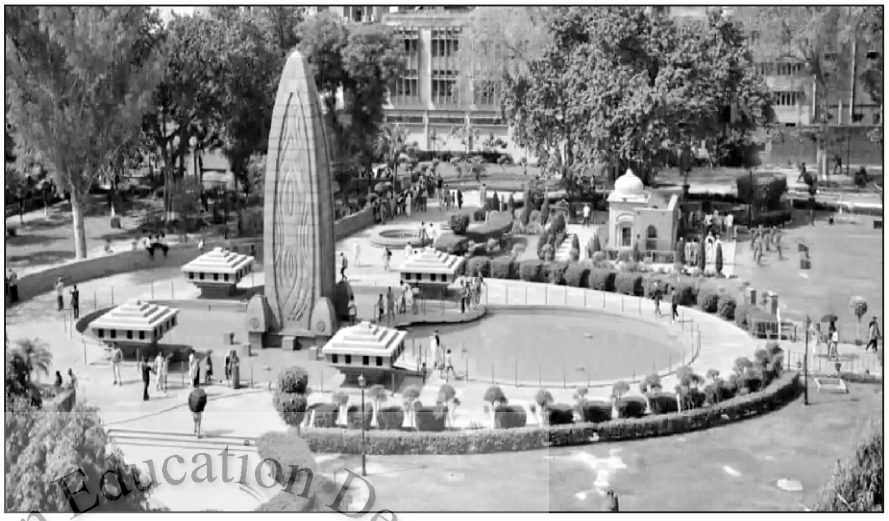

भारतीय स्वातंत्र्य समर की महागाथा स्वतंत्रता के स्वर्ण प्रभात से पहले पराधीनता की उन अंधियारी रातों की दास्तां है जब हमारे देश पर अंग्रेजी राज था। अंग्रेज सरकार के जुल्म-ओ सितम और उन्हें हँस-हँस कर सहने वाले नामी और गुमनाम शहीदों की कहानी है। यह उन दिनों की बात है जब सूरज की किरणें रोशनी के स्थान पर नित-नए कानूनी अंधेरे को लेकर आती थी। आजादी की महागाथा का प्रत्येक पृष्ठ ही स्वर्णिम और रक्तिम अक्षरों से लिखित है परन्तु यह सफर वक्त के कुछ ऐसे ही पड़ावों से होकर गुजरा जहाँ एक बारगी ऐसा प्रतीत होता है कि समयाश्वों के कदम भी थम से जाते हैं। वक्त के ऐसे ही एक पड़ाव पर घटी एक दुर्दान्त घटना जिसके निशां आज भी कोटिशः देशवासियों के मानस पटल पर अंकित है। यह कुख्यात और रक्तरंजित घटना थी-जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड।

सन् 1857 के महान संग्राम को अंग्रेजों द्वारा छलपूर्वक कुचल दिए जाने के पश्चात भी क्रांतिपुत्रों के मन में क्रांति की चिंगारियां सुलग रही थी। इन चिंगारियों को हवा देने का काम किया बीसवीं सदी के शुरूआती दौर में घटी एक घटना जो देश के इतिहास में बंग-भंग के नाम से सर्वज्ञापित है। इस घटना का सम्पूर्ण देश में घोर विरोध किया गया और संभवतः यहीं से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय और महत्त्वपूर्ण चरण प्रारंभ हुआ था। इस घटना के बाद से भारतीय राष्ट्रीय राजनीति में गरमपंथी विचारधारा का उदय हुआ। बीसवीं सदी के प्रारंभिक बीस वर्षों में संपूर्ण देश में राष्ट्रीय आंदोलन अपनी गति प्राप्त कर रहा था। परन्तु कुछ राज्यों यथा उत्तरप्रदेश, बंगाल और पंजाब में इसका व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ने लगा था।

पंजाब में इस आंदोलन का नेतृत्व लाला लाजपतराय, करतार सिंह सराभा, सूफी अम्बाप्रसाद, सरदार अजीत सिंह तथा सरदार किशन सिंह जैसे प्रभावशाली नेताओं ने किया। इन नेताओं के ओजस्वी भाषणों ने जनता में राष्ट्रीयता का भाव जाग्रत किया। उन दिनों बांके दयाल द्वारा लिखे गए एक गीत 'पगड़ी संभाल जट्टा' ने तो मानों किसानों के सोए स्वाभिमान को जगाकर ही रख दिया।

समय के साथ राष्ट्रीय आंदोलन आगे बढ़ता गया तथा इसके साथ इस आंदोलन रूपी जन चेतना को कुचलने के लिए सरकारी दमन

Rajasthan Education Department

चक्र भी तेज होने लगा। असंख्य लोगों को अकारण ही जेलों में डाल दिया गया और कितने ही लोगों को सरेराह गोलियों से भून दिया गया। सरकारी दमन जितना प्रबल होता, जनता का जोश भी उतना ही प्रबल होता था। अंत में सरकार ने राष्ट्रवादियों में भय व्याप्त करने के उद्देश्य से सर सिडनी रोलेट नामक अंग्रेज न्यायाधीश के नेतृत्व में बनी एक कमेटी की सिफारिशों के आधार पर 'अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम 1919 (जिसे रोलेट एक्ट के नाम से भी जाना जाता था) लागू कर दिया गया।

इस कानून को 'काला कानून' की संज्ञा दी गई। पंजाब सहित सम्पूर्ण देश में लोगों ने इस कानून का मुखर विरोध किया। जगह-जगह सरकार विरोधी प्रदर्शन और रैलियाँ आयोजित होने लगी। इन प्रदर्शनों में एक विशेष बात यह थी कि चिरकाल पश्चात इनमें सभी धर्मों के लोगों ने सांप्रदायिक सौहार्द्र का परिचय देते हुए कंधे से कंधा मिलाते हुए भाग लिया। पंजाब का तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ डायर इस सांप्रदायिक एकता के स्वरूप को देखकर स्तब्ध रह गया। उसने 10 अप्रेल, 1919 को अमृतसर के दो लोकप्रिय नेताओं डॉ. सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू को अपनी कोठी पर बुलाकर गिरफ्तार कर लिया और उन्हें धर्मशाला में निर्वासित कर दिया। 11 अप्रेल, 1919 को गवर्नर ने बिग्रेडियर जनरल आर ई एच डायर को अमृतसर का प्रशासक नियुक्त किया। 12 अप्रेल को जनरल डायर ने अमृतसर में अनेक लोगों की गिरफ्तारियां करवाई और इसने अमृतसर में किसी भी प्रकार के जुलूस व रैली करने पर प्रतिबंध लगा दिया। 13 अप्रेल, 1919 को पंजाब का प्रसिद्ध वैशाखी महापर्व मनाया जा रहा था और इसी दिन दोपहर पश्चात चार बजे अमृतसर की जनता ने जलियाँवाला बाग में एक शांति पूर्ण सभा की तथा अपने नेताओं डॉ. सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू को रिहा करने की मांग की। हंसराज नामक वक्ता भाषण दे रहा था, तभी जनरल डायर अपने दल-बल के साथ वहाँ पहुँचा। प्रवेश द्वार के पास कुछ टीले जैसे स्थान पर राइफलों से लैस अपने सैनिकों को पोजीशन लेने का आदेश दिया।

सौ गज के फासले में सघन रूप से निहत्थे बैठे लोगों पर बिना किसी चेतावनी दिए फायर का आदेश दिया।

फिर क्या था, 1630 राउंड आग उगलती गोलियाँ तब तक चलती रही जब तक वे स्वयं समाप्त नहीं हो गई। सैंकड़ों नर-नारी, युवा, बुजुर्ग और बालक पल भर में ही काल के गाल में समा गए। सर्वत्र करुण चीख-पुकार करते लोगों के मृत और घायल शरीरों से पूरा स्थान भर गया। इसी जलियाँवाला बाग में एक खाली कुआँ था, कितने ही लोग अपनी जान बचाने के लिए इसमें कूद गए।

इस वीभत्स हत्याकांड के बाद सरकार ने मृतकों और घायलों को अपने हाल पर छोड़ दिया था। सम्पूर्ण राष्ट्र इस जघन्य हत्याकांड से मर्माहत था। देश के कई स्थानों पर हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए। सम्पूर्ण देश में बंद और हड़तालें होने लगी। जनाक्रोश को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने इस घटना को जाँच हेतु विलियम हंटर की अध्यक्षता में एक जाँच आयोग का गठन किया जिसे हंटर आयोग के नाम से जाना गया। इस आयोग ने जानबूझकर इस नरसंहार के जघन्य घटनाक्रम को हल्का बताने के लिए अपनी जाँच रिपोर्ट में कहा कि पुलिस द्वारा की गई उक्त कार्यवाही जनता द्वारा उकसाने के परिणामस्वरूप की गई थी और इसमें 379 लोग मारे गए थे जबकि कांग्रेस जाँच समिति के अनुसार शहीदों की संख्या लगभग 1000 थी। वस्तुतः उस दिन कितनी जाने गई इसकी अधिकृत संख्या आज भी अज्ञात है। आज भी जलियाँवाला बाग की दीवारों पर बने गोलियों के निशान ब्रितानिया सरकार के इस घृणित कर्म की मूक गवाही देते नजर आते हैं। भारत सरकार ने इस स्थान को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया है।

जलियाँवाला बाग में घटी यह घटना भारत वर्ष ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व की मानवता के लिए एक कलंक के रूप में सिद्ध हुई। इस घटना ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान की। भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश सत्ता के लिए जो थोड़ी बहुत श्रद्धा थी वह भी समाप्त हो गई। जलियाँवाला बाग की इसी पैशाचिक घटना ने नन्हें भगत सिंह को शहीद-ए-आजम बनाया।

इसी घटना के बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन का पुनः बीजारोपण हुआ। बात इस नरसंहार की हो और उसमें सरदार उधमसिंह का जिक्र न हो तो यह बात अधूरी रहती है। उधम सिंह इस घटना से इतने विकल हो गए थे कि उन्होंने देश के इस अपमान का प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की। उधम सिंह प्रतिशोध और अपमान की इस ज्वाला को बीस वर्ष तक अपने हृदय में जलाए घूमते रहे। अंततः वे इस सुअवसर की तलाश में लंदन पहुँचे जहाँ 13 मार्च, 1940 को जलियाँवाला बाग हत्याकांड के 21वें वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर एक सभा भवन में माइकल ओ डायर का सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा था। तभी यह वीर पुरुष उस सभा भवन में पहुँचा और अपनी रिवॉल्वर की गोलियों से डायर को अपने अंजाम तक पहुँचा दिया। इस प्रकार राष्ट्र अपमान का प्रतिकार लेकर और राष्ट्रीय गौरव को प्रतिस्थापित कर सरदार उधमसिंह ने फाँसी के फंदे से लटककर अपने जीवन पुष्प को माँ भारती के पद पंकज में अर्पण किया। जलियाँवाला बाग के शहीदों ने मशाल अपने प्राणों की आहूति देकर जलाई थी। वह व्यर्थ नहीं गई और स्वतंत्रता प्राप्ति के पथ में वह एक युग परिवर्तक मील का पत्थर सिद्ध हुई।

वरिष्ठ शिक्षक (संस्कृत)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कांसेड़ा,
नावां, नागौर (राज.)
मो.न.: 9549290289

Rajasthan Education Department

अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या : निदान और नियमन

❐ कृष्ण बिहारी पाठक

किसी भी राष्ट्र के संपूर्ण भौतिक और मानवीय शैक्षिक संसाधनों की सार्थकता इस बात से तय होती है कि वे भावी पीढ़ी के निर्माण और उत्थान में कितने प्रभावी हैं। इसीलिए उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों के अधिकतम एवं सकारात्मक उपयोग के लिए ही एक योजनाबद्ध पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या को युगानुरूप अद्यतन तथा छात्रोंपयोगी बनाए रखने के लिए समय-समय पर विभिन्न प्रकार की नीतियों तथा नियमों का, प्रशिक्षणों तथा नवाचारों का आयोजन किया जाता है। पाठ्यचर्या के धरातलीय क्रियान्वयन की जिम्मेदारी राष्ट्र के शिक्षा विभाग, शैक्षणिक संस्थानों, शिक्षाविदों तथा अभिभावकों की होती है और निःसंदेह ये सभी इस दिशा में सक्रिय भी रहते हैं। अधिकारियों, अभिभावकों तथा स्टेकहोल्डर्स के सतत पर्यवेक्षण, निरीक्षण, मार्गदर्शन और संबलन का उद्देश्य भी यही रहता है कि इन संसाधनों के माध्यम से पाठ्यचर्या का उपयुक्ततापरक नियोजन, संचालन एवं क्रियान्वयन किया जा सके।

इन सब तैयारियों के बाद भी पाठ्यचर्या और उसमें अंतर्निहित लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति में एक अंतराल बना रहता है। इस अंतराल या बाधा का एक बड़ा कारण यह है कि विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ-साथ एक अप्रत्यक्ष या प्रच्छन्न पाठ्यचर्या भी समान्तर रूप से चलती है। इस अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या की विशेषता यह है कि यह व्यक्तित्व निर्माण की साधक और बाधक दोनों रूपों में उपस्थित रहती है।

ऐसी स्थिति में यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि पहले-पहल इस अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या को चिह्नित किया जाए अर्थात उसका निदान किया जाए तत्पश्चात उसके साधक पक्षों का संवर्धन और बाधक पक्षों का उन्मूलन किया जा सके।

सीधे तौर पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण के लिए प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के साथ-साथ अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या का निदान करते हुए उसका नियमन और नियोजन परमावश्यक है। किंतु चिंताजनक बात यह है कि अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या और उसके महत्त्व पर सम्यक विचार करते हुए क्रियान्वयन करने की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। इस क्षेत्र में कदम बढ़ाने से पहले सबसे पहले अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के संप्रत्यय को समझना होगा। अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या क्या है? अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या एक तरह से अनौपचारिक पाठ्यचर्या है जो स्वतःस्फूर्त संचालित होती है। बालक इसे एक दूसरे से तथा शिक्षकों के व्यवहार से सीखते हैं।

एक तरह से यह व्यवहार प्रतिमानों तथा विद्यालय संस्कृति पर आधारित है। बालक विद्यालय की संस्कृति से तथा विद्यालय सदस्यों जिसमें विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक भी शामिल हैं, के व्यवहार से जिन संस्कारों, मूल्यों तथा विश्वासों को ग्रहण करता है वे सब अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के ही अंग हैं। जब हम मूल्य आधारित शिक्षा और सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या की उपस्थिति और महत्त्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

प्रार्थना सत्र या कक्षा-कक्ष में नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने वाला कोई शिक्षक विद्यालय में अपने अन्य शिक्षक साथियों से कैसी नैतिकता दर्शाता है? अपने सहकर्मियों, वरिष्ठजनों और कनिष्ठों के प्रति उसका व्यवहार क्या और कैसा है। महिलाओं, अभिभावकों और अधिकारियों के प्रति उसका रवैया कैसा है। शिक्षक द्वारा प्रस्तुत व्यवहार विद्यार्थी के लिए उसका व्यवहार प्रतिमान है, जिसका अनुसरण, अनुकरण, साभास, अनायास दोनों रूप से बच्चे करते हैं। शिक्षक द्वारा प्रत्यक्ष रूप से पढ़ायी या बतायी गयी बातों से अधिक शिक्षक का व्यवहार प्रतिमान बालक के व्यवहार और अधिगम को अधिक प्रेरित प्रभावित करता है। शिक्षक द्वारा कथन और व्यवहार दोनों में यदि कोई विरोधाभास नहीं है तो यह आदर्श विद्यार्थी के नैतिक अधिगम को सकारात्मक दिशा प्रदान करेगा अन्यथा दोनों के बीच विरोध होने पर अधिगम की दिशा और दशा नकारात्मक होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

ऐसे में इस पाठ्यचर्या के सकारात्मक पक्ष के प्रति तो निश्चिंत रहा जा सकता है किन्तु इसके नकारात्मक पक्ष के प्रति सजग रहना बहुत आवश्यक है। अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के दोनों पक्षों को ध्यान में रखते हुए इसे बालक के हितसाधन के अनुकूल व्यवस्थित करना ही नियमन अथवा प्रबंधन है।

पर्यावरण और प्रकृति के प्रति सजगता, संरक्षण और सम्मान की बात प्रायः सभी विषयों और कक्षा स्तरों की प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग है किन्तु पर्यावरण और प्रकृति के प्रति सर्वाधिक संवेदनशीलता उन्हीं विद्यार्थियों में लक्ष्य की जा सकती है जो अपने विद्यालय परिसर में अपने गुरुजनों को पेड़ पौधों की सार संवार करते देखते हैं। इसी प्रकार व्यक्तित्व स्वच्छता, बातचीत करने की शैली, सलीका, शिष्टाचार और महिलाओं से, छोटे-बड़े तथा हम उम्र प्राणियों से व्यवहार आदि बातें अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या का ही अंग हैं जिन्हें बालक पाठ्यपुस्तकों से नहीं, अनुकरण से सीखते हैं।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का पाठ पढ़ते बच्चों को यदि कक्षागत या विद्यालयी परिवेश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न मिले और शिक्षकों द्वारा कक्षा में प्रभुत्ववादी वातावरण रखा जाए तो इसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या की विरोधाभासी स्थिति के रूप में देखा जा सकता है। प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या में जो बात विद्यार्थियों को पढ़ाई, लिखाई जा रही है व्यवहार में उसका दशवांश भी उनके सम्मुख घटित नहीं हो तो अनुमान लगाया जा सकता है कि वे उस पाठ को कितना आत्मसात करते होंगे।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या की अवधारणा सबसे पहले फिलिप जैक्सन ने प्रस्तुत की थी। फिलिप ने अपनी कृति 'लाइफ इन क्लासरूम्स' में अधिगम को सामाजीकरण की प्रक्रिया माना है और इस तरह से बालक अपने कक्षागत समाज, विद्यालय गत समाज और आवासगत समाज में उपस्थित प्राणियों के व्यवहार से प्रेरित, प्रभावित होकर अधिगम करता है। अनुकरण से अधिगम की यह प्रक्रिया स्वतःस्फूर्त होती है किन्तु पाठ्यचर्या के रूप में इसे व्यवस्थित करने का अर्थ यह है कि बालक को अधिकाधिक ऐसा परिवेश प्रदान किया जाए जो सकारात्मक व्यवहार प्रतिमानों पर केंद्रित हो। दूसरे अर्थ में अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या कहीं न कहीं सुनियोजित रूप में प्रस्तुति की प्राथमिकता और अनिवार्यता पर होने की मांग रखती है।

विद्यालयी स्तर पर जाति, वर्ग, लिंग या किसी अन्य आधार पर जो अंतराल उपस्थित होते हैं वे अधिकांशतः अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या से ही संबद्ध होते हैं इसलिए इन चुनौतियों से निपटने के लिए अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या का नियमन या प्रबंधन नितांत आवश्यक है।

घर परिवार और समाज के बीच पलते बढ़ते बच्चे जन्म से अपने साथ जाति, लिंग या वर्ग आधारित पूर्वाग्रह लेकर नहीं आते हैं। ये आग्रह पूर्वाग्रह वे अपने आस-पास के लोगों के व्यवहार के अनुकरण से सीखते हैं।

इसी तरह विद्यालयी जीवन में भी वे बहुत सी बातें सीखते हैं जो उनकी प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या से बिल्कुल अलग होते हैं। बच्चे पहले घर में देखते हैं कि लड़कियों को रसोई संबंधित सामान या गुड़िया आदि खिलौनों के रूप में उपलब्ध कराए जाते हैं और लड़कों को प्रायः गन, क्रेन, गाड़ियाँ या चिकित्सा संबंधी खिलौने दिलवाए जाते हैं। आगे चलकर बच्चे विद्यालय में भी यह देखते हैं कि सौंदर्यबोध से संबंधित कार्य जैसे रंगोली बनाना, सजावट आदि लड़कियों से और शारीरिक श्रम, सौष्ठव संबंधित कार्य लड़कों से करवाए जाते हैं। इस तरह से यह अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या लैंगिक समानता में बाधक बनकर हमारी शिक्षा व्यवस्था में अनजाने ही प्रचलित है।

लैंगिक निरपेक्ष दृष्टि या तटस्थ लैंगिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए यह जरूरी है कि घर-परिवार और विद्यालयी परिवेश में बालकों को ऐसे व्यवहार प्रतिमानों के बीच रखा जाए जो उसमें लैंगिक निरपेक्ष दृष्टि विकसित कर सकें। यदि ऊपर का उदाहरण लिया जाए तो बच्चों को विद्यालय में कार्य वितरण करते समय ऐसे मिश्रित समूह बनाने चाहिए जिनमें लड़के-लड़कियाँ दोनों साथ-साथ हों।

किसी कार्य विशेष के लिए केवल लड़कों या केवल लड़कियों के समूह बनाने की प्रवृत्ति को धीरे-धीरे कम करते हुए पूर्णतः उन्मूलन करने की ओर बढ़ना होगा। इसी तरह क्षेत्रों में भी अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के बाधक पक्ष को चिह्नित करते हुए उसे साधक और सकारात्मक बनाए जाने की आवश्यकता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे प्रत्येक विद्यार्थी में स्वावलंबन का गुण विकसित हो तो हमें बहुत सजगता से यह व्यवहार अपनाना होगा कि हम कक्षा-कक्ष में चाक, पुस्तक, रजिस्टर आदि अपने साथ स्वयं लेकर जाएँ, विद्यार्थियों को इन कार्यों के लिए कहने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करें। बालक जब घर में या विद्यालय में परिजनों और गुरुजनों को अपने-अपने दायित्वों को हस्तांतरित करते हुए देखता है तो उसमें भी अपने कामों को छोटे भाई-बहनों और मित्रों से करवाने की प्रवृत्ति पड़ने लगती है, विशेषकर वे काम जिनमें व्यक्ति को स्वावलम्बी होना ही चाहिए।

प्रजातंत्र का पाठ सिखाने के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों में लिखी परिभाषाएँ पर्याप्त नहीं हैं। विद्यार्थियों को शिक्षकों के आपसी व्यवहार तथा विद्यार्थियों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार में प्रजातांत्रिक व्यवहार की झलक मिलनी चाहिए।

समय-समय पर अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के परिशोधन के विभिन्न प्रयास शासन-प्रशासन एवं विभाग के माध्यम से किए जाते हैं, ऐसे में इन प्रयासों को धरातल पर सफल बनाने के लिए एक शिक्षक और अभिभावक का जुड़ाव नितांत आवश्यक है। अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या की व्यक्तित्व निर्माण में भूमिका को देखते हुए इसे प्राथमिकता तथा गंभीरता के साथ अपनाना चाहिए।

'नो बैग डे' का नवाचार इस दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो सकता है। 'नो बैग डे' को शाब्दिक अर्थ से देखें तो औपचारिक पाठ्यचर्या से मुक्त दिवस भी इसे कहा जा सकता है। बैग या बस्ता या पुस्तक-पुस्तिकाएँ अपने समग्र रूप में औपचारिक पाठ्यचर्या या प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या का ही तो प्रतिनिधित्व करते हैं। सप्ताह में एक दिन इन पुस्तक, पुस्तिकाओं से थोड़ा बाहर निकलकर बालक को उसके परिवेश, संस्कृति और सरोकारों से जोड़ना ही इस नवाचार की केंद्रीय चिंता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि बालक को इन सब बातों से जोड़ने के लिए पुस्तकों या प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या की बजाय व्यवहार प्रतिमान तथा प्रच्छन्न पाठ्यचर्या ही एकमात्र कारगर उपाय है।

लिखन्त, पढ़न्त और रटन्त की अंधी दौड़ में अंधाधुंध दौड़ते मशीनीकृत विद्यार्थी जीवन को अधिक सजीव और मानवोचित बनाने की पहल के रूप में 'नो बैग डे' की संकल्पना को आत्मसात और क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। इस पहल की मूल भावना को समझते हुए यदि इसे गंभीरतापूर्वक संचालित और उत्साहित किया जाए तो यह अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के नियमन और प्रबंधन का एक उपयुक्त कदम सिद्ध हो सकता है। विभाग द्वारा प्रस्तावित नवाचारों का अपना महत्त्व है ही। इनके साथ ही शिक्षक तथा अभिभावकों को अपने व्यवहार प्रतिमानों के प्रति सजग रहते हुए देश के भविष्य निर्माता बालक के समक्ष सदैव ऐसे व्यवहार प्रतिमान प्रस्तुत करने के लिए संकल्पबद्ध होना होगा जो युगपत रूप से बालक तथा समाज के, व्यक्ति तथा देश के और प्रकृति तथा विश्व के लिए हितकारी हों। प्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के समान ही अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या के महत्त्व को ध्यान रखते हुए भविष्य की शैक्षिक - सह शैक्षिक गतिविधियों का निर्माण एवं संचालन इस बदलते युग की बड़ी प्राथमिकता है।

व्याख्याता (हिंदी)
तिरूपति नगर, हिंडौन सिटी, जिला-करौली
(राज.)-322230
मो.न.: 9887202097

Rajshan Education Department

देव अरस्तु पंचारिया : अगले अल्बर्ट आइंस्टाइन

❒ शिवशंकर व्यास

कहा जाता है कि जब प्रकृति खुद को परिभाषित करवाना चाहती है, तब वो एक महान दार्शनिक को जन्म देती है। आधुनिक युग में इस कहावत को चरितार्थ करने वाली एक ऐसी शख्सियत है जिसका जन्म भारत की ऐतिहासिक मरुधरा में हुआ। एक रोल मॉडल, बच्चों-युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक अनगिनत प्रशंसक, विश्व-विख्यात शख्सियत, विश्व चर्चित पत्र-पत्रिकाओं में इनके विषय में छपे हुए लेख, अनेक देशों की मीडिया में नाम एक ब्रांड के तौर पर लिखा जाना और भी बहुत कुछ और यह सब किसी अभिनेता के संदर्भ में नहीं बल्कि एक बहुआयामी वैज्ञानिक और महान दार्शनिक के बारे में है। गौर करने वाला विषय ये भी है कि वो वैज्ञानिक विदेशी नहीं बल्कि इसी भारत देश की क्रांतिकारी व ऐतिहासिक धरा राजस्थान के माँ करणी के जिले बीकानेर के दूरवर्ती गाँव सींथल से ताल्लुक रखने वाला है। इस शख्सियत के बारे में शायद ही किसी ने कभी सोचा होगा कि गाँव का ये साधारण सा दिखने वाला बालक, आगे चलकर असाधारण बन दुनिया में एक दिन भारत देश के विज्ञान का न केवल प्रतिनिधित्व करेगा बल्कि देश को बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में पूरे विश्व मंच पर स्थान दिलाएगा।

जी हाँ, विज्ञान के प्रतिबिंब अर्थात देव अरस्तू पंचारिया जिन्हें ब्रिटिश राजसी सभा में सदस्य नामित किया गया। महान भौतिकशास्त्री, गणितज्ञ, अर्थशास्त्री और दार्शनिक देव अरस्तू पंचारिया आज वो नाम हैं जिनके सामने कोई भी परिचय बौना ही लगेगा, इनकी विद्वता, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा के विषय में कुछ भी लिखना एक सूर्य के सामने विराम की नुमाइश करने जैसा है।

यूएन से भारत सरकार के अनुबंध के तहत अकेले इनके नाम से पाँच सौ से अधिक खोजों की बौद्धिक संपदाएँ (पेटेंट/कॉपीराइट) हैं जो अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, मेक्सिको जैसे कई देशों के नामचीन विश्वविद्यालयों की कई वर्षों के कुल पंजीकृत बौद्धिक सम्पदाओं से भी अधिक है। इनकी कई खोजें अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। सैद्धांतिक विज्ञान और ब्रह्मांड की मौलिक समझ में वृद्धि के लिए इन्हें इंटरनेशनल रिसर्च अवार्ड, आउटस्टेंडिंग सर्वर अवार्ड जैसे कई पुरस्कारों से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नवाजा जा चुका है। ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में लाइफ टाइम अचीवमेंट ऑस्कर कहे जाने वाले ब्रिटिश राजपरिवार द्वारा संरक्षित रॉयल चार्टर (शाही विशेषाधिकार) के लिए भी इन्हें वर्ष 2021 में चुनावी प्रक्रिया के तहत कला, वाणिज्य और निर्माण के लिए प्रोत्साहित ब्रिटिश रॉयल सोसायटी द्वारा चुना गया। इस सम्मान को पाने वाले इतिहास के लगभग तीन सौ वर्षों के महानतम लोग हुए जिनमें अर्थशास्त्र के जनक एडम मिथ, संयुक्त राज्य अमेरिका के संस्थापक जनक बेंजामिन फ्रेंक्लिन, कार्ल मार्क्स, मेरी क्यूरी, नेल्सन मंडेला, स्टीफन हॉकिंग और महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन जैसे नाम शामिल है। देव अरस्तु को अनेक देशों की मीडिया ने उनकी अद्भुत व महान विलक्षणता को दिखाया है और उन पर कई लेख लिखे जा चुके हैं जिसमें भारत के अतिरिक्त ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी आदि जैसे देश शामिल हैं। इनके अनेक विषयों में विद्वता के चलते देव अरस्तु को अगला अल्बर्ट आइंस्टाइन भी कहा जाता है। देव अरस्तु द्वारा विज्ञान और जीवन पर कही गयी बातों को मीडिया के अलग-अलग माध्यमों पर करोड़ों लोगों ने देखा है व प्रेरित हुए हैं, जिसके चलते उन्हें विश्व का सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक भी घोषित किया गया। सुकरात, अरस्तु, न्यूटन और आइंस्टाइन जैसे महान विद्वानों की सूची में गिने जाने वाले देव अरस्तु पंचारिया की पहचान भी इन्हीं महान व्यक्तित्वों की तरह ही एक क्रांतिकारी भौतिकशास्त्री, गणितज्ञ और दर्शनशास्त्री की अधिक है लेकिन वे अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र जैसे कुल 13 से अधिक विषयों पर गहरी पकड़ रखते हैं और उनके इस अभूतपूर्व ज्ञान के चलते कई देशों की सरकारों और राजसी सभाओं के बीच भी उनकी ख्याति बहुत प्रशंसनीय है। कई विशिष्ट मीडिया द्वारा निकट भविष्य में श्री देव अरस्तु को नोबेल पुरस्कार मिलना भी लगभग तय बताया जा रहा है। शोध के सभी डेटा का विश्लेषण करने वाली विश्व की सबसे बड़ी संस्था रिसर्च गेट जर्मन साईन्टिफिक एजेंसी (Resarch Gate German Scienlific Agency) ने देव अरस्तु पंचारिया द्वारा की गयी एक क्रांतिकारी खोज फ्लूइड डिस्कंटीन्यूटी थ्योरी (The Fluid Discontinuity Theory) के लिये चलते उन्हें विश्व के शीर्ष चार वैज्ञानिकों की सूची में स्थान दिया है। एक अंग्रेजी मैगजीन ने उन्हें जीवित सबसे बुद्धिमान व्यक्ति भी सम्बोधित किया है। देव अरस्तु की प्रसिद्धि आज इस कदर है कि जब वे किसी कार्यक्रम में शामिल होते हैं तो शायद इतने लोग किसी अभिनेता को भी देखने नहीं आते जितने उनसे मिलना और उन्हें देखना चाहते हैं, साथ ही वे इस बात का जीवंत उदाहरण है कि एक व्यक्ति अपने ज्ञान के प्रकाश से भी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा का ऐसा स्वरूप हासिल कर सकता। देव अरस्तु ने मेगास्टार शब्द के नए मायने लिखे हैं। इनके जीवन और कार्यवृत को शैक्षिक पाठ्यक्रमों में भी शामिल किया जाना चाहिए ताकि इनकी आभा से देश व राजस्थान शिक्षा में एक नयी क्रांति का आगाज हो सके।

आज की स्कूल, कॉलेज, उच्च शिक्षा में यदि देव अरस्तु को सरकार अपनी ओर से विद्यार्थियों के सामने लाए तो आने वाली युवा प्रतिभाशाली पीढ़ी तय है, वे अपनी क्षमता, योग्यता से और अधिक ज्ञानार्जन प्राप्त करेंगी।

शिक्षा क्षेत्र खासकर विज्ञान जैसे विषय के इतने महान और सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ को हर शैक्षणिक संस्था व्यक्तिगत सुनकर अपने शिक्षकों और विद्यार्थियों के जीवन की दशा और दिशा में आमूलचूल परिवर्तन कर सकता है। आज देव अरस्तू राजस्थान के एक गाँव से निकलकर दुनिया के ज्ञान क्षेत्र, शोध क्षेत्र रूपी अंतरिक्ष का चमकता हुआ सबसे बड़ा सितारा है, जो राजस्थान और सम्पूर्ण भारत देश के युवा वर्ग को अपने दार्शनिक अंदाज के साथ भीतर से परिवर्तित कर सकता है।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. बासनी बेलिमा, नागौर (राज.)
मो. नं. : 9414474811

Rajshala Education Department

शब्द और संप्रेषण कौशल की उद्‌गम होती है-'मातृभाषा'

❐ सुनील कुमार महला

प्रायः घर में बोली जाने वाली भाषा को मातृभाषा कहा जाता है। अंग्रेजी में मातृभाषा के लिए जो शब्द हैं वे हैं क्रमशः 'मदर टंग' या 'वर्नाकुलर।' और 'वर्नाकुलर' शब्द से हमारा तात्पर्य 'स्थानीय भाषा, देशी भाषा, जनभाषा या मातृभाषा से होता है। मातृभाषा वास्तव में किसी जाति, कौम अथवा राष्ट्र की हो सकती है। जैसे भारत एक हिंदू बाहुल्य आबादी वाला देश है इसलिए भारत के संदर्भ में यह बात कही जा सकती है कि यहाँ की 'मातृभाषा' हिंदी है।

हिंदी हम सबकी भाषा है। जन-जन की भाषा है। महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि 'हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय हृदय से बातचीत करता है।' वैसे हिंदी को हमारी संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को 'ऑफिशियल लेंग्वेज' यानि कि 'राजभाषा' का दर्जा दिया गया था। आज बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की आधिकारिक भाषा हिंदी, आंध्रप्रदेश व तेलंगाना की तेलगू, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड की अंग्रेजी, असम की असमिया, गोवा की कोंकणी और अंग्रेजी, गुजरात की गुजराती, कर्नाटक की कन्नड़, केरल की मलयालम, महाराष्ट्र की मराठी, मणिपुर की मणिपुरी, मिज़ोरम की मिज़ो, ओड़िशा की उड़िया, पंजाब की पंजाबी, सिक्किम की अंग्रेजी, नेपाली, सिक्किमी, लेपचा, तमिलनाडु की तमिल, त्रिपुरा की बंगाली, अंग्रेजी, कोकबोरोक और अंग्रेजी तथा पश्चिमी बंगाल की अंग्रेजी व बंगाली आधिकारिक भाषाएँ हैं। जानकारी देना चाहूँगा कि भारत में 19500 से अधिक भाषाएँ या बोलियाँ मातृभाषा के तौर पर बोली जाती हैं और ऐसी 121 भाषाएँ हैं जो भारत में 10 हजार या उससे अधिक लोग बोलते हैं। वर्ष

2011 की जनगणना की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस तरह की मातृ भाषाओं की कुल संख्या 19 हजार 569 है। हालांकि, देश में 96.71 फीसदी आबादी की संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में से एक मातृभाषा है। मातृभाषा के बारे में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि ऐसा जरूरी नहीं है कि हर घर के प्रत्येक सदस्य की मातृभाषा एक ही हो। वर्तमान में इस देश की कोई भी राष्ट्रभाषा नहीं है लेकिन हिंदी को भारत की मातृभाषा माना जाता है। यदि हम मातृभाषा को किसी परिभाषा में बांधना चाहें तो हम ये कह सकते हैं कि-'किसी व्यक्ति की मातृभाषा से तात्पर्य उस सर्वमान्य भाषा से होता है जिसकी किसी विभाषा की किसी बोली को वह अपने शिशुकाल में अपने परिवार एवं समाज के बीच रहकर स्वाभाविक रूप से सीखता है और जिसके सर्व स्वीकृत स्वरूप को वह सप्रयास सीखता है।' जानकारी देना उचित होगा कि 17 नवंबर, 1999 को यूनेस्को द्वारा 'मातृभाषा दिवस' की स्वीकृति प्रदान की गई थी। वास्तव में इसका उद्देश्य 'भाषाई और सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषावाद के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना' था। यहाँ यह भी जानकारी देना चाहूँगा कि यूनेस्को द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की घोषणा से बांग्लादेश के भाषा आन्दोलन दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृति मिली, जो बांग्लादेश में सन 1952 से मनाया जाता रहा है। वर्ष 2008 को संयुक्त राष्ट्र आमसभा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय भाषा वर्ष के रूप में घोषित किया गया था। किसी भी व्यक्ति, समाज व देश के लिए भाषाएँ बहुत ही महत्त्व रखती हैं, विशेषकर मातृभाषाएँ। वास्तव में, मनुष्यों द्वारा स्वाभाविक रूप से अपने पारिवारिक परिवेश में रहते हुए जो पहली भाषा प्राप्त की जाती है अथवा सीखी जाती है, वही मनुष्य की मातृभाषा कहलाती है। मातृभाषा उस भाषा से जुड़ी होती है जो एक बच्चे के माता-पिता, अभिभावक, चाचा-चाची, दादा-दादी, नाना-नानी, रिश्तेदारों उनके साथ आपस में संवाद करने के लिए उपयोग करते हैं, या उस स्थान की सामान्य भाषा जहाँ एक व्यक्ति का जन्म और पालन-पोषण होता है, उसे ही व्यक्ति की मातृभाषा कहा जाता है। वास्तव में भाषा हमारी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। यह हमारे संचार को प्रभावी बनाती है। परिवार में बच्चा सबसे पहले अपनी मातृभाषा को ही सीखता है, क्योंकि वह परिवार में जो कुछ भी देखता, सुनता है, उसकी नकल करता है और मातृभाषा को सीखता है। मातृभाषा सीखना आसान होता है। अपनी मातृभाषा पर मजबूत पकड़ होने से अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी मजबूत नींव का निर्माण होता है, क्योंकि अपनी मातृभाषा के व्याकरण को सीख लेने के बाद कोई भी बच्चा विभिन्न भाषाओं में शब्दों के सही अर्थ का अनुमान आसानी से लगा सकता है। अलग-अलग क्षेत्रों की मातृभाषा भी अलग-अलग होती है। वास्तव में यह मातृभाषा ही होती है जो हमारे सीखने के कौशलों को आगे बढ़ाने में हमारी मदद करती है। मातृभाषा में बातचीत करने से हमारे अंदर विभिन्न संचार कौशलों का निर्माण बखूबी

Rajasthan Education Department

होता है और हमें 'लर्निंग' यानि कि अधिगम में काफी हद तक मदद मिलती है। अपनी मूल भाषा में संवाद करने का फायदा यह होता है कि हम अपनी शब्दावली व अवधारणाओं को काफी हद तक विकसित कर सकते हैं। हम अपनी अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही सहजता से दे सकते हैं। आज मातृभाषा लगातार अपना महत्त्व खो रही हैं और बहुत सी मातृभाषाएँ धीरे धीरे विलुप्ति की कगार पर पहुँच गई हैं, क्योंकि आज हमारे देश के हर समाज में लगातार अंग्रेजी लोकप्रिय हो रही है। शिक्षा, व्यापार से लेकर हरेक क्षेत्र में आज अंग्रेजी का बोलबाला है। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी का बोलबाला है और यह विभिन्न भाषाओं की विलुप्ति का कारण बन रही है। भाषाएँ चाहे कोई भी हों, सभी भाषाओं का अपना अलग महत्त्व है और कोई भी भाषा कभी भी बुरी नहीं होती, व्यक्ति को अपने जीवन में अधिकाधिक भाषाएँ सीखने का प्रयास करना चाहिए लेकिन मातृभाषा का स्थान उनमें हमेशा ही सर्वोपरि होना चाहिए। मातृभाषाएँ हमारे व्यक्तित्व का अविभाज्य हिस्सा होती हैं। वास्तव में हमारे अस्तित्व के समृद्ध सांस्कृतिक-सामाजिक पहलू को संरक्षित करने के लिए हमें यह चाहिए कि हम अपनी मातृभाषाओं की हर हाल और परिस्थितियों में सदैव रक्षा करें। मातृभाषा सीखने से हमारे मन में विश्वास पैदा होता है और हमें आत्मबल मिलता है। एक बच्चे की एक या एक से अधिक मातृभाषाएँ हो सकती हैं। मातृभाषा हमें सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान दिलाती है और हमें समाज में स्थापित करती है। यह हमें हमारी समृद्ध-सनातन संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, रीति-रिवाजों, हमारे सामाजिक मूल्यों, आदर्शों, प्रतिमानों से जोड़ती है। अपनी मातृभाषा से जुड़कर ही व्यक्ति अपनी धरोहर से जुड़ता है और उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी द्वारा बहुत ही सुंदर शब्दों में यह लिखा गया है, 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय के सूल।' अर्थात मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। हम मातृभाषा के महत्त्व को इस रूप में समझ सकते हैं कि अगर हमको पालने वाली, हमारी 'माँ' होती है तो हमारी भाषा भी हमारी माँ ही है। एक माँ की तरह हमको पालने का कार्य हमारी मातृभाषा भी अवश्य करती है इसीलिए भारतेन्दु जी ने 'माँ' और 'मातृभाषा' को बराबर का दर्जा प्रदान किया है। वर्ष 2011 की गणना के अनुसार, लगभग 43.7 फीसदी लोगों ने हिंदी भाषा को अपनी मातृभाषा के रूप में स्वीकार किया है। आज के समय में हिंदी का प्रयोग हर क्षेत्र में उन्नत स्तर पर हो रहा है। हिंदी हमारे देश की सभ्यता, संस्कृति, हमारे देश की एकता व अखंडता को मजबूत करने वाली बहुत ही शानदार, सशक्त, दमदार, वैज्ञानिक शब्दावली लिए हुए, सरल, सहज व सुबोध भाषा है। आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा है जहाँ हिंदी का प्रयोग न होता हो। सोशल नेटवर्किंग साइट्स से लेकर, फिल्मों, ऑफिसेज, मंत्रालयों, माननीय न्यायालयों तक में हिंदी का आज प्रयोग किया जा रहा है। सच तो यह है कि मातृभाषा हमारे विकास की प्रमुख आधारशिला है। हमारे विचार-विनिमय मातृभाषा से ही सहज होते हैं। प्रायः सभी समाज अपनी शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा को ही बनाते हैं। वैसे भाषा विज्ञान में मातृभाषा को बोली कहा जाता है। मातृभाषा से व्यक्ति व समाज दोनों का विकास संभव होता है। मातृभाषा हिन्दी की तो एक खास विशेषता यह भी है कि हिंदी एक प्रकार से हमारे देश की जन भाषा, सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा है। हालांकि हिंदी को अभी तक भारत के संविधान द्वारा राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। मातृभाषा बच्चों के सर्वांगीण विकास में बहुत ही सहायक सिद्ध होती है। आज राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध समय की सबसे बड़ी मांगे हैं। चूंकि भारत एक आध्यात्मिक देश है इसलिए हमारे यहाँ बच्चों के आध्यात्मिक विकास पर भी बहुत बल दिया जाता है। इन सब उद्देश्यों की प्राप्ति में मातृभाषा और उसके साहित्य की मूल भूमिका होती है। मातृभाषा बच्चों के नैतिक, चारित्रिक और व्यावसायिक विकास में बहुत सहायक होती है। यह मातृभाषा ही होती है जिससे किसी भी राष्ट्र की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं की पूर्ति संभव होती है। बहरहाल, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस यह स्वीकार करता है कि भाषाएँ और बहुभाषावाद सामाजिक समावेश और विश्वव्यापी विकास के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं, और सतत विकास लक्ष्य सभी के लिए समानता को बढ़ावा देते हैं। इस वर्ष यानी कि वर्ष 2023 में अंतर्राष्ट्रीय भाषा दिवस की थीम- बहुभाषी शिक्षा - शिक्षा को बदलने की आवश्यकता (मल्टीलिंग्वल एजुकेशन- ए नेसेसिटी टू ट्रांसफोर्म एजुकेशन) रखी गई है। इससे पहले यानी कि वर्ष 2022 में सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत को बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की थीम 'बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग: चुनौतियाँ और अवसर' पर रखी गई थी। वास्तव में, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस दुनिया में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता व बहुभाषिता को बढ़ावा देने के साथ-साथ मातृभाषाओं से जुड़ी जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। अंत में, हरिऔध जी के शब्दों में कहना चाहूँगा कि-'कैसे निज सोए भाग को कोई सकता है जगा, जो निज भाषा-अनुराग का अंकुर नहीं उर में उगा।' मातृभाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है और देश प्रेम की भावना उत्प्रेरित करती है। यह मातृभाषा ही होती है जो किसी भी व्यक्ति के शब्द और संप्रेषण कौशल की उद्गम होती है। अतः आइए हम अपनी मातृभाषाओं की शक्ति को पहचानें और इनके संरक्षण के लिए हर आवश्यक कदम उठाएँ।

प्रवक्ता
वार्ड नं 11, भगतपुरा रोड़,
संगरिया, हनुमानगढ़ (राज.)
मो. नं.: 9828108858

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

महावीर जयंती विशेष

भगवान महावीर का दर्शन और प्रासंगिकता

❒ संदीप जैन

मौजूदा समय में जब विश्व के समक्ष बहुत सी चुनौतियाँ मौजूद हैं और हम उनके समाधान के उपाय ढूंढ़ रहे हैं, भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित दर्शन और उपदेश बहुत महत्त्व रखते हैं। उन्होंने जो शिक्षाएँ दी, वे जन-जन के लिए अंधकार से प्रकाश, असत्य से सत्य एवं निराशा से आशा की ओर जाने का माध्यम बनी। उनकी शिक्षा की उपादेयता सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वदेशिक है, दुनिया के तमाम लोगों ने इनके जीवन एवं विचारों से प्रेरणा ली है।

आधुनिक समाज पर भगवान महावीर की शिक्षाओं का प्रभाव : भगवान महावीर की शिक्षाओं का आधुनिक समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उनकी शिक्षाएँ समाज के लिए निम्नानुसार उपयोगी है।

अहिंसा और अपरिग्रह– भगवान महावीर ने कहा- अहिंसा सब जीवों के लिए कल्याणकारी है। सामाजिक जीवन जीने वाली मनुष्य जाति का उपकार तो उसी में है। सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए जैसे-जैसे हिंसा बढ़ रही है, वैसे-वैसे समाज को हानि हो रही है। संग्रह के लिए हिंसा और हिंसा के लिए संग्रह दोनों साथ-साथ चलते हैं। अत्याचार रोकने के लिए महावीर ने अपरिग्रह का मार्ग बताया। यह हिंसा से बचने का सौम्य उपाय है परिग्रह की स्वैच्छाकृत मर्यादा।

अहिंसा और स्वतंत्रता : महावीर मनुष्य की स्वतंत्रता के पक्षकार थे। स्वतंत्रता का अपहरण हिंसा है। जहाँ हिंसा है वहाँ समस्या है, दुःख है। इस दुःख से छुटकारा पाने के लिए महावीर ने आत्मानुशासन का सूत्र दिया है। उन्होंने कहा- अपने आपको अनुशासित करो। महात्मा गाँधी एवं मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे आधुनिक युग के नायक महावीर के अहिंसा के सिद्धांत से प्रेरित हुए, जिन्होंने सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए अहिंसक तरीकों का इस्तेमाल किया।

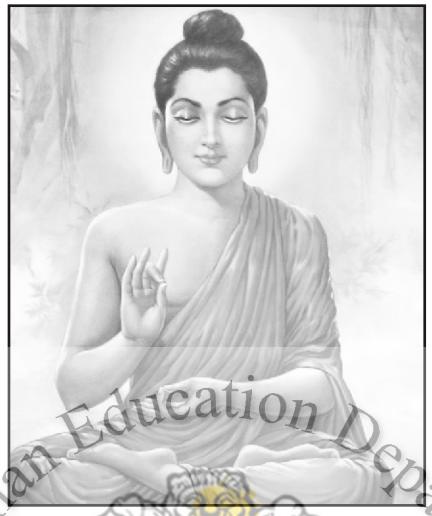

अहिंसा और समता– महावीर ने कहा- शरीर, इन्द्रिय, रंग-रूप, जाति आदि में बाहरी भेदों को देखकर आंतरिक और स्वरूपगत समानता को भुला देने वाला अहिंसक नहीं हो सकता है। अहिंसक वही हो सकता है जिसकी दृष्टि बाहरी भेदों को पार कर आंतरिक समानता को देखती रहती है। जो आंतरिक समानता को नहीं देखता है, वह दूसरों से घृणा करता है या दूसरों द्वारा स्वयं को घृणित अनुभव करता है। वह दूसरों को डराता है या उनसे डरता है। ये अहंभाव और हीन भाव की मनोवृत्तियाँ विषमता पैदा करती है। जहाँ विषमता होती है वहाँ हिंसा निश्चित होती है। व्यवहार की भूमिका में भी जितना समानता का बर्ताव होता है उतना ही प्रेम बढ़ता है, जितना प्रेम बढ़ता है उतनी ही व्यवस्थाएँ अच्छे ढंग से चलती है, हिंसा कम होती है। जिस व्यक्ति या समाज का अंतःकरण समता से स्नात हो जाता है, उसका व्यवहार विषम नहीं होता, उसकी व्यवस्था विषमता से पूर्ण नहीं होती। भगवान ने कहा-'कोई दुःख नहीं चाहता, इसलिए किसी को दुःख मत दो। यह अहिंसा है, यह समता है।

अहिंसा और सह-अस्तित्व– महावीर ने कहा- 'मनुष्य कितना स्थूलदर्शी है। वह थोड़े से गहरे में उतरकर भी नहीं देखता। ऊपर-ऊपर से जो भेद दिखाई दे रहा है, उसके नीचे कितना अभेद छिपा हुआ है। ये अभेद और भेद एक ही साथ रहते हैं, इनमें कोई विरोध नहीं है। तब मनुष्य में विरोध और विरोधी को समाप्त करने की दृष्टि क्यों होनी चाहिए? अहिंसा का विकास होने पर विरोध नहीं रहता, सह-अस्तित्व में कोई बाधा नहीं रहती।

अनेकान्तवाद– भगवान महावीर ने वैचारिक परिग्रह की ग्रंथि को खोलने के लिए अनेकांत की दृष्टि प्रस्तुत की। उन्होंने कहा- 'वस्तु के अनन्त धर्मों और अनन्त पर्यायों को अनन्तु चक्षुओं से देखो। उन्हें किसी एक ही चक्षु से मत देखो। जो व्यक्ति वस्तु सत्य को एक चक्षु ये देखता है वह अपने स्वीकृत सिद्धांत का समर्थन एवं दूसरों की स्वीकृतियों का खंडन करता है। यह स्यादवाद का दृष्टिकोण वैचारिक द्वंद्व की समाप्ति का दृष्टिकोण है। इससे सभी विचारधाराओं का समन्वय सधता है। यह समन्वयक का मार्ग एकांकी दृष्टिकोण, वैचारिक अभिनिवेश और मताग्रह से होने वाली हिंसा से मुक्ति देने वाला है। अपने दृष्टिकोण की सच्चाई को दूसरों के दृष्टिकोण की सच्चाई से समन्वित करने का सूत्र महावीर की अहिंसा का उनके स्वभाव का महान सूत्र है। इससे समूची मानव जाति का वर्तमान और भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

जीवन का सम्मानः महावीर के अनुयायी प्रत्येक जीवन को पवित्र मानते हैं और वे मनुष्यों से लेकर जानवरों और पौधों तक सभी जीवित प्राणियों के प्रति बहुत सम्मान दिखाते हैं। जैन धर्मावलम्बियों का मानना है कि सभी जीवित प्राणियों में मुक्ति प्राप्त करने की क्षमता होती है और किसी भी प्राणी को नुकसान पहुँचाने से बचने का प्रयास करते हैं, चाहे वह कितना भी छोटा या महत्त्वहीन क्यों न हो।

महावीर की शिक्षाएँ और विज्ञान– भगवान महावीर की शिक्षाओं का सीधा संबंध विज्ञान से नहीं था, लेकिन उनकी शिक्षाओं में कुछ अवधारणाएँ हैं जिनकी वैज्ञानिक संदर्भ में

Rajasthan Education Department

व्याख्या की जा सकती है–

(1) कर्म का सिद्धांत– महावीर का कर्म सिद्धांत, कारण और प्रभाव की आधुनिक अवधारणा के अग्रदूत के रूप में देखा जा सकता है। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक कार्य के परिणाम होते हैं, और व्यक्ति अपने भाग्य के लिए स्वयं जिम्मेदार होते हैं। कार्य-कारण की यह अवधारणा वैज्ञानिक जाँच का विषय और इसका उपयोग घटनाओं की एक विस्तृत शृंखला की व्याख्या करने के लिए किया जाता है।

(2) स्यादवाद– महावीर की पूर्ण सत्य की अस्वीकृति और ज्ञान के लिए अनेकान्तवादी दृष्टिकोण पर जोर देने को वैज्ञानिक पद्धति के प्रारब्ध के रूप में देखा जा सकता है। विज्ञान इस विचार पर आधारित है कि ज्ञान अनंतिम है और नए साक्ष्यों के आधार पर संशोधन के अधीन है और यह कि विभिन्न दृष्टिकोण और व्याख्याएँ सह-अस्तित्व में हो सकती है।

(3) पर्यावरणवाद– जैन प्राचीनकाल से सूक्ष्म जीवों के अस्तित्व, पेड़-पौधों में जीवन की अवधारणा की मान्यता में विश्वास करते आए हैं। विज्ञान ने बहुत बाद में इसे सिद्ध किया है। जैन समुदाय का मानना है कि प्राकृतिक पर्यावरण पवित्र है और इसकी रक्षा करना मनुष्य का उत्तरदायित्व है। इसने महावीर के अनुयायियों के भीतर पर्यावरण प्रबंधन की एक मजबूत परम्परा को जन्म दिया है और जैन समाज पर्यावरण सक्रियता और संरक्षण के प्रयासों में शामिल है।

इस प्रकार आज के युग की जो भी समस्याएँ हैं, चाहे महामारी या पर्यावरण की समस्या हो, हिंसा एवं युद्ध की समस्या हो, चाहे अपराधीकरण एवं अनैतिकता की समस्या, चाहे तनाव एवं मानसिक विकृतियाँ हो, चाहे आर्थिक एवं विकृत होती जीवन शैली की समस्या हो– इन सब समस्याओं का समाधान महावीर के सिद्धांतों एवं उपदेशों में निहित है। महावीर एक कालजयी और असांप्रदायिक महापुरुष थे, जिन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत को तीव्रता से जिया। वे इस महान त्रिपदी के न केवल प्रयोक्ता और प्रणेता बने बल्कि पर्याय बन गए।

सहायक निदेशक (कार्मिक)
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो.न.: 9928175415

महात्मा ज्योतिबा फुले के समाज और शिक्षा पर विचार

❐ पृथ्वीराज लेघा

महात्मा ज्योतिराव फुले का जन्म 11 अप्रैल, 1827 को खानवाड़ी, सतारा पुणे (महाराष्ट्र) में हुआ। उन्हें 19वीं सदी का भारतीय प्रमुख समाज सुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक तथा क्रांतिकारी कार्यकर्त्ता माना जाता है। इन्हें 'महात्मा फुले' व 'ज्योतिबा फुले' के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली कई सामाजिक कुरीतियों, आडंबरों, धार्मिक कर्मकांडों, पाखंडों व अंधविश्वास के खिलाफ जन जागृति फैलाकर मानवतावादी विचारधारा की स्थापना की। शूद्रों, अतिशूद्रों (अछूतों) के उद्धार, नारी शिक्षा, विधवा विवाह और शोषण के शिकार किसानों के हित के लिए ज्योतिबा ने महान योगदान दिया है। समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान करने के ये प्रबल समर्थक थे। अपना संपूर्ण जीवन उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने में, स्त्रियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में व्यतीत किया। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनी। दलित, पिछड़ों व स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में दोनों पति-पत्नी ने मिलकर काम किया। अपनी धर्मपत्नी सावित्री बाई फुले को स्वयं शिक्षा प्रदान की। स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए फुले ने 1848 में एक स्कूल खोला। लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन यह स्वयं काम करके अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले को इस योग्य (अध्यापिका) बना दिया। इसके लिए उन्हें लोगों के कड़े विरोध का भी सामना करना पड़ा परन्तु उन्होंने हार नहीं मानी। इसके बाद ज्योतिबा ने लड़कियों के लिए दो और स्कूल खोले और एक स्कूल निम्न जाति के बच्चों के लिए खोला। इसके साथ ही विधवाओं की शोचनीय दशा को देखते हुए उन्होंने विधवा पुनर्विवाह की भी शुरूआत की और 1854 में विधवाओं के लिए आश्रम भी बनाया। साथ ही उन्होंने नवजात शिशुओं के लिए भी आश्रम खोला ताकि कन्या शिशु हत्या को रोका जा सके। महात्मा फुले ने दलितों पर लगे अछूत के लांछन को धोने और उन्हें बराबरी का दर्जा दिलाने के भी प्रयत्न किए। इसी दिशा में उन्होंने दलितों को अपने घर के कुएँ को प्रयोग करने की अनुमति दे दी।

शूद्रों और महिलाओं में अंधविश्वास के कारण उत्पन्न हुई आर्थिक और सामाजिक विकलांगता को दूर करने के लिए भी उन्होंने आंदोलन चलाया। वे आजादी, समानता, मानवता, आर्थिक न्याय, शोषण रहित मूल्यों और भाईचारे पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के पक्षधर थे और जीवन पर्यन्त इस हेतु प्रयासरत रहे।

समाजोत्थान के अपने मिशन पर कार्य करते हुए ज्योतिबा ने 24 सितम्बर 1873 को अपने अनुयायियों के साथ 'सत्यशोधक समाज' नामक संस्था का निर्माण किया। वे स्वयं इसके अध्यक्ष थे और सावित्री बाई फुले महिला विभाग की प्रमुख। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य शूद्रों को उच्च जातियों के शोषण से मुक्त कराना था। उन्होंने मूर्तिपूजा का भी विरोध किया और चतुर्वर्णीय जाति व्यवस्था का भी। इस संस्था ने समाज में तर्कसंगत विचारों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सत्यशोधक समाज के आंदोलन में इसके मुखपत्र दीनबंधु प्रकाशन ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1852 में पूना पुस्तकालय की स्थापना की। महात्मा फुले ने गुलाम गिरी, किसान का कोड़ा, तृतीय रत्न, सीक्रेट राइटिंग्स ऑफ ज्योतिराव फुले और स्लेवरी जैसी प्रमुख पुस्तकें भी लिखी। 1883 में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने के महान कार्य के लिए उन्हें तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा 'स्त्री शिक्षण के आद्यजनक' गौरव प्रदान किया। उनकी समाज सेवा देखकर 1888 में उन्हें मुंबई की एक विशाल सभा में महात्मा की उपाधि दी। 28 नवम्बर, 1890 को उनका निधन हो गया।

अनुसंधान अधिकारी
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर (राज.)
मो.न.: 9929548840

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : अप्रेल, 2023

1. **महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में विभिन्न कार्मिकों की नियुक्ति हेतु विशेष चयन और सेवा की विशेष शर्तों/नियम के संबंध में।**
2. **बोर्ड परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए विभाग में कार्यरत कार्मिकों के अवकाश पर पाबंदी लगाने के आदेश जारी करने के संबंध में।**
3. **बोर्ड परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए विभाग में कार्यरत कार्मिकों के अवकाश पर पाबंदी लगाने के आदेश जारी करने के संबंध में।**

1. महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में विभिन्न कार्मिकों की नियुक्ति हेतु विशेष चयन और सेवा की विशेष शर्तों/नियम के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/म.गां./अ.मां./कैडर/2022-23 दिनांकः 03.02.2023 ● 1. समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक ● विषयः महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में विभिन्न कार्मिकों की नियुक्ति हेतु विशेष चयन और सेवा की विशेष शर्तों/नियम के संबंध में। ● प्रसंगः राजस्थान सरकार कार्मिक (क-ग्रुप-2) विभाग की अधिसूचना दिनांक 23.01.2023

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में विभिन्न कार्मिकों की नियुक्ति हेतु विशेष चयन और सेवा की विशेष शर्तों/नियम के संबंध में राजस्थान कार्मिक (क-ग्रुप-2) विभाग द्वारा जारी अधिसूचना क्रमांकः सं. एफ. 5(1)डीओपी/ए-11/2023 दिनांक 23.01.2023 की पालना सुनिश्चित की जाए।

●संलग्न : उपरोक्तानुसार

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● कार्मिक (क-ग्रुप-2) विभाग, राजस्थान सरकार ● सं. एफ. 5(1)डीओपी/ए-।।/2023 जयपुर, दिनांकः 23.01.2023 ●अधिसूचना

भारत के संविधान के अनुच्छेद 309 के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजस्थान के राज्यपाल, स्कूल शिक्षा विभाग, राजस्थान के अधीन अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में विभिन्न कार्मिकों की नियुक्ति हेतु विशेष चयन और सेवा की विशेष शर्तों के लिए प्रक्रिया अधिकथित करते हुए इसके द्वारा निम्नलिखित नियम बनाते हैं, अर्थातः-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ-

(1) इन नियमों का नाम राजस्थान सिविल सेवा (अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कार्मिकों की नियुक्ति के लिए विशेष चयन और सेवा की विशेष शर्तें) नियम, 2023 है।

(2) ये राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. विस्तार और लागू होना- ये नियम अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के विभिन्न पदों पर कार्मिकों की नियुक्ति के लिए अनुसूची-। में यथा विनिर्दिष्टानुसार लागू होंगे।

3. परिभाषाएँ- जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो, इन नियमों में-

(क) 'नियुक्ति प्राधिकारी' से निदेशक या ऐसा अन्य प्राधिकारी अभिप्रेरित है जिसे राज्य सरकार की सहमति से निदेशक द्वारा शक्तियाँ प्रत्यायोजित की जा सकें।

(ख) 'विभाग' से स्कूल शिक्षा विभाग, राजस्थान अभिप्रेत है;

(ग) 'निदेशक' से निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर अभिप्रेत है;

(घ) 'अंग्रेजी माध्यम विद्यालय' से महात्मा गाँधी राजकीय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय, स्वामी विवेकानंद राजकीय आदर्श विद्यालय (एसवीजीएमएस) और समस्त अन्य राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय अभिप्रेत हैं;

(ङ) 'सरकार' से राजस्थान सरकार अभिप्रेत है;

(च) 'कार्मिक' से अनुसूची-। में निर्दिष्ट पदों पर नियुक्त किया गया कोई कार्मिक अभिप्रेत है;

(छ) 'चयन समिति' से नियम 9 में निर्दिष्ट समिति अभिप्रेत है;

(ज) 'अनुसूची' से इन नियमों से संलग्न अनुसूची अभिप्रेत है;

(झ) 'राज्य' से राजस्थान राज्य अभिप्रेत है; और

(ञ) वर्ष से वित्तीय वर्ष अभिप्रेत है।

4. निर्वाचन- जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, राजस्थान साधारण खण्ड अधिनियम, 1955 (1955 का अधिनियम सं. 8) इन नियमों के निर्वाचन के लिए उसी प्रकार लागू होगा जिस प्रकार वह किसी राजस्थान अधिनियम के निर्वचन के लिए लागू होता है।

5. सेवा का गठन, स्वरूप और उसमें पदों की संख्या-

(1) अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में सम्मिलित पदों का स्वरूप ऐसा होगा जो अनुसूची-। के स्तम्भ 2 में विनिर्दिष्ट है।

(2) प्रत्येक अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में पदों की संख्या ऐसी होगी जो सरकार द्वारा समय-समय पर अवधारित की जाए:

परन्तु सरकार

(क) आवश्यक समझे जाने पर किसी भी स्थायी या अस्थायी पद का समय-समय पर सृजन कर सकेगी, और

(ख) किसी व्यक्ति को किसी भी प्रतिकर का हकदार बनाए बिना किन्हीं स्थायी या अस्थायी पदों को समय-समय पर खाली या प्रास्थगित रख सकेगी या समाप्त कर सकेगी।

6. रिक्तियों का अवधारण- वर्ष के दौरान या जैसे और जब भी ऐसी आकस्मिकता उत्पन्न हो, नियुक्ति प्राधिकारी प्रत्येक जिले के अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में भरी जाने वाली प्रत्याशित रिक्तियों की संख्या, प्रत्येक वर्ष पहली अप्रैल को अवधारित करेगा।

7. चयन का स्रोत- इन नियमों के प्रारम्भ के पश्चात्, अनुसूची-। के स्तम्भ संख्यांक 2 में यथाविनिर्दिष्ट पदों पर नियुक्ति के लिए चयन, उस जिले को अधिमानता देते हुए जिसमें रिक्तियों को भरा जाना है के,

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

अनुसूची–। के स्तम्भ संख्यांक 3 में उल्लिखित विभाग के, पात्र कार्मिकों में से चयन समिति की सिफारिश पर किया जाएगा।

8. चयन के लिए पात्रता– अनुसूची–। में विनिर्दिष्ट पदों पर नियुक्ति हेतु विचार किये जाने के लिए केवल ऐसे व्यक्ति ही पात्र होंगे जो, ऐसे जिले को अधिमानता देते हुए जिसमें रिक्तियों को भरा जाना है, के विभाग के पदधारी हैं और अनुसूची–। में विनिर्दिष्ट पदों पर अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पदस्थापन/नियुक्ति के लिए पात्र हैं।

9. चयन समिति– अनुसूची–। में प्रगणित समस्त पदों पर उपयुक्त पात्र अभ्यर्थियों का पद–वार चयन, निम्नलिखित राज्य स्तरीय चयन समिति, रेंज स्तरीय चयन समिति, यथास्थिति, जिला स्तरीय चयन समिति की सिफारिश पर किया जाएगा।

क. राज्य स्तरीय चयन समिति– अनुसूची–। की क्रम संख्या 1, 2 और 3 पर उल्लिखित पदों पर चयन के लिए, राज्य स्तरीय चयन समिति निम्नलिखित से मिलकर गठित होगी, अर्थात्–

(i)	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	चेयरपर्सन
(ii)	प्रशासनिक विभाग द्वारा नाम निर्दिष्ट, उप–सचिव से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(iii)	राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर द्वारा नामनिर्दिष्ट, जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(iv)	निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा नामनिर्दिष्ट, जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(v)	राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर द्वारा नामनिर्दिष्ट, उपायुक्त से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(vi)	उप निदेशक (एमजीजीएस), निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	सदस्य –सचिव

राज्य स्तरीय चयन समिति में के किसी सदस्य की अनुपलब्धता की दशा में, पूर्ण समिति के गठन के लिए निदेशक द्वारा किसी प्रतिस्थानी अधीनस्थ अधिकारी को नामनिर्दिष्ट किया जा सकेगा।

ख. रेंज स्तरीय चयन समिति– अनुसूची–। की क्रम संख्या 4 से 9 पर उल्लिखित पदों पर चयन के लिए रेंज स्तरीय चयन समिति निम्नलिखित से मिलकर गठित होगी, अर्थात–

(i)	संयुक्त निदेशक, संबंधित रेंज की स्कूल शिक्षा	चेयरपर्सन
(ii)	प्रशासनिक विभाग द्वारा नामनिर्दिष्ट, जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(iii)	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा नामनिर्दिष्ट, जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(iv)	संयुक्त निदेशक द्वारा नामनिर्दिष्ट, रेंज के किसी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय का प्रधानाचार्य	सदस्य
(v)	निदेशक, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद्, जयपुर द्वारा नामनिर्दिष्ट, प्रधानाचार्य से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(vi)	संबंधित रेंज की स्कूल शिक्षा का उप निदेशक (एमजीजीएस), संयुक्त निदेशक कार्यालय	सदस्य –सचिव

रेंज स्तरीय चयन समिति में के चेयरपर्सन/सदस्य की अनुपलब्धता की दशा में या यदि अतिरिक्त प्रभार धारित करने वाले अधिकारी के पास बहु–समनुदेशित कार्य हो तो पूर्ण समिति के गठन के लिए निदेशक द्वारा किसी प्रतिस्थानी के रूप में उससे अधीनस्थ किसी अधिकारी को नामनिर्दिष्ट किया जा सकेगा।

ग. जिला स्तरीय चयन समिति– अनुसूची–। की क्रम संख्या 10 से 17 तक, पर उल्लिखित पदों पर चयन के लिए जिला स्तरीय चयन समिति निम्नलिखित से मिलकर गठित होगी, अर्थातः

(i)	संबंधित जिले का मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	चेयरपर्सन
(ii)	प्रशासनिक विभाग द्वारा नामनिर्दिष्ट, जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) से अनिम्न रैंक का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(iii)	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर का एक प्रतिनिधि जो जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) से अनिम्न रैंक का हो	सदस्य
(iv)	संबंधित जिले के जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान का प्रधानाचार्य	सदस्य
(v)	चेयरपर्सन द्वारा नामनिर्दिष्ट, जिला मुख्यालयों पर स्थित महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय का प्रधानाचार्य	सदस्य
(vi)	संबंधित जिले का जिला माध्यमिक शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)	सदस्य–सचिव

जिला स्तरीय चयन समिति में के चेयरपर्सन/सदस्य की अनुपलब्धता की दशा में या यदि अतिरिक्त प्रभार धारित करने वाले अधिकारी के पास बहु–समनुदेशित कार्य हो तो पूर्ण समिति के गठन के लिए आवश्यकतानुसार किसी संबंधित रेंज के संयुक्त निदेशक द्वारा कोई अधीनस्थ अधिकारी नामनिर्दिष्ट किया जा सकेगा।

10. चयन के लिए मानदण्ड– व्यक्तित्व, चरित्र, सेवा का पूर्व अभिलेख और संबंधित सेवाओं में पूर्वानुभव या चयन का अन्य कोई मानदण्ड अर्थात अंग्रेजी भाषा संप्रेषण कौशल और अपने विषय को अंग्रेजी माध्यम में अच्छी तरह से अध्यापन कराने में प्रवीणता या जो भी समिति द्वारा समुचित समझा जाए, को ध्यान में रखते हुए संबंधित चयन समिति द्वारा, साक्षात्कार के पश्चात चयन किया जाएगा। निदेशक, अत्यावश्यकता के अनुसार अग्रिम विस्तृत अनुदेश बनाने, संशोधित करने और जारी करने के लिए सशक्त होगा।

11. चयन के लिए प्रक्रिया

(1) जैसे ही यह विनिश्चित किया जाये कि अनुसूची–। के स्तम्भ संख्यांक 2 में यथाविनिर्दिष्ट रिक्त पदों की कतिपय संख्या को भरने के लिए अनुसूची–। के स्तम्भ संख्यांक 3 में उल्लिखित पात्र अभ्यर्थियों में से चयन किया जाना है तो निदेशक या इस प्रयोजन के लिए प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी, समस्त पात्र अभ्यर्थियों से नियत तारीख तक ऐसी तरह से, जो वह समुचित समझे, आवेदन आमंत्रित करेगा।

(2) पात्र अभ्यर्थी, निदेशक द्वारा यथा विनिश्चित प्रक्रिया के अनुसार

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा यथा विज्ञापित पदों के लिए आवेदन कर सकेंगे।

(3) अभ्यर्थी विज्ञापित पदों/रिक्तियों पर पदस्थापन के लिए इतने विकल्प उल्लिखित कर सकेंगे जितने तत्समय विनिश्चित किए जाए।

(4) प्राप्त आवेदनों की छानबीन के पश्चात् लम्बित विभागीय जाँचों, अभियोजन प्रतिवेदनों, अन्य सेवा अभिलेखों या अन्य कोई सूचना जो समुचित समझी जाए, ईप्सित की जा सकेगी। ऐसी सूचना पर सम्यक विचार किए जाने के पश्चात, नियुक्ति प्राधिकारी का विनिश्चय अंतिम होगा।

(5) नियुक्ति प्राधिकारी, पात्र अभ्यर्थियों को उनके पद/विषयों के अनुसार साक्षात्कार के लिए अनुसूची जारी करेगा। अभ्यर्थियों का चयन साक्षात्कार में प्रदर्शन और निदेशक द्वारा यथा विहित मानकों के अनुसार तैयार योग्यता सूची के आधार पर किए जाएँगे। अभ्यर्थियों का चयन, संभावित रूप से भरी जाने वाली रिक्तियों की संख्या के समान उनकी उपयुक्तता के अनुसार किया जाएगा और तदनुसार उपयुक्त अभ्यर्थियों के नामों की सूची तैयार की जाएगी:

परन्तु चयन समिति, यदि उपयुक्त व्यक्ति उपलब्ध हो, तो अधिक अभ्यर्थियों को आरक्षित सूची पर रख सकेगी जिनकी संख्या निर्धारित रिक्तियों की 50% से अधिक नहीं होगी। ऐसे अभ्यर्थियों के नाम पदस्थापन के लिए विचार में लिए जा सकेंगे जब तक कि नयी चयन प्रक्रिया प्रारम्भ नहीं हो जाती।

12. चयन के पश्चात पदस्थापन– चयनित अभ्यर्थियों की सूची, चयन समिति द्वारा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के लिए नामनिर्दिष्ट राज्य स्तरीय नोडल अधिकारी को उपलब्ध करायी जाएगी। चयन सूची सहित समस्त चयनित अभ्यर्थियों और गैर-चयनित अभ्यर्थियों के अभिलेख, सदस्य-सचिव द्वारा चयन समिति को भेजे जाएँगे। निदेशक के अनुमोदन के पश्चात चयन सूची राज्य स्तरीय नोडल अधिकारी द्वारा नियुक्ति प्राधिकारी को पदस्थापन के लिए उपलब्ध करायी जाएगी। चयनित अभ्यर्थियों के पदस्थापन आदेश नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा प्राप्त चयन सूची के अनुसार जारी किए जाएँगे।

13. प्रतिवर्तन– सामान्यतः मध्यवर्ती सत्र में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में चयन के पश्चात पदस्थापित कार्मिक का प्रतिवर्तन हिन्दी माध्यम विद्यालयों में स्वीकार्य नहीं होगा। प्रतिवर्तन के लिए प्रत्येक वर्ष आवेदन, नयी चयन प्रक्रिया प्रारम्भ होने से पूर्व निदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट समय में लिए जाएँगे। ऐसे प्रतिवर्तन के कारण होने वाली रिक्तियाँ भावी रिक्तियों के रूप में आगामी चयन प्रक्रिया में सम्मिलित की जाएगी। ऐसे प्रतिवर्तन के लिए इच्छुक कार्मिक, नयी चयन प्रक्रिया के पूर्ण होने पर प्रतिस्थापित कार्मिक के पदग्रहण के पश्चात पदस्थापन के लिए पूर्व नियुक्ति प्राधिकारी को सुपुर्द किया जाएगा। निदेशक, आपवादिक परिस्थितियों में सम्यक् अभिलिखित आधारों पर किसी भी समय प्रतिवर्तन अनुज्ञात कर सकेगा।

14. सेवा की अन्य शर्तें–

(1) सामान्यतः अनुसूची-। में प्रगणित पद पर चयन के पश्चात् कार्मिक को एक वर्ष की किसी कालावधि के लिए पदस्थापित किया जाएगा जो प्रदत्त सेवाओं के प्रदर्शन के पुनर्विलोकन पश्चात निदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट प्रक्रिया द्वारा बढ़ायी जानने योग्य होगी। नियुक्ति प्राधिकारी का किसी कार्मिक को, पूर्वतर नियुक्ति प्राधिकारी के कार्यालय के लिए ऐसी सेवावधि के पूर्ण होने से पूर्व, बिना कोई कारण दिए, निर्मुक्त करने का अधिकार होगा। निदेशक से भिन्न नियुक्ति प्राधिकारी ऐसी कार्रवाई करने के पूर्व निदेशक से अनुमोदन प्राप्त करेगा।

(2) नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में चयन के पश्चात पदस्थापित किए गए समस्त कार्मिकों के प्रदर्शन का वार्षिक पुनर्विलोकन, निदेशक द्वारा समय-समय पर विनिर्दिष्ट रीति और प्रक्रिया के अनुसार किया जाएगा।

(3) जैसे ही, अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में चयन के पश्चात पदस्थापित कार्मिक को मूल संवर्ग में किसी उच्चतर पद पर पदोन्नत किया जाता है उसे पदोन्नति पर पदस्थापन के लिए प्रतिवर्तित समझा जाएगा। अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पदस्थापन के लिए वांछनीय अहर्ताएँ रखने की दशा में नियुक्ति प्राधिकारी पदोन्नत कार्मिक का किसी भी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में रिक्तियों और अत्यावश्यकता के अनुसार पदस्थापन पर प्रतिधारण का विनिश्चय कर सकेगा।

(4) इन नियमों में यथा उपबंधित के सिवाय अनुसूची-। के स्तम्भ 2 में यथा विनिर्दिष्ट पद की अन्य सेवा शर्तें राज्य सरकार के कर्मचारियों पर लागू भारत के संविधान के अनुच्छेद 309 के परन्तुक द्वारा बनाए गए अन्य नियमों द्वारा विनियमित की जाएगी।

(5) अनुसूची-।। में यथा विनिर्दिष्ट दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में पदस्थापित किए जाने वाले कार्मिक को अत्यावश्यकता के अनुसार किसी प्रोत्साहन के रूप में अतिरिक्त भत्ता अनुज्ञेय हो सकेगा, यदि, पर्याप्त संख्या में अभ्यर्थी, राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर यथा विनिर्दिष्ट सबंधित पद के लिए आवेदन नहीं करते हैं।

(6) अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कार्यरत कार्मिक को उनके पद/विषय के अनुसार सम्पूर्ण राज्य के किसी भी अन्य अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पदस्थापित/स्थानान्तरित किया जा सकेगा। संबंधित अभ्यर्थी की वास्तविक वरिष्ठता, पदस्थापन में उक्त परिवर्तन से अप्रभावित रहेगा।

(7) ऐसे पदों पर कार्यरत कार्मिकों के मामले में जिसकी वरिष्ठता यहाँ अन्य रेंज/जिले के अधिकार क्षेत्र के अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में चयन के पश्चात भी रेंज/जिला स्तर पर ही बनी हुई है सबन्धित अभ्यर्थी की वरिष्ठता उसके मूल रेंज/जिले में संरक्षित की जाएगी और वे अग्रिम पदोन्नति के लिए मूल रेंज/जिले में धारणाधिकार का हकदार होंगे।

(8) ऐसे पदों के मामले में जहाँ वरिष्ठता रेंज/जिला स्तर पर संधारित है और परिवीक्षाधीन प्रशिक्षणार्थी/परिवीक्षाधीन व्यक्ति अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में चयन के पश्चात अन्य रेंज/जिले में पदस्थापित हैं वहाँ परिवीक्षाकाल के सफलतापूर्वक समाप्त होने के पश्चात स्थायीकरण, उस मूल रेंज/जिले, जहाँ अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पदस्थापित होने से पूर्व उसकी वरिष्ठता संधारित है, के पूर्व नियुक्ति प्राधिकारी के द्वारा किया जाएगा।

(9) राजस्थान स्वैच्छिक ग्रामीण सेवा नियम, 2010 के पदधारी नगरीय निगम क्षेत्रों में पदस्थापन के लिए पात्र नहीं होंगे।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

15. रिक्त पदों को भरने के लिए या आपवादिक मामलों में पदस्थापन की शक्ति– इन नियमों में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, निदेशक, सक्षम प्राधिकारी को पदस्थापित अथवा अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में के स्कूल शिक्षा विभाग में नियमित रूप से नियुक्त किए गए किसी कार्मिक को लिखित में अभिलिखित किए जाने वाले कारणों के लिए, रिक्तियाँ भरने हेतु अथवा आपवादिक मामलों में पदस्थापित करने के लिए अनुदेशित कर सकेगा। विभाग के अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में रिक्तियों या भावी रिक्तियों को भरने हेतु राज्य सरकार इन विद्यालयों में सेवा की न्यूनतम एक वर्ष की अवधि के किसी अनिवार्य प्रावधान को अधिरोपित कर सकेगी।

16. शंकाओं का निराकरण– यदि इन नियमों के लागू होने, निर्वचन और व्याप्ति के बारे में कोई शंका उत्पन्न हो तो मामला सरकार के कार्मिक विभाग को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

17. निरसन और व्यावृत्ति– इन नियमों के अंतर्गत आने वाले मामलों से संबंधित तथा इन नियमों के प्रारंभ के ठीक पूर्व प्रवृत्त समस्त नियम आदेश इसके द्वारा निरसित किए जाते हैं :

परन्तु इस प्रकार अतिष्ठित नियमों और आदेशों के अधीन की गयी कोई भी कार्रवाई इन नियमों के उपबंधों के अधीन की गयी समझी जाएगी।

अनुसूची–I

(नियम–2, 5, 7, 8, 9, 11 और 14 देखें)

क्र.सं.	पद का नाम	पात्रता
1.	प्रधानाचार्य	प्रधानाचार्य, सीनियर सैकण्डरी विद्यालय या समतुल्य पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
2.	उप–प्रधानाचार्य	प्रधानाचार्य, सीनियर सैकण्डरी विद्यालय या समतुल्य पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
3.	प्राध्यापक (विभिन्न विषय)	सुसंगत विषय में प्राध्यापक या समतुल्य पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
4.	वरिष्ठ अध्यापक (विभिन्न विषय)	सुसंगत विषय में वरिष्ठ अध्यापक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
5.	वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक	वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
6.	वरिष्ठ कम्प्यूटर अनुदेशक	वरिष्ठ कम्प्यूटर अनुदेशक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
7.	पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड–II	पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड–II के पद कार्यरत कोई व्यक्ति
8.	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
9.	वरिष्ठ सहायक	वरिष्ठ सहायक के पद कार्यरत कोई व्यक्ति और टंकण एवं कम्प्यूटर कार्य के व्यवहारिक ज्ञान में प्रवीण
10.	अध्यापक लेवल–2 (विभिन्न विषय)	सुसंगत विषय में अध्यापक लेवल–2 के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
11.	अध्यापक लेवल–1	अध्यापक लेवल–1 के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
12.	शारीरिक शिक्षा अध्यापक	शारीरिक शिक्षा अध्यापक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
13.	बेसिक कम्प्यूटर अनुदेशक	बेसिक कम्प्यूटर अनुदेशक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
14.	पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड–III	पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड–III के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
15.	प्रयोगशाला सहायक	प्रयोगशाला सहायक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति
16.	कनिष्ठ सहायक	कनिष्ठ सहायक के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति और टंकण एवं कम्प्यूटर कार्य के व्यावहारिक ज्ञान में प्रवीण
17.	चपरासी	चपरासी के पद पर कार्यरत कोई व्यक्ति

टिप्पणी :

1. आवेदकों, जो अंग्रेजी भाषा सम्प्रेषण कौशल में प्रवीण तथा अंग्रेजी माध्यम से अध्यापन में दक्ष हैं, को क्रम संख्या 1 से 14 पर यथोल्लेखित अध्यापन पदों के लिए चयन में अधिमानता दी जाएगी।
2. क्रम संख्या 15 से 17 पर यथोल्लिखित गैर–अध्यापन पदों के लिए आवेदकों के चयन के लिए अंग्रेजी भाषा का व्यावहारिक ज्ञान वांछनीय होगा।

अनुसूची–II

(नियम–15(5) देखें)

क्र.सं.	जिले	विनिर्दिष्ट भौगोलिक क्षेत्र
1.	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, राजसमंद, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, जालोर, सिरोही, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, बारां, झालावाड़	1. जिला मुख्यालयों/नगर निगम/ नगर परिषद/नगरपालिका क्षेत्र से 25 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर स्थित विद्यालय और 2. राष्ट्रीय राजमार्गों/राज्य राजमार्गों से 25 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर स्थित विद्यालय

● राज्यपाल के आदेश और नाम से **(जय सिंह)** संयुक्त शासन सचिव

2. बोर्ड परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए विभाग में कार्यरत कार्मिकों के अवकाश पर पाबंदी लगाने के आदेश जारी करने के संबंध में।

● शिक्षा (ग्रुप–6) विभाग, राजस्थान सरकार ● क्रमांक : प.3(9) शिक्षा–6/2019 जयपुर दिनांक : 17.03.2023 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषय : बोर्ड परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए विभाग में कार्यरत कार्मिकों के अवकाश पर पाबंदी लगाने के आदेश जारी करने के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र में प्रकाशित खबर की प्रति संलग्न कर निर्देशानुसार लेख है कि इस वर्ष बोर्ड की उच्च माध्यमिक/वरिष्ठ उपाध्याय, उ.मा. (व्यावसायिक स्तर) की परीक्षाएँ 09 मार्च, 2023 से तथा माध्यमिक/प्रवेशिका/माध्यमिक (व्यावसायिक) स्तर की परीक्षाएँ 16 मार्च, 2023 से प्रारंभ हो रही है। बोर्ड परीक्षा, 2023 के सफल संचालन हेतु कृपया बोर्ड परीक्षा के दौरान शिक्षा विभाग के कार्मिकों के अवकाश पर पाबंदी लगाने के आदेश

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

अविलम्ब जारी कर इस विभाग को अवगत कराने का श्रम करावें।

● **(आकाश रंजन)** शासन उप सचिव

3. बोर्ड परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए विभाग में कार्यरत कार्मिकों के अवकाश पर पाबंदी लगाने के आदेश जारी करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/माध्यमिक/मॉनिटरिंग/बोर्ड/2023 दिनांकः 17.03.2023 ● विषय : बोर्ड परीक्षा के सुचारू रूप से संचालन के लिए विभाग में कार्यरत कार्मिकों के अवकाश पर पाबंदी लगाने के आदेश जारी करने के संबंध में।

शासन के पत्रांकः पं.3(9) शिक्षा-6/2019 जयपुर, दिनांकः 17.03.2023 की पालना में इस वर्ष बोर्ड की उच्च माध्यमिक/वरिष्ठ उपाध्याय, उमा(व्यावसायिक) तथा माध्यमिक/प्रवेशिका/माध्यमिक (व्यावसायिक) परीक्षा-2023 के सफल संचालन हेतु शिक्षा विभाग के अधीन समस्त कार्यालयों एवं विद्यालयों में कार्यरत कार्मिकों एवं शिक्षकों के दिनांकः 16.04.2023 तक अवकाश लेने पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाई जाती है।

अत्यंत विशिष्ट परिस्थितियों एवं अपरिहार्य कारणों से अवकाश की मांग होने पर संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक से अनुमति उपरान्त ही सक्षम अधिकारी द्वारा अवकाश स्वीकृत किया जा सकेगा।

● **(गौरव अग्रवाल)** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग

अप्रेल-2023					
रवि	30	2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

अप्रेल 2023 ● कार्य दिवस-21, रविवार-05, अवकाश-04, उत्सव-02 ● 01 अप्रेल : विद्यालय समय परिवर्तन-1. एक पारी विद्यालय-प्रातः 07:30 से दोपहर 01:00 बजे तक। 2. दो पारी विद्यालय-प्रातः 07:00 से सायं 06:00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:30 घंटे) **02 अप्रेल :** विश्व ऑटिज्म जगारूकता दिवस का आयोजन (समग्र शिक्षा)। **04 अप्रेल :** श्री महावीर जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **07 अप्रेल :** गुड-फ्राइडे (अवकाश)। **06 से 25 अप्रेल :** वार्षिक परीक्षा का आयोजन। **14 अप्रेल :** डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयन्ती-ज्ञान दिवस (अवकाश-उत्सव)। **22 अप्रेल :** ईदुल फितर (अवकाश-चन्द्र दर्शनानुसार), परशुराम जयन्ती (अवकाश)। **27 अप्रेल :** विद्यालय में आगामी सत्र हेतु प्रवेश प्रक्रिया का आरम्भ एवं नामांकन हेतु विद्यार्थियों के चिह्नीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ। **30 अप्रेल :** वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा परीक्षा परिणामों की प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को समीक्षा हेतु प्रेषित करना। सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर। संस्था प्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर सत्रपर्यन्त हुए कार्यों की समीक्षा करना एवं आगामी सत्र की विद्यालय योजना हेतु विचार-विमर्श कर निर्णय लेना तथा योजना संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना। अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM-IV) एवं SDMC/SMC की साधारण सभा का संयुक्त रूप से आयोजन एवं करणीय कार्यों के संबंध में प्रस्ताव पारित करना। **नोट :** SIQE संचालित विद्यालयों में कक्षा 5 हेतु सम्बन्धित जिले की तृतीय योगात्मक आकलन के स्थान पर प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन किया जाएगा, जिसकी तिथियां पृथक् से घोषित की जाएगी। कक्षा-1 से 4 में तृतीय योगात्मक आकलन का आयोजन उक्त मूल्यांकन से पूर्व किया जाएगा। ● प्रत्येक मंगलवार-IFA नीली गोली (कक्षा 6-12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1-5) (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार-विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन-अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें। ● DAG की पंचम बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर
प्रभाग-4, शैक्षणिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर

April - 2023

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code	S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/40pEdos		7	Class VII	https://bit.ly/40JxVQr	
2	Class II	https://bit.ly/3zcdUGj		8	Class VIII	https://bit.ly/3LXxjCp	
3	Class III	https://bit.ly/3FVgBja		9	Class IX	https://bit.ly/3LVTlFA	
4	Class IV	https://bit.ly/40o0blz		10	Class X	https://bit.ly/3lPFzcY	
5	Class V	https://bit.ly/3TOepjc		11	Class XI	https://bit.ly/3ntUsC9	
6	Class VI	https://bit.ly/3ZnGz5K		12	Class XII	https://bit.ly/3LXv6H3	

MAHATMA GANDHI GOVERNMENT SCHOOL IN RAJASTHAN

Challenge and Future

❒ Rimpa Talwar

Introduction-Governments are always committed to the development of the human resources and nurturing of youth power. They would surely give attention to student's education. If we talk about education, there are two types of education i.e. intellectual education and value based education in combined form complete the education of a child in a real manner as it actually trains the mind and heart of a child. Few decades ago in India English was discarded by all of us as we were overruled for the 200 year under reign of England.

After our golden independence, we could put English language away from our offices, courts and universities. We could not make any single language to be our common language for the whole nation. Today we have increased use of the English language in every field of life. If we see globally we find that English has become a quite essential language of the world, no country, no MNC University, can refrain themselves from the use of English language.

Why has English become an essential language for Indians?

1. For getting jobs globally it's compulsory to learn English.
2. English is playing a vital role in trade and commerce.
3. English is a literacy language and works as a window to the world.
4. English is a global language so it's easier to travel around the world than ever before. It is also easier to communicate with people in other countries because they can speak English.
5. English is the lingua franca of the world and it's also a very useful tool for making you stand out from the crowd.
6. Apart from being an official language and global language, English is also considered as the language of the internet.
7. English is helpful in online studies of science and technology as well.
8. English is used as an associate official language.

So the decision of setting up an English medium school in the government sector itself could be both a bold and thoughtful step. Thoughtful- as there is a big demand from the public and their response towards the English medium schools these days and Bold- because it is felt that such a decision to promote English would be misinterpreted by some quarters.

Concept of Mahatma Gandhi government schools in Rajasthan

"Mahatma Gandhi government schools" in Rajasthan is a visionary step of Rajasthan government. Since independence the government were running Hindi medium schools only but the growing demand of English compelled government in India to run English medium schools under there entrepreneurship.

Mahatma Gandhi English medium schools 1st established in 2019 by honourable Chief minister of Rajasthan Mr. Ashok Gehlot and state minister of Education Mr. Govind Singh Dotasra. They took a decision to run English medium schools in Rajasthan on the name of Mahatma Gandhi. To commemorate the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi 33 Mahatma Gandhi English medium schools came into existence from first July 2019 in 33 districts of Rajasthan these schools received three times more applications then the number of seats available.

In 2021 where the number of seats stood at 18093 a whopping number of 60000 applications mostly for class 1st were received. Mahatma Gandhi government school brightened the face of poor and middle class families who were unable to provide English medium education to their kids due to heavy fee structure in private schools. The government opened 167 more Mahatma Gandhi schools at block level in 2020-21 to upgrade the level of education and interest of people in the school. Again it was a remarkable performance in providing English medium education in times of corona pandemic either it is online or offline even these schools were providing online education to kids by live class through zoom or other apps.

Also the principal and staff who were qualified in English medium and always dream to work in English medium school. It was a dream that came true for them and they lifted no stone unturned to make their dream project and government flagship project successful. Considering the public enthusiasm the state government has announced the opening of one school each in villages/ towns with a population of 5000 or more in the next 2 years.

"an Introduction Of Mahatma Gandhi Government School Sri Ganganagar"

At initial state, running Hindi medium school has been transformed into English medium school from classes 1 to 8 while classes 9th to 12th were running in Hindi medium. In the next 4 year the whole school (classes first to twelfth) will be transformed into an English medium senior secondary school. In the process of conversion ,the old primary staff and senior teachers were replaced with new staff which was

Rajasthan Education Department

selected on interview basis by a state level panel as the expectations of the new format of this school required multifold tasks and changes.

Whereas I think these tasks and challenges were common for all Mahatma Gandhi government English medium schools, all staff jointly worked to fulfill these requirements.

"key Features Of Mggs Sri Ganganagar And It's Achievements"

1. Quality education in a child friendly atmosphere.
2. Free textbooks as well as other English medium books like general knowledge, moral education, drawing, workbooks provided by the ***BHAMASHAHAS*** to students as they were interested to learn them.
3. Regular conduction of co-curricular activities even in the time of corona pandemic by online competitions.
4. Focus on morning assembly to motivate kids to remove their stage fear and give a chance to each student of every class 1-12.
5. Most disciplined school in the city which was earlier famous as **"school For Backward And Slum Living People"** and nobody from the general category wanted to take admission in that school.
6. Outstanding performance of kids within 2 years in board results, best school awarded (6 students scored 90% in 10th board examination).
7. Participation of students in science Olympiad, Maths Olympiad, NMMS district level, state level various competitions and won many prizes as teachers were taking extra interest in these aspects and for the development of kids all around.
8. Within 2 years we got infrastructure of 1 crore from BHAMASHAS. 25 lakh rupees from MLA fund, 20 lakh rupees from DMFT fund. And the school building with 26 rooms, furniture and all facilities like other private English medium schools was ready for kids.
9. Enrollment rose from 300 to 580 in two years.

"major Challenges Of Mggs Sriganganagar"

1. To construct new classrooms, furniture, labs, according to the requirement because initially we have only 4 rooms in good condition.
2. To increase enrollment in the "**slum And Educationally Backward** Area" where school was situated and nobody wanted to take admission in that area. even earlier school was running in a very indisciplined manner. Even toilets of school were being used as a public toilets
3. Old staff (lecturers) were there in school who had seen old indisciplined running school and they opposed the transformation of school into English medium. Changing disciples, their mentality, and putting a ban on their mischievous activities was a big challenge for me.
4. To have a complete and eco-friendly building in school.
5. To secure the school premises with CCTV surveillance.
6. To have a clean and hygienic atmosphere.
7. Regular conduction of co curricular activities in the school.
8. Maintaining document of school in a proper manner as we got the record in a very poor condition.
9. Management of financial resources in a channelized manner to cope up with financial needs of school.
10. To work for the up liftment of teachers, maintain discipline among them, and make them efficient to work like staff of other English medium schools of the city.
11. To maintain discipline among students as they belong to **Slum And Educationally Backward Background.** Class 9th to 12th old students who were studying in Hindi medium with old staff and from class 1 to 8 new English medium students with new English medium staff, studying in the same building and old staff were not easily accepting those changes.
12. Area in which the school was situated, was known as **"slum Area Of Sriganganagar"** people were uneducated, lacked common sense, ignorant, alcoholic and undisciplined. They didn't know the actual meaning of education and opposed the change firstly.
13. Value based education was much needed with the English medium. We have to work on the field of character building of kids, commitment towards discipline and values. We have to remove the religious discrimination from their mind and we have to maintain courtesy with craze to speak truth.

Action - Plan- For the success of any project or school an action plan must be made for various aspects and we have to work on a plan with full dedication. I think there is a major role of the principal of an English medium school in making projects successful for those who worked hard on all aspects and left no stone unturned. With their leadership and teamwork they got brilliant results.

"Inner strength comes from indomitable will "worked at that time. Very first key feature what we accepted in our action plan was a thought of Mahatma Gandhi **Be the change that you wish to see in the world** if we will change ourselves that we will be able to see the bright future of Mahatma Gandhi school as teachers play an important role in changing the society.

"future Of Mahatma Gandhi Government English Medium Schools"

Where there is a will there's a way…. For the betterment of a project the school administration had to work

Rajasthan Education Department

with cooperation of higher authority, Government and society.

(A) Academics

- We have to set some minimum criteria for admissions.
- Special efforts to make our students able to read, write, and understand English.
- Orientation program for the teachers of Mahatma Gandhi government school. We can take help from Boscon NGO, Ajim Premji foundation, Bodh Shiksha Sansthan and various other NGOs.
- We must make our school rich with environment science labs and smart classes.
- We should develop linguistics skills i.e. listening, speaking, reading and writing, (English Hindi Sanskrit) at primary level and other subjects or Indian language at secondary level.
- We should ensure ourselves at each last working day of the month that the targets of the month are complete or not.
- We should also conduct seminars for teachers regarding teaching methodology especially for primary teachers.

(B) Co-Curricular Activities

- It's very much necessary to develop value among the students studying in MGGS School and we should do this work through BAL SABHA morning assembly and Jayanti celebration etc.
- We should work for the physical, mental, social, emotional and moral development of students.
- Best learning out of waste must be taught in school ex. clay molding, stringing beads, sand play building blocks, paper folding, plantation etc should be taught in school.
- We should motivate students to take part in games, sports, debate, essay, singing, music, dancing, acting, scout, and NCC so that we can give multi talented students to society.
- We should also work on organizing science, art and craft exhibitions in school to prepare scientists and artists and craftspeople for society.

(C) Value Based Education And Meditation

- In today's Era as people are aggressive and lack of moral values which are not the quality of Indian culture.
- we should work on students at very early age and run regular meditation program, counseling sessions with the help of trained counselors for students and teachers too.

(D) INFRASTRUCTURE

- Government can give a very good boost to MGGS schools by providing infrastructure like rooms, furniture, smart classes, playground, and labs to MGGS schools.
- We should also take help from ***BHAMASHAH'S*** in society to complete the infrastructure by motivating them and let them realize that their contribution is really useful for kids and school and we are grateful to them.

(E) Administration- Gandhian thought should be followed by all administrators"

- Leadership training should be given to MGGS principal's to work in the worst circumstances as they are going to change the scenario of the education system.
- Maximum use of human resources of institutions must be taught to administrators and they should follow it.
- Development of school website use of WhatsApp Facebook YouTube and other social media platforms by school to motivate staff and kids.

(F) Discipline- Develop the habit of punctuality keeping the silence, respect, honesty, co-operation, among students and staff members.

Principal
Mggs Police Line Sriganganagar

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. सोहनलाल डागा

क्रूर कालचक्र कब स्मृति विशेष में रहने योग्य व्यक्तित्व को कब स्मृति शेष बना दे कहा नहीं जा सकता.... ऐसा ही कुछ हुआ माह मार्च में शिविरा परिवार के साथ! जब 15 मार्च, 2023 को विनम्रता की प्रतिमूर्ति सहज, सरल, सौम्य, निश्छल व्यक्तित्व के गुणों के धनी सोहनलाल डागा सहायक लेखाधिकारी शिविरा हृदयाघात के कारण अपने प्रियजनों, परिजनों को किंकर्त्तव्यविमूढ़ अवस्था में छोड़ उस दुनिया में चले गए जहाँ से कोई लौटकर नहीं आता। 26 मई, 1963 को जन्में सोहनलाल डागा की राजकीय सेवा में प्रथम नियुक्ति 1 मई 1995 को क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र रीपा में हुई थी। उन्होंने अलग-अलग कार्यालयों यथा- जन स्वा. अभि. जोधपुर, तीसरी बटालियन RAC बीकानेर सा. स्वा. केन्द्र माण्डोल नगर, जसवंतपुरा जालोर, तीसरी बटालियन RAC बीकानेर, इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना बीकानेर उपकोष अधिकारी सूरतगढ़, इंदिरा गाँधी नहर परियोजना बीकानेर, सर्व शिक्षा अभियान बीकानेर, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में पूर्ण समर्पण, कुशलता एवं कर्मठता के साथ निष्कलंक सेवाएं दी। सोहन लाल डागा के असामयिक निधन पर शिविरा परिवार उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

-संपादक

Rajasthan Education Department

रपट

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर

हैण्डबॉल एवं बास्केटबॉल मैदान का शिलान्यास

❒ अजय पाल सिंह

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर राजस्थान का एकमात्र आवासीय विशिष्ट खेलकूद विद्यालय है। इस विद्यालय में 12 खेलों में 244 छात्र खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। खेलों एवं खिलाड़ियों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा को मद्देनजर रखते हुए विभाग द्वारा हैण्डबॉल एवं बास्केटबॉल खेलों के सिन्थेटिक कोर्ट के लिए 60.23 लाख रुपये का बजट आंवटन किया गया है। हैण्डबॉल एवं बास्केटबॉल मैदान के निर्माण का कार्य आरंभ करने हेतु दिनांक 19.03.2023 को प्रातः 11:15 बजे शिलान्यास का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें अतिथि निम्नानुसार रहे।

1. मुख्य अतिथिः– माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बुलाकी दास कल्ला शिक्षा विभाग (प्रा. एवं मा.), संस्कृत शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व, पंचायती राज के अधीनस्थ, प्राथमिक शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार)

2. अध्यक्ष– श्रीमान गौरव अग्रवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

3. विशिष्ट अतिथिः– श्रीमान संजय धवन, वित्तीय सलाहकार माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

शिलान्यास कार्यक्रम माननीय डॉ. बुलाकी दास कल्ला के करकमलों द्वारा प्रातः 11:15 बजे हैण्डबॉल एवं बास्केटबॉल कोर्ट पर सम्पन्न किया गया जिसमें निदेशक श्री गौरव अग्रवाल, वित्तीय सलाहकार श्री संजय धवन, निदेशालय स्टॉफ ऑफिसर डॉ. अरूण कुमार शर्मा, सहायक निदेशक श्री विक्रम सिंह चौहान, निदेशालय खेल प्रभारी श्री अशोक कुमार व्यास, शाला प्रधानाचार्य श्री अजयपाल सिंह शेखावत, आवासीय गृहपति श्री मोहनलाल जीनगर एवं समस्त स्कूल स्टाफ उपस्थित रहे।

माननीय मंत्री महोदय ने हैण्डबॉल व बास्केटबॉल खेल मैदानों का निरीक्षण किया एवं खेल कौशल व मैदान के विषय में जानकारी प्राप्त की। जिम्नेजियम हॉल एवं कुश्ती हॉल का निरीक्षण किया गया। जिम्नेजियम हॉल में लगे अत्याधुनिक उपकरणों के विषय में जानकारी ली एवं माननीय मंत्री महोदय ने स्वयं उपकरणों पर अभ्यास किया। कुश्ती हॉल में कुश्ती खेल कौशल पर चर्चा की एवं विद्यालय के छात्र खिलाड़ियों द्वारा कुश्ती खेल का प्रदर्शन किया गया। खिलाड़ियों के अभ्यास समय, आवास, व्यवस्था एवं भोजन व्यवस्था की जानकारी ली गई। खिलाड़ी छात्रों के खुराक भत्ते में बढ़ोतरी का आश्वासन दिया। तत्पश्चात विद्यालय सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम माँ सरस्वती के छायाचित्र पर मुख्य अतिथि द्वारा माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया। तत्पश्चात विद्यालय स्टाफ द्वारा अतिथियों का माल्यार्पण व साफा पहनाकर स्वागत किया गया।

प्रधानाचार्य श्री अजयपाल सिंह शेखावत ने विद्यालय का संक्षिप्त परिचय देते हुए खेलों की उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी दी। माननीय मंत्री महोदय ने उद्बोधन में कहा कि राज्य सरकार द्वारा खेलों में अन्तर्राष्ट्रीय मानकों की खेल सुविधाएँ उपलब्ध करवायी जा रही है। खेल प्रशिक्षकों का दायित्व है कि वे खिलाड़ियों को बेहतर प्रशिक्षण दे जिससे खिलाड़ी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल व राज्य का नाम रोशन कर सके। उन्होंने बताया कि विद्यालय में 54 लाख रुपये की लागत से क्रिकेट मैदान तथा 8 करोड़ 61 लाख रुपये की लागत से सिंथेटिक एथलेटिक ट्रेक तैयार होगा। उन्होंने यहाँ साइक्लिंग, कुश्ती और तीरंदाजी की संभावनाएँ तलाशने के निर्देश दिए। साथ ही कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्विमिंग पूल बनाने के प्रस्ताव भी दिए जाएँ। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा खेलों से जुड़ी सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही है। ऐसे में युवाओं का दायित्व है कि वे अपना लक्ष्य निर्धारित करते हुए अथक परिश्रम करें जिससे उन्हें बेहतर सफलता प्राप्त हो सके। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार द्वारा खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं।

निदेशक महोदय श्री गौरव अग्रवाल ने बताया कि क्रिकेट मैदान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का तैयार होगा जिसमें घास के लिए पानी की स्वचालित व्यवस्था रहेगी। आवासीय गृहपति श्री मोहन लाल जीनगर ने अतिथियों को धन्यवाद देकर कार्यक्रम का समापन किया।

प्रधानाचार्य
सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर
मो.नं.: 9828550552

धरा की कोख उजड़ रही..

❒ सत्यनारायण नागोरी

कैसे बचेगा भू का आँचल,
ग्लोबल वार्मिंग आ रही।
प्लास्टिक कचरा ढेर लगा,
कहाँ माटी में जान रही।।

धन के लालच में बिल्डर खेतों को खा रहे हैं। विकास की अंधी दौड़ पहाड़ों को नंगा कर रही है। यदि संसार में पेड़-पौधे ना रहे तो यह धरती कितनी कुरूप हो जाएगी? वनों के नष्ट होने पर मनुष्य का जीवन भी संकट में पड़ जाएगा। प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने से हर साल ग्लोबल वार्मिंग से तबाही का मंजर हो रहा है।

गाँवों के खेत-खलिहान, अमराइयाँ, उपवन आदि मिटते जा रहे हैं। जगह-जगह ड्रिल करके मानव ने धरा की कोख को छलनी कर दिया, जिससे जल स्तर बिल्कुल कम हो गया है। जंगल की जमीं का स्थान विशालकाय कल-कारखानें, गगनचुंबी होटलें, नए-नए उपनगर लेते जा रहे हैं। चारों ओर सीमेंट और कंकरीट के जंगल विनाश की निशानी है। मनुष्य खुद की उन्नति के लिए धरा को नुकसान पहुँचा रहा है। 'नेचर' पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार पिछले 320 वर्षों में धरती पर मौजूद वेटलैंड (आर्द्र भूमि) का 21 प्रतिशत हिस्सा समाप्त हो गया है। यह नुकसान 34 लाख वर्ग किमी यानी लगभग भारत के क्षेत्रफल से भी कुछ ज्यादा है।

हर साल, इस पृथ्वी से फुटबॉल के 27 मैदानों के बराबर जंगल बर्बाद हो रहे हैं। ये दुनिया की 80 प्रतिशत भू जैव-विविधता का घर है। धीरे-धीरे पृथ्वी जंगलों का एक करोड़ 87 लाख एकड़ हिस्सा खो रही है। भारत भी हर साल 200 वर्ग किलोमीटर के बराबर जंगल खो रहा है। असल में वर्तमान की यह स्थिति मानव के विलगाव की परिणति है। अनदेखी से हो रही तबाही चिंता का विषय है। दरअसल, हमारे यहाँ विकास का मॉडल ही प्राकृतिक साधनों का बेहिसाब दोहन बनता जा रहा है। पूंजीपतियों का गठजोड़ जन आंदोलनों से बेपरवाह हो पर्यावरणीय खतरे की चेतावनियों को नजरअंदाज करता है। लेकिन धरा की चिंता कहाँ है? देश में गर्मी सारे रिकॉर्ड तोड़ रही है।

पृथ्वी दिवस याद दिला रहा है कि जंगल-पहाड़ों व नदी-नालों में मानव जनित बदलाव की भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है, इस बात पर विचार करना जरूरी है।

धरा की कोख उजड़ रही,
करनी इसकी रखवाली है।
मत काटो पेड़-बंधु धरा,
हरियाली से खुशहाली है।।

व्याख्याता (सेवानिवृत्त)
केलवाड़ा, राजसमंद (राज.)-313325
मो.नं.: 9610334431

Rajasthan Education Department

हिन्दी बाल-पत्रिकाओं एवं हिन्दी समाचार-पत्रों में बच्चों की दुनिया

❐ डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

बाल पत्रिकाओं का साहित्य एवं चिंतन जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। जिन पत्रिकाओं में बाल केन्द्रित साहित्य प्रकाशित होता है, वे बाल-पत्रिकाओं की श्रेणी में आती है। बाल-पत्रिकाओं का प्रकाशन मुख्यतः तीन बिंदुओं पर आधारित होता है- मनोरंजन, शिक्षा और बच्चों की भावना को प्रेषित करना। बाल-पत्रिकाओं में जो कुछ भी छपता है, वह इन्हीं तीन दृष्टिकोणों से आप्लावित रहता है। बाल साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहीं है हालांकि यह मानने वालों की कमी नहीं है, और ऐसे लोग भी हैं जो मानते है कि बाल-पत्रिकाओं का उद्देश्य मनोरंजन होना चाहिए। प्रत्येक बच्चा अपने परिवार, समाज, कक्षा तथा अन्य विविध प्रकार की शिक्षा से घिरा होता है इसलिए उसके लिए ऐसे साहित्य की अपेक्षा की जाती है जो उसके लिए आनंददायक हो। दूसरा वर्ग ऐसा भी है जो बाल-पत्रिकाओं का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा को भी मानता है। इस वर्गानुसार बच्चों का मनोरंजन आवश्यक है लेकिन बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना भी उतना ही जरूरी है ताकि वह बच्चा अपने समाजानुकूल बन सके। इस तरह मनोरंजन के साथ-साथ परोक्ष रूप से वह मूल्यों को आत्मसात कर सकेगा तथा उनसे अभिप्रेरणा भी ग्रहण करेगा। इसलिए यह वर्ग मानता है कि बाल-पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य शिक्षा प्रदान करना है, मनोरंजन तो उस पर लिपटा हुआ मात्र आकर्षक आवरण है। एक तीसरा वर्ग भी है जो बच्चों की पत्रिकाओं के उद्देश्य का निर्धारण बाल भावनाओं के इर्द-गिर्द करना चाहता है। इनके अनुसार बच्चों के लिए मनोरंजन और शिक्षा दोनों जरूरी है, लेकिन फिर भी बाल-पत्रिकाएँ बच्चों की रुचि, परिवेश और भावना के अनुरूप होनी चाहिए और यही सबसे ज्यादा जरूरी भी है। वर्तमान समय के बच्चों का परिवेश पहले से भिन्न है। वैज्ञानिक युग में बड़े हो रहे हैं, लोकतांत्रिक समाज में जी रहे हैं और उनकी कोमल बाल-मनोभावनाएँ सबको एक नजरिए से देखना चाहती है। हमें उनके इस नजरिए को उड़ान देने की आवश्यकता है। हिंदी समाचार पत्रों व बाल-पत्रिकाओं में बच्चों की दुनिया की एक समृद्ध परंपरा रही है। आज बाल साहित्य की विकास यात्रा एक शताब्दी पार कर चुकी है। विधिवत रूप में बाल साहित्य की शुरुआत भारतेंदु युग में होती है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र की प्रेरणा से बच्चों की पहली पत्रिका बालदर्पण का प्रकाशन सन् 1882 में प्रारंभ हुआ। भारतेंदु ने स्वयं बालाबोधिनी नाम से महिलाओं के लिए पत्रिका निकाली, जिसमें बालिकाओं के लिए सिलाई-कढ़ाई, चूल्हा-चौका तथा अन्य सामाजिक विषयों पर रोचक सामग्री प्रकाशित की गई। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने कुछ पहेलियाँ तथा मुकरियाँ भी लिखी है। उन्होंने अपने नाटकों में कहीं-कहीं सरल भाषा में कई रोचक पदों की रचना भी की है, जिनसे बच्चों का भरपूर मनोरंजन होता है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र के समकालीन श्रीधर पाठक ने बच्चों के लिए बिल्ली, कुत्ता, कोयल, तोता, मैना जैसे सुपरिचित विषयों पर मनोहारी बाल कविताएँ लिखी है। इन कविताओं का संकलन मनोविनोद नामक पुस्तक में किया गया है। हिन्दी पत्र पत्रिकाओं में बच्चों की दुनिया का इतिहास पुराना है। आज समाज में बच्चों की पृथक-पृथक महत्त्वाकांक्षाओं पर काफी चर्चा हो रही है अपने भविष्य को लेकर बच्चे भी संजीदा है, कॅरियर से लेकर कलात्मक रुचि में अलग-अलग तरह की महत्त्वाकांक्षाएँ साफ नजर आती है। वहीं इस दौरान बच्चों के लिए अनेक रोचक पुस्तकें भी प्रकाशित हुई है। आजकल बाल साहित्य की अधिक चर्चा होने लगी है अर्थात आज बाल-साहित्य के महत्त्व को समझा जा रहा है। यह बाल-साहित्य के आने वाले समय के लिए एक शुभ संकेत है। शैक्षिक बाल साहित्य को हम तीन रूपों में देख सकते हैं- सूचनात्मक, विचारात्मक तथा भावनात्मक। जिनमें सीधे-सीधे सूचनाएँ दी जाती है, वे सूचनात्मक रचनाएँ होती है, ऐसी रचनाओं में 'इसे पहचानो', 'क्या आप जानते हैं?' जैसे शीर्षकों के अंतर्गत चित्र सहित या चित्र रहित सामग्री प्रकाशित होती है। विचारात्मक शैक्षिक बाल साहित्य के अंतर्गत विविध संदर्भों से जुड़े आलेख आते हैं। भावनात्मक शैक्षिक बाल साहित्य में वे रचनाएँ आती हैं जिनके द्वारा बच्चों की मनोभावना को छूकर उन्हें मनोवांछित शिक्षा देने की कोशिश की जाती है। अधिकांशत: पाया जाता है कि बाल साहित्य से संबंधित समाचार पत्रों में बहुत कम सामग्री प्रकाशित होती है तथा बच्चों द्वारा लिखित प्रकाशित सामग्री उससे भी कम होती है। इसके अलावा यह भी पाया गया कि अंग्रेजी के समाचार-पत्र बच्चों के लिए विशेष समाचार पत्र प्रकाशित करते हैं। ये समाचार- पत्र विद्यालय में बच्चों को उपलब्ध करवाए जाते हैं, जैसे हिंदुस्तान और टाइम्स ऑफ इंडिया बच्चों के लिए अलग से समाचार पत्र का अंक निकालते हैं जो हिंदुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ़ इंडिया के नाम से ही प्रकाशित होते हैं। लेकिन हिन्दी में इस प्रकार से बच्चों के लिए कोई अलग से समाचार पत्र प्रकाशित नहीं होते। इस पर विचार करने की आवश्यकता है। बाल साहित्य के तौर पर बच्चों के लिए छपने वाली बाल-पत्रिकाओं की सामग्री कैसी हो? उन पत्रिकाओं के लिए बाल साहित्य के चयन का आधार क्या हो? वह बच्चों द्वारा ही रचित होनी चाहिए या बड़ों द्वारा लिखी हुई होनी चाहिए? इस प्रकार के अनेक सवालों को समझने के लिए बाल साहित्य से संबंधित ज्ञान एवं समझ होना एक अनिवार्य शर्त है। इससे संबंधित बाल साहित्य पर लिखी गई कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को देखा जा सकता है। जयप्रकाश भारती द्वारा लिखित बाल पत्रकारिता: स्वर्ण युग की ओर पुस्तक में बाल-पत्रकारिता के विकास तथा इसके स्वरूप का विश्लेषणात्मक चित्रण किया गया है। प्रोफेसर कृष्ण कुमार अपनी पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' में बाल कविताओं और कहानियों के संदर्भ में बाल पत्रकारिता की ओर संकेत करते हैं।

चिल्ड्रंस वर्ल्ड के संपादक नवीन मेनन मानते हैं कि बच्चों के विकास के लिए, साथ ही देश के निर्माण के लिए बाल-पत्रिकाएँ बेहद महत्त्वपूर्ण है। देवेंद्र तिवारी बाल साहित्य की मान्यताएँ एवं आदर्श पुस्तक में बाल साहित्य और हिंदी पत्रकारिता को दृढ़ करने पर जोर देते हैं। इसी तरह मनोहर वर्मा मधुमती पत्रिका में बाल साहित्य का विवेचन करते हुए, बाल साहित्य में बाल जीवन के चित्रण को निरूपित करके देखते हैं। बड़े होकर बच्चा बनना एवं उनकी तरह सोचना काफी कठिन कार्य है और

Rajshri Education Department

उससे भी अधिक कठिन है बच्चों के अनुकूल लिखना, इसीलिए जो लोग बाल साहित्य की रचना करते हैं वे एक दुर्लभ कार्य करते हैं उनका कार्य, साधना का कार्य है। मनोरंजन बाल साहित्य का प्रमुख अंग है। वास्तव में बाल साहित्य कहलाने का अधिकारी वही साहित्य है जिसमें बच्चे रस ले सकें तथा अपनी भावनाओं और कल्पनाओं का विकास कर सकें। इस प्रकार बाल साहित्य से संबंधित पुस्तकें पढ़ कर इस विषय के क्षेत्र में अपने ज्ञान का विस्तार किया जा सकता है। बाल साहित्य प्रकाशित करने वालों के लिए ऐसी पुस्तकें पढ़ना अत्यंत महत्त्वपूर्ण भी है। आज कई बड़े प्रकाशन समूह बाल-पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में बच्चों के लिए प्रचुर सामग्री होती है। हिंदुस्तान टाइम्स समूह की नंदन पत्रिका अत्यधिक लोकप्रिय है। इसकी शुरूआत पंडित नेहरु की स्मृति में सन् 1964 में हुई थी। नंदन की कहानियाँ प्रमुख रूप से पौराणिक अथवा परियों से संबंधित ही हुआ करती थी लेकिन अब समकालीन विषयों से संबंधित कहानियाँ भी प्रकाशित की जाने लगी हैं। दिल्ली प्रेस प्रकाशन समूह की चंपक पत्रिका हिंदी के साथ ही अन्य कई क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित हो रही है। चम्पक पत्रिका की कहानियों के अधिकतर पात्र जानवर होते हैं। इसमें विज्ञान से संबंधित कहानियों को भी प्रकाशित किया जाता है। एकलव्य संस्था द्वारा भोपाल से प्रकाशित होने वाली चकमक पत्रिका भी खूब लोकप्रिय है। इस पत्रिका को बच्चों के साथ-साथ बड़े भी चाव से पढ़ते हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन से पहले बाल साहित्य के नाम पर केवल उपदेशात्मक कहानियाँ ही पढ़ने को मिलती थी और सभी उसी तरह की रचनाओं के पढ़ने के आदी भी हो गए थे। लेकिन चकमक ने उस मिथक को तोड़ा है। चकमक पत्रिका ने बच्चों में उनके समय, समाज, परिवेश एवं प्रकृति के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। बाल भारती भारत सरकार के प्रकाशन विभाग की ओर से बच्चों के लिए प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका है। इनके अलावा चंदामामा, बालहंस, दवे पुत्र आदि प्रमुख बाल-पत्रिकाएँ हैं, इन पत्रिकाओं के साथ ही राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, दैनिक हिंदुस्तान, जनसत्ता, राष्ट्रीय सहारा, अमर उजाला आदि अखबारों में सप्ताह में एक दिन बच्चों के लिए विशेष परिशिष्ट का प्रकाशन किया जाता है। इस पृष्ठ की सामग्री में कथा, कविता, चुटकुले, पहेलियाँ आदि के साथ ज्ञान-विज्ञान तथा गणितीय जानकारियाँ भी होती है।

बच्चों के लिए लिखना आसान नहीं होता और बाल-मनोविज्ञान को समझे बिना बाल साहित्य की रचना करना भी संभव नहीं है। बाल साहित्य जितना आसान और सरल दिखता है, सर्जन के स्तर पर वह उतना ही कठिन होता है। 1968 से पूर्व का अधिकांश बाल साहित्य बड़ों द्वारा लिखा गया है लेकिन आज परिस्थितियाँ पहले से भिन्न हैं। वर्तमान समय में बाल साहित्य लेखन में बच्चे भी रुचि दिखा रहे हैं। बच्चों की कल्पनाएँ और अनुभव सर्वथा बड़ों से भिन्न ही होते हैं। उनकी दुनिया भी बड़ों की दुनिया से भिन्न होती है। जो कुछ बड़ों के जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, वही बच्चों की दुनिया के लिए महत्त्वहीन हो सकता है और जो कुछ बच्चों के जीवन के लिए जरूरी एवं मूल्यवान होता है, वही बड़ों के लिए गैर जरूरी एवं मूल्यहीन हो सकता है। अतः बाल साहित्य लिखने में वही व्यक्ति सफल हो सकता है जो अपने बड़प्पन को ताक पर रखकर बच्चे की तरह सरलता, कौतूहल, जिज्ञासा जैसे भावों को स्वाभाविक रूप से अपने अंतःकरण में धारण कर सके। व्यावहारिक रूप से बच्चों द्वारा रचित रचनाओं को अधिकाधिक सामने लाने में चकमक, बालहंस एवं समझ झरोखा ने सराहनीय भूमिका निभाई है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं पर भी बड़ों की इच्छाओं या मान्यताओं के प्रभाव स्पष्ट तौर पर देखे जा सकते हैं। इसके बावजूद इन रचनाओं में बच्चों की निश्छल भावनाओं से जुड़ी रचनाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। चकमक ने बच्चों की रचनाओं का संकलन कर उन्हें प्रकाशित करने का सराहनीय कार्य भी किया है। ये पत्रिकाएँ बच्चों की सृजनात्मकता को निरंतर सामने लाने के लिए सक्रिय रही हैं। बाल-पत्रिकाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है ताकि बच्चों की रचनात्मकता का कोई भी पहलू, किसी भी रूप में प्रकट होने से वंचित न रह जाए। इस संदर्भ में चकमक, झरोखा, बालहंस, समय और बालदर्शन पत्रिकाओं के नाम लिए जा सकते हैं। बाल-पत्रिकाओं में नियमित रूप से चित्रकथाएँ भी छपती हैं। बालहंस, चंपक, नंदन, सुमन सौरभ, बाल भारती, लोट-पोट, मधु मुस्कान, नन्हे सम्राट, शिशु सौरभ आदि पत्र पत्रिकाओं में नियमित रूप से चित्रकथाओं के कुछ स्तंभ प्रकाशित होते हैं। बालहंस एवं चम्पक ने चित्रकथा विशेषांक भी प्रकाशित किए हैं।

यह समझने की आवश्यकता है कि बाल पत्रिकाओं में ऐसी क्या बात है जो बच्चों के लिए आकर्षक पृष्ठभूमि का निर्माण करती है। इन पत्रिकाओं में प्रकाशित बाल सामग्री का अर्थ मनोरंजन मात्र नहीं है बल्कि उससे कहीं अधिक है। हिंदी समाचार पत्रों एवं हिन्दी बाल-पत्रिकाओं को शैक्षिक संदर्भ के लिए सार्थक एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। इसके लिए कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है, जैसे हिन्दी समाचार पत्र व पत्रिकाओं में बच्चों के लिए प्रकाशित होने वाली सामग्री किस प्रकार बच्चों की दुनिया को प्रकट करती है। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में बच्चों के लिए जो प्रकाशित रचनाएँ हैं उनमें बच्चों के मनोविज्ञान तथा उनके सामाजिक जीवन का कहाँ तक ख्याल रखा गया है। प्रकाशित होने वाली रचनाओं में बच्चों के अनुभवों को कितना सम्मिलित किया गया है। इन रचनाओं द्वारा बच्चों की कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता को कितना प्रोत्साहन मिल रहा है? ये रचनाएँ बच्चों के लिए कितनी रुचिकर, मनोरंजक तथा प्रेरणादायक हैं? इन तमाम सवालों को ध्यान में रखकर बाल-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाए। इन पत्रिकाओं को शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया जाए, इससे बच्चों को ठोस धरती मिल सकेगी, उन्हें उड़ने के लिए स्वच्छंद आकाश मिलेगा, उनके लिए धूप भी छाँव-सी बन जाएगी, मूलतः यहाँ सही मायने में बाल सामग्री का अर्थ भी है, बाल साहित्य को बच्चों को यथार्थ से जोड़ने की कड़ी में भी देखा जा सकता है। बाल साहित्य द्वारा बच्चों की भाषा और उनके शब्दकोश का विकास होता है तथा इससे बच्चों में किताबों के प्रति रुचि भी उत्पन्न होती है इसलिए बाल-पत्रिकाओं की उपयोगिता और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों, किस्सों और कविताओं के माध्यम के जरिए बच्चों में न केवल पढ़ने की रुचि का विकास होता है अपितु चुटकुलों और पहेलियों के माध्यम से खेल-खेल में वह भाषा की जटिलताओं को भी सीखता है इसके अलावा पत्रिकाओं में प्रकाशित चित्रकला, शब्द-खेल, गलतियाँ ढूँढ़ना, बिंदु मिलाकर चित्रों का निर्माण करना, सामग्री को

Rajshri Education Charitable

सही ढंग से व्यवस्थित करना, छोटा रास्ता ढूंढ़कर कहीं पहुँचाना जैसे खेलों द्वारा बच्चों का बौद्धिक विकास होता है और उनकी सृजनात्मक क्षमता भी बढ़ती है। इन सबके द्वारा खेल-खेल में ही बच्चे को अनेक विषयों का ज्ञान तो होता ही है, साथ ही उसमें उन विषयों के प्रति रोचकता का विकास भी होता है इसके अलावा बाल-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री द्वारा बच्चा अपने समाज की विसंगतियों के प्रति भी जागरूक होता है। जैसे प्रकृति का जो ह्रास हो रहा है, उसे बचाने में वह कैसे मदद कर सकते हैं, चीजों का उचित इस्तेमाल करना और जो पुरानी वस्तुएँ हैं उनका इस्तेमाल अपनी रचनात्मक प्रतिभा के द्वारा नए रूप में कैसे किया जाए, इन सबकी प्रेरणा भी बच्चों को बाल पत्रिकाएँ पढ़ने से मिलती है। इस प्रकार बाल पत्रिकाएँ बच्चे के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। इसलिए आज हमें इस विषय पर थोड़ा ठहरकर विचार करने और उन विचारों को व्यावहारिक रूप देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष- भले ही आज बाल-पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों की लोकप्रियता कम हो गई हो किंतु बच्चों के विकास में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। पारंपरिक पत्र-पत्रिकाओं का स्थान आज डिजिटल माध्यम पर प्रकाशित होने वाली बाल सामग्री ने ले लिया है। आज डिजिटल माध्यम पर जो बाल सामग्री प्रकाशित हो रही है वह पारंपरिक पत्र-पत्रिकाओं के समान बच्चों को भले ही न बाँधती हो किंतु बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति एवं उनके भविष्य के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। बच्चों के लिए यह आवश्यक है कि वह इन सामग्रियों का सृजनात्मक प्रयोग करें और अपनी इच्छाओं एवं रुचियों को विकसित करें। बाल पत्र-पत्रिकाओं को केवल मनोरंजन सामग्री के रूप में नहीं देखना चाहिए बल्कि उनको इस दृष्टिकोण से भी देखना चाहिए कि उन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सामग्री किस प्रकार से बच्चों की अभिरुचि एवं उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाने का कार्य भी करती है।

प्रवक्ता
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
गंगापुर सिटी,
जिला-सवाई माधोपुर (राज.)-322201
मो.न.: 9462607259

ग्लोबल वार्मिंग : कारण और प्रभाव

❐ पूनम

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने उचित ही कहा था- 'पृथ्वी के पास प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुत कुछ है, किन्तु प्रत्येक मनुष्य के लालच को पूरा करने के लिए नहीं है।' ग्लोबल वार्मिंग को 'दानव' की संज्ञा देना अनुचित न होगा, क्योंकि मानव ही नहीं, संपूर्ण भूमंडल पर जो पर्यावरणीय खतरा मंडरा रहा है वह है ग्लोबल वार्मिंग।

हमारी पर्यावरण संबंधित समस्त समस्याओं का सम्मिलित परिणाम पर्यावरण ग्लोबल वार्मिंग के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है, किन्तु प्रश्न उठता है कि ग्लोबल वार्मिंग है क्या? सामान्यतः पृथ्वी का औसत तापमान स्थिर रहता है। सूर्य से आने वाले ऊष्मीय विकिरण तथा पृथ्वी से परावर्तित होने वाली ऊष्मा के मध्य संतुलन बना रहता है। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से अवशोषण और परावर्तन की प्राकृतिक क्रिया में ऊष्माशोषी गैसों की मात्रा की वृद्धि के कारण असंतुलन की स्थिति बन गई है। परिणामतः पृथ्वी का वातावरण हरित गृह (ग्रीन हाउस) का रूप लेता जा रहा है।

आ गया है कलयुग का दानव,
बढ़ाने प्यारी धरती का तापन।
इससे पहले कि ले ले रूप विकराल,
कर दो हे मानव! इसका संहार।

सूर्य से पृथ्वी पर आने वाली ऊष्मा का 6 प्रतिशत अंश वायुमंडल में परावर्तित हो जाता है। इसी प्रकार, इसका 27 प्रतिशत अंश बादलों द्वारा तथा 2 प्रतिशत अंश पृथ्वी की सतह द्वारा परावर्तित हो जाता है। इस प्रकार, सौर ऊष्मा का 35 प्रतिशत अंश सीधे परावर्तित हो जाता है तथा 65 प्रतिशत अंश में से 14 प्रतिशत अंश वायुमंडलीय गैसों द्वारा अवशोषित हो जाता है। शेष 51 प्रतिशत ऊष्मा पृथ्वी की सतह को प्राप्त होती है। यह ऊष्मा धीरे-धीरे अवरक्त विकिरण के रूप में वायुमंडल में निकल जाती है।

कार्बन डाई आक्साइड, मिथेन, क्लोरो फ्लोरो कार्बन, नाइट्रस आक्साइड जैसी गैसें पृथ्वी के वातावरण में ग्रीन हाउस प्रभाव उत्पन्न करती है। ये ऊष्मारोधी गैसें पृथ्वी की सतह के चारों ओर एक घना आवरण बना लेती है, जिससे धरती की सतह से होने वाली विकिरण की प्रक्रिया में बाधा पड़ती है। फलतः पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होती है। विभिन्न आँकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि पिछली सदी के दौरान धरती का औसत तापमान आधा डिग्री सेंटीग्रेंड बढ़ गया है। तापमान वृद्धि को वर्तमान दर के अनुसार वर्ष 2100 तक विश्व का तापमान विनाशक स्थिति तक बढ़ सकता है। स्पष्ट है कि आगामी कुछ दशकों में हमें तापमान वृद्धि तथा ओजोन परत क्षरण दोनों भयावह समस्याओं से जूझना पड़ सकता है।

ग्लोब वार्मिंग समस्या की गंभीरता पर सम्पूर्ण विश्व का ध्यान आकर्षित करते हुए संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने पेरिस सम्मेलन में कहा था- 'वैश्विक जलवायु की सुरक्षा किसी देश विशेष की समस्या नहीं, यह सम्पूर्ण विश्व की समस्या है और इसके लिए साझा रणनीति की आवश्यकता है। उन्होंने आगे यह भी कहा कि जलवायु परिवर्तन एक ऐसी समस्या है, जो विकास के लिए किए गए सभी प्रयासों के परिणामों को उलट सकती है।

यदि हम ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों पर नजर डालें तो इसका सीधा प्रभाव जलवायु पर पड़ेगा, जो वातावरण को पूरी तरह बदल देंगे। चक्रवात, ज्वार जैसी प्राकृतिक आपदाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों में गर्माहट के कारण प्रलंयकारी स्थिति बनेगी। ताप वृद्धि के कारण हिम नदों की बर्फ में तेजी से पिघलाव होगा। परिणामतः एक ओर जहाँ समुद्री जलस्तर में वृद्धि होगी वहीं दूसरी ओर अनेक नदियाँ सूख जाएगी। यही हाल रहा तो भारत और बांग्लादेश के समृद्ध कृषि क्षेत्र सूखे की चपेट में आ जाएंगे। तापवृद्धि के कारण मौसम में अनिष्टकारी परिवर्तन होंगे। फलतः ग्रीष्मकाल में सूखा पड़ेगा तथा शीतकाल में जल प्लावन का दृश्य उत्पन्न होगा, जिससे फसल चक्र पूरी तरह गड़बड़ा जाएगा और विश्व के अधिकतर क्षेत्र अकाल की चपेट में आ जाएंगे। ताप वृद्धि से अनेक बीमारियों का प्रसार होगा। मलेरिया, हैजा, डेंगू, फाइलेरिया जैसी बीमारियाँ अनियंत्रित होकर सर्वव्यापी हो जाएगी।

यह तो निश्चित है कि वैश्विक तापन एक सार्वत्रिक समस्या है सभी देशों को इसके लिए मिल जुलकर पहल करनी होगी। विभिन्न संधियों/प्रोटोकॉल में तय किए गए निवारक उपायों का सभी देशों द्वारा कड़ाई से और ईमानदारी से पालन करना होगा। यह एक अति गंभीर समस्या है। जिससे निपटने के लिए सभी देशों को गंभीर होना होगा। वैश्विक ताप के निवारक उपायों में गैसों के उत्सर्जन पर भारी कटौती के साथ-साथ वृक्षारोपण एक सरल और अति प्रभावकारी उपाय है। सभी देशों को चाहिए कि वे अपनी राष्ट्रीय नीतियों में इसे शामिल कर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करें। जागरूकता फैलाकर जन-जन को जागरूक करें। तभी इस भयावह समस्या से मुक्ति संभव है।

उप प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. मारीगसर, झुंझुनूं (राज.)
मो.न.: 9413972723

रपट

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास योजना

शैक्षिक भ्रमण : बीकानेर से गुजरात-महाराष्ट्र

यह शैक्षिक भ्रमण कार्यालय संयुक्त निदेशक, बीकानेर से शुरू हुआ। जो गुजरात व महाराष्ट्र से होते हुए पुनः बीकानेर आना था। सभी चयनित पात्र विद्यार्थियों को एकत्र किया गया और निकल पड़े दस दिवसीय भ्रमण पर। भ्रमण के पहले दिन हमने धार्मिक स्थलों जैसे-करणी माता मंदिर, शिव मंदिर (देशनोक) का भ्रमण करने के बाद पाली जिले के होटल पवन इंटरनेशनल में रूके। भ्रमण का दूसरा दिन अर्थात 17 जनवरी को हमारी यात्रा का एक नया मोड़ मिला। जिसमें हमने पाली की पहाड़ियों को देखा। उसके पश्चात पश्चिमी राजस्थान के सबसे बड़े जवाई बांध को देखा जो हमारे लिए एक आश्चर्यजनक दृश्य था। उसके बाद सिरोही जिले में प्रवेश किया। वहाँ राजस्थान के सबसे बड़े पर्वत माऊंट आबू से मिलन हुआ। एक ऊँचे पहाड़ पर स्थित अम्बाजी मंदिर को घूमना वो भी एक रॉक वे की सहायता से वास्तव में बहुत मनमोहक दृश्य था। इसके बाद हमने गुजरात राज्य में प्रवेश किया व भोजन करने के बाद नीलकंठ भवन ही हमारा रात्रि विश्राम स्थल था, जो गाँधीनगर में था। भ्रमण का तीसरा दिन 18 जनवरी बच्चों की धार्मिक स्थलों के प्रति रुचि को बढ़ावा देने के लिए गुजरात में श्री महावीर स्वामी के नारायण मंदिर को देखा था। इसके बाद हमने जिस मंदिर का भ्रमण किया उसका नाम शायद आपके मन में भी जिज्ञासा पैदा कर दे। वो था गुजरात के गाँधीनगर में स्थित सुप्रसिद्ध लक्ष्मी नारायण का अक्षरधाम मंदिर। वहाँ पर प्रदर्शनियों के माध्यम से ऐतिहासिक महत्त्व के स्थलों व नारायण जी के जीवन को भली भाँति समझा व देखा। भ्रमण का चौथा दिन, 19 जनवरी, 2023 इसी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए अनुभूति धाम, नर्मदा पार्क, नर्मदा नदी होते हुए एक अन्य राज्य महाराष्ट्र में कृष्णा प्रेजीडेंसी होटल में ठहरे। इसके बाद हमने भारत के सुप्रसिद्ध शहर व महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई का भ्रमण किया। जिसमें सबसे पहले हमने संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान बोरावली, मुम्बई का भ्रमण किया। उसके बाद कान्हेरी गुफा, बौद्ध स्तूप व मुंबई के जुहू समुद्री बीच का भ्रमण था जो कि बहुत ही शानदार दृश्य था। उसे देखकर मेरे मन में जयशंकर प्रसाद की कुछ पंक्तियाँ याद आयी जो कुछ इस प्रकार है-

निकल रहा जलनिधि तल पर दिनकर बिम्ब अधूरा।
कमला के कंचन मंदिर-सा मानो कांत कंगूरा।।

भ्रमण का अगला दिन जो मुझे सबसे अच्छा लगा। 21 जनवरी सुबह समुद्री तट का भ्रमण। फिर गेट वे ऑफ इंडिया, नेहरु विज्ञान केन्द्र, ताज होटल (मुंबई का सबसे बड़ा 5 स्टार होटल), सिद्धि विनायक मंदिर की झलक देखी। एशिया के सबसे मशहूर बिजनेस मैन मुकेश अंबानी के घर को बाहर से निहारा। जिसे खुली आँखों से देखना अपने आप में गर्व की बात है। मुंबई का सबसे बड़ा अस्पताल जैसलोक हॉस्पिटल का भ्रमण किया। ये दिन मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन रहा है। अगले दिन हमने दमन व दीव (केन्द्र शासित प्रदेश-समुद्री तट) व मोती महल होटल में ठहरे। अब हमारे पर्यटन के अंतिम तीन दिन बचे थे। इसके लिए मुंबई से हम रवाना हुए। 23 जनवरी को हमारे आदरणीय व पूजनीय महात्मा गाँधी जी के आश्रम साबरमती आश्रम का परिभ्रमण कर रिद्धि होटल (उदयपुर) में रात्रि विश्राम किया। 24 जनवरी को झीलों की नगरी नाम से प्रतिष्ठित उदयपुर जिले में फतेहसागर झील का भ्रमण किया। सहेलियों की बाड़ी, प्रभव सेलिब्रेटी, हल्दीघाटी स्थल प्रदर्शनी, महाराणा प्रताप जीवनी (राजसमंद) को समझा और रात्रि जोधपुर अक्षय होटल में रूके और भ्रमण का अंतिम दिन जोधपुर से शुरू हुआ और वापिस बीकानेर आकर समाप्त हुआ।

इस दस दिवसीय भ्रमण का हमने पूर्ण रूप से आनंद लिया। हमारे साथ आए हुए शिक्षकों के कारण ही हमने बिना किसी तकलीफ के आनंदपूर्वक भ्रमण किया। मैं उनका तहेदिल आदर व शुक्रिया अदा करता हूँ। खाने-पीने की व्यवस्था भी बहुत अच्छी थी। परन्तु रात्रि भोजन का समय काफी लेट था। आशा करता हूँ आगे होने वाले भ्रमण में इन छोटी-छोटी कमियों पर ध्यान दिया जाए व सुधार किया जाएगा। इस भ्रमण के माध्यम से बच्चों में घूमने के प्रति व स्थलों के प्रति उत्साह पैदा हुआ। आशा करता हूँ कि अन्य विद्यार्थी भी इस शैक्षिक भ्रमण से प्रेरित हुए होंगे। इसके साथ-साथ ही हमारे व्यावहारिक ज्ञान को संगठित किया जिससे आज हम किसी भी व्यक्ति को भ्रमण आसानी से करवा सके। मैं राज्य सरकार को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए इस योजना को लाने के लिए धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

ओमप्रकाश
कक्षा-11, विज्ञान वर्ग
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सरदारपुरा बीका,
श्रीगंगानगर (राज.)-335804

राज्य सरकार द्वारा संचालित इस योजना के तहत हमें अन्तर्राज्य भ्रमण हेतु कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, बीकानेर संभाग, बीकानेर में इकट्ठा किया गया और वहीं से सभी विद्यार्थियों को रवाना किया गया। हमें अनेक धार्मिक स्थान दिखाए गए जिनमें करणी माता का मंदिर (देशनोक), जिसे चूहों के मंदिर के नाम से जाना जाता हैं, अत्यंत दर्शनीय था। इसके बाद हमने जवाई सागर बाँध (पश्चिमी राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध हैं) देखा। यह दृश्य अत्यंत मनमोहक था। हमने पाली की पहाड़ियाँ देखी। उसके बाद शाम को गुजरात पहुँचकर माँ अंबा जी का मंदिर देखा। हम पहाड़ी पर उड़न खटोले के माध्यम से पहुँचे। यह एक सुंदर सपने जैसा था। विश्राम स्थल-नीलकंठ भवन था। आगे हमने स्वामी नारायण मंदिर देखा। इसके बाद हमने अनुभूति धाम देखा। जिसमें पृथ्वी से लेकर स्वर्ग तक की संपूर्ण यात्रा का विवरण था। हमने गुजरात में नर्मदा नदी देखी। विश्राम स्थल-पुरोहित होटल था। यहाँ से 20 जनवरी, 2023 को हम मुम्बई, महाराष्ट्र पहुँचे वहाँ पर गगनचुंबी इमारते देखी। हमने गुजरात राज्य के गाँधीनगर में स्थित अक्षरधाम मंदिर देखा जिसमें मूर्तियों के माध्यम से हमें भगवान स्वामी नारायण के बारे में पता चला। मुंबई में हमने संजय गाँधी नेशनल पार्क का भ्रमण किया जहाँ हमने बन्दर, हिरण, शेर, चीता देखा। यहाँ पर हमने कान्हेरी की गुफाएँ देखी। कान्हेरी की गुफाओं से प्रकृति का चित्रण सजीव प्रतीत हो रहा था। यह हमने पहली बार देखा था। हमने मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया, ताज महल, साईंस पार्क देखा जिससे हमें विज्ञान की विस्तृत जानकारी मिली। हमने मुंबई में समुद्र तट पर ठण्डी तथा ताजी हवाओं को महसूस किया।

हमने दमन और दीव के तट पर भी ताजगी महसूस की। मुंबई से वापसी के दौरान हमने अहमदाबाद शहर देखा। इसके बाद साबरमती नदी के किनारे स्थित साबरमती

Rajasthan Education Department

आश्रम गए। इस आश्रम की स्थापना 1915 में की गई थी।

1. दिनांक 20.1.2023
   मुम्बई
   (1) संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान, बोरावली, (2) जुहू समुद्र तट, कृष्णा प्रेजीडेंसी होटल
2. दिनांक 21.1.2023
   (1) समुद्री तट, (2) गेट वे ऑफ इंडिया, (3) ताज होटल, (4) नेहरु विज्ञान केन्द्र, (5) सिद्धि विनायक मंदिर
   बाहरी दृश्य
   (i) रास्ते में मुकेश अंबानी व उनके जवाई का घर (ii) मुम्बई का प्रसिद्ध अस्पताल व कॉलेज
   ठहराव स्थल- कृष्णा प्रेसीडेंसी
3. दिनांक 22.1.2023
   1. दमन व द्वीप (समुद्री तट)
   होटल मोतीमहल
4. दिनांक 23.01.2023
   1. साबरमती-गाँधी का आश्रम व वस्तु संग्रहालय
   ठहराव स्थल- होटल रिद्धि
5. दिनांक 24.01.2023
   (1) फतेहसागर झील-उदयपुर (2) सहेलियों की बारी- उदयपुर (3) प्रभव सेलिब्रिटी संग्रहालय (4) हल्दीघाटी- महाराणा प्रताप संग्रहालय
   ठहराव स्थल- होटल
6. दिनांक 25.01.2023
   (1) जोधपुर से बीकानेर की ओर रवानागी (2) रास्ते में मंडौर उद्यान

इस यात्रा में मैं पहली बार परिवार के बिना मैं घर से बाहर अकेली गई। शुरू में किसी से बात करने में भी बहुत हिचकिचाहट हो रही थी। परन्तु धीरे-धीरे मैंने सबको मिल-जुल कर बातें करते देखा तो मेरा भी आत्मविश्वास बढ़ा और फिर वापसी तक मैं भी सबसे बिना हिचकिचाहट से प्रसन्न होकर बात करने लगी थी।

वहाँ मैंने बहुत सारे अच्छे दोस्त बनाए, बहुत सी अच्छी बातें सीखी, वहाँ के ऐतिहासिक व भौगोलिक स्थानों का ज्ञान मिला। मुझे वहाँ बहुत अच्छा लगा। मैं आशा करती हूँ कि आगे भी अच्छी पढ़ाई कर यहाँ ऐसे कोई शैक्षिक भ्रमण में आऊँ।

दिव्या
पुत्री श्री हरपाल, कक्षा-12
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
रायसिंहनगर, श्रीगंगानगर (राज.)

एक शिक्षक की कलम से...

कैसे तैयार हो अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी

❐ जसंवत सिंह

मेरे जीवन का एक ही लक्ष्य है कि किस प्रकार राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी तैयार हो और राजस्थान का एथलेटिक्स विकसित हो। इसी सपने के साथ मैं राजस्थान शिक्षा विभाग में शारीरिक शिक्षक पद पर 1997 में नियुक्त हुआ।

आज भी सपना सा लगता है कि बचपन में जब नीलगगन के विशाल प्रांगण में अति ऊँचाइयों पर उड़ते पक्षियों को देखता था तो मेरा भोलापन भी कल्पना की कोमल डोरियों पर सवार होकर अंबर की ऊँचाइयों को नापने लगता था।

एक खिलाड़ी के मन में अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने की उत्कंठा होना स्वाभाविक ही है। मैंने अपने खिलाड़ी जीवन में अनेक मौकों पर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया। तत्पश्चात शारीरिक शिक्षक के पद पर नियुक्ति हुई तो मैंने मन वचन कर्म से दिल में सोचा था कि जो मैं अपने खेल जीवन में नहीं कर सका वो शिक्षक बनकर करूँगा और हर गाँव ढाणी में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी तैयार करूँगा जो एक दिन भारत के लिए पदक जीतकर क्षेत्र को, राज्य को गौरवान्वित करेंगे और मैं स्वयं भारतीय टीम के कोच के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व कर तिरंगे को देश-विदेश की धरती पर लहराऊँगा।

कोच के रूप में प्रतिवर्ष अपने शिष्य खिलाड़ियों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान टीम का प्रतिनिधित्व किया है। परन्तु विदेश यात्रा की उत्कंठा अब मेरे दिल में व्यग्रता से परिविर्तित हो रही थी और ईश्वर ने मेरी मेहनत, कर्त्तव्यपरायणता, प्रार्थना 2014 में सुनी और प्रथम समय यूथ एशियन गेम बैंकॉक (थाइलैण्ड) में भारतीय टीम कोच के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ़ (चूरू)-हरियाणा राज्य से सटे चूरू जिले में स्वर्णिम धोरों की भूमि राजगढ़ खेल जगत में अपना अहम स्थान रखता है। यह एथलीट खिलाड़ियों की जन्मस्थली कही जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। जहाँ से खिलाड़ी तैयार होकर सेना, रेल्वे, शिक्षा विभाग, पुलिस में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। यहाँ से कई राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी निकले हैं। परन्तु 1990 के बाद इस विद्यालय से खिलाड़ियों की खेप निकलना कम हो गया और 2000 से 2009 तक तो मानो एथलेटिक्स विद्यालय से गायब सा हो गया था।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा बीकानेर के आदेशानुसार 21 अक्टूबर, 2009 को मैंने सत्रपर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र रा.उ.मा.वि. राजगढ़ में कार्यग्रहण किया। तब से मैंने कड़ी मेहनत करते हुए केन्द्र की 18 सीटों को न केवल भरा बल्कि 2011 से तो गुणात्मक रूप में पूरे राजस्थान में केन्द्र की उपलब्धि अव्वल है। राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में रा.उ.मा.वि. राजगढ़ कभी विजेता तो कभी उपविजेता का खिताब जीतता है और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र मेडल जीतने लग गए। उसी का परिणाम था कि यूथ नेशनल एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2014 गोवा में छात्र प्रदीप कुमार ने नए रिकॉर्ड के साथ हैमर थ्रो में स्वर्ण पदक लिया और यूथ ओलम्पिक 2014 में चयन हेतु यूथ एशिया बैकांक के लिए चयन हुआ और यहीं से AFI (एथलेटिक्स फैडरेशन ऑफ इण्डिया) की नजरें सत्रपर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र राजगढ़ व उनके कोच पर पड़ी और मुझे यूथ नेशनल टीम का कोच नियुक्त कर बैकांक (थाइलैण्ड) भेजा। ये मेरी भारतीय टीम के साथ प्रथम विदेश यात्रा थी। तब मुझे अहसास हुआ कि निःस्वार्थ भाव से सेवा करने का प्रतिफल था। भारतीय टीम के साथ विदेश जाना किसी सपने से कम नहीं था।

Rajasthan Education Department

मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है
पंख होने से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है।
नहीं दी जाती तालीम परिंदों को उड़ने की
वो तो खुद ब खुद छू लेते है बुलंदी आसमानों की।।

अब मेरी निगाह राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में मेडल जीतकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में मेडल जीतना थी। मैं पूरे राजगढ़ क्षेत्र में कोच साहब के नाम से जाना जाने लगा और गाँवों से पेरेन्ट्स अपने बच्चों को लेकर मेरे से प्रशिक्षण दिलवाना चाहने लगे। अब मेरे पास सुबह सायं 150 एथलीट प्रशिक्षण में हो गए। खेल मैदान में खिलाड़ियों की भीड़ दिखने लगी। मेरे अंदर दिन-प्रतिदिन समर्पण, कर्त्तव्यनिष्ठा डवलप होती गयी। 2014 में राँची स्कूल नेशनल में विद्यालय के 7 नेशनल मेडल और राजस्थान के 9 मेडल लगे जिसमें 3 नेशनल रिकॉर्ड के साथ जून 2015 में विद्यालय के छात्र रवि कुमार ने वर्ल्ड स्कूल वुहान (चीन) में डिस्कस थ्रो में रजत पदक जीतकर शिक्षा विभाग में इतिहास रचा। पूरा राजस्थान, खेल जगत व विभाग में चर्चा का विषय हो गया।

2015 तक सम्पूर्ण राजस्थान में मेरी पहचान एथलीट कोच के रूप में बन गयी थी। क्षेत्र के गणमान्य नागरिक, राजनीतिक भामाशाह, सभी मेरे कार्य से प्रसन्न होकर मुझे प्रेरित करने लगे। तभी मैंने विद्यालय में खेल सुविधाएँ बढ़ाने हेतु 60×40 फीट का जिम हॉल व खेल स्टोर का लगभग 20 लाख रुपये की लागत से निर्माण करवाया जो आज भी राजस्थान में अति आधुनिक जिम हॉल के रूप में पहचाना जाता है। तत्कालीन निदेशक श्री नथमल डिडेल, माननीय शिक्षा मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा जी भी जिम का मुआयना कर सराहना कर चुके है।

2016 में राज्य स्तर के शिक्षक सम्मान समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया ने मेरा नाम लेकर मेरी उपलब्धियों को संज्ञान में लिया। शिक्षा सचिव श्री नरेशपाल गंगवार व निदेशक श्री बी.एल. स्वर्णकार के साथ मीडिया ने मेरा साक्षात्कार लिया। तब मुझे पहली बार अपने पर गर्व महसूस हुआ कि अपने द्वारा किया गया कार्य सबसे अलग है। मैंने तभी सभी के सामने मंच पर ये कहा था कि आने वाले समय में और ज्यादा अच्छा कार्य करूँगा।

2017 में मुझे यूथ नेशनल टीम चयन समिति भारत का सदस्य नियुक्त किया। 2017 में जूनियर नेशनल चैम्पियनशिप में विद्यालय के छात्र नितेश पूनियाँ ने हैमर थ्रो में नया नेशनल रिकॉर्ड बनाया व वर्ल्ड की चौथी रैंक हासिल की व यूथ एशियन गेम में कांस्य पदक व यूथ ओलम्पिक में पाँचवां स्थान प्राप्त किया। मुझे भी भारतीय टीम कोच के रूप में यूथ एशियन गेम बैंकॉक, वर्ल्ड चैम्पियनशिप नेरोबी (केन्या), यूथ कॉमनवेल्थ गेम महामास जाने का अवसर मिला।

अब मैं पूर्ण रूप से प्रेरित होकर कार्य कर रहा था। वर्ष 2017 में मुझे राष्ट्रीय शिक्षक अवॉर्ड मिला। मैं अवॉर्ड लेकर दिल्ली से जब राजगढ़ पहुँचा तो लगभग 2-3 हजार खेल प्रेमियों द्वारा रेल्वे स्टेशन से विद्यालय व मेरे घर तक गाजे बाजे से सम्मान किया। मैं क्षेत्र के खेल प्रेमियों के सम्मान व अवॉर्ड से प्रसन्न था परन्तु मेरे दिल में एक बात महसूस हो रही थी कि अब मुझे पहले से ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी नहीं तो जनता का सम्मान व मेरा शिक्षक अवॉर्ड फीका पड़ जाएगा।

2017 में खेलो इंडिया गेम का प्रारंभ माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया गया। मुझे खेलो इंडिया टैलेंट हंट टीम में शामिल किया गया। जिसमें पूरे देशभर से 13 से 17 वर्ष के एथलीट का चयन करना था। इस समय मैंने विद्यालय में खेल सुविधाएँ बढ़ाने के तहत जिम हॉल, 400 मी. ट्रैक व अन्य अति आधुनिक खेल उपकरण व आधुनिक सुविधाओं को सहयोग से विकसित किया और गुणात्मक दृष्टि से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के एथलीट तैयार करने का कार्य कर रहा हूँ। क्षेत्र के हर स्तर उ.मा. विद्यालय, ओपन स्कूल सभी प्रकार के एथलीट प्रशिक्षण ले रहे हैं।

मेरे अनुभव व विचार- मेरे दिल और दिमाग में हमेशा एक ही जुनून रहता है। किस प्रकार नयी प्रतिभाओं को तराशा जाए और कैसे राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मेडलिस्ट बनाऊँ। मेरे विद्यालय में खेल संसाधनों की बहुत ज्यादा कमियाँ ये कहूँ कि ना के बराबर मुझे खेल उपलब्धियों के साथ खेल संसाधनों को भी समृद्ध करना था जिसमें शिक्षा विभाग बीकानेर व भामाशाहों को समय-समय पर मोटीवेट किया तो लगभग सभी संसाधन भी विकसित हुए। जहाँ कोई कमी रहती है वहाँ संसाधन जुटाने के प्रयास किए जाते रहे हैं।

मेरे विद्यालय के संस्थाप्रधान, स्टाफ के सभी समस्त साथीगण, आयुक्तालय, बीकानेर के खेलकूद से जुड़े अधिकारी, बजट शाखा के अधिकारियों ने केन्द्र के लिए भौतिक सुविधाएँ अति आधुनिक खेल उपकरण, स्थानीय क्षेत्र के खेल प्रेमी व पूरे राजस्थान भर के खेल प्रेमी अच्छे एथलीट तैयार करने में मेरी पूर्ण मदद कर रहे हैं। हर क्षेत्र में मुझे उत्साहित करते रहते हैं। सामान्यतः मैं प्रातः 5 से 9 बजे तक व सायं 3 बजे से 8 बजे तक प्रशिक्षण व दिन में विद्यालय व्यवस्था में तैयार रहता हूँ।

मेरे जीवन का एक ही लक्ष्य है। खेल जगत में मेरे द्वारा तैयार एथलीट व अन्य खिलाड़ी विभाग से राज्य व राष्ट्र का नाम गौरवान्वित करें। इस प्रतिस्पर्द्धा के युग में खेल चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए मैं खेल प्रशिक्षण के सभी सिद्धांतों का पूर्ण कड़ाई से पालन करते हुए नयी-नयी प्रतिभाओं को तराश रहा हूँ। जिस प्रकार सागर में उठती हुई लहरें यह संदेश देती है कि अपने लक्ष्य की ओर हमेशा अग्रसर रहे ठीक उसी प्रकार मेरा संदेश यह रहता है कि आप सब कुछ कर सकते हैं। मेरे शिष्य खिलाड़ी इसी वाक्य को पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। हम सबकी इच्छाएँ

जिंदगी की असली उड़ान अभी बाकी है
जिंदगी के कई इम्तिहान बाकी है,
अभी तो नापी है मुट्ठीभर जमीन
आगे तो सारा आसमान बाकी है।।

एन.आई.एस. एथलेटिक्स प्रशिक्षक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजगढ़,
चूरू (राज.)
मो: 9413076433

Rajshan Education Department
सत्यमेव जयते

गणित दिवस विशेष

गणित का दैनिक जीवन में उपयोग

❒ दिनेश कुमार

गणित ऐसी विद्याओं का समूह है जो संख्याओं, मात्राओं, परिणामों, रूपों और उनके आपसी रिश्तों, गुण, स्वभाव इत्यादि का अध्ययन करती है। गणित एक अमूर्त या निराकार है।

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तथा वेदांग शास्त्राणां गणितं मूर्ध्विस्थितम्।।

अर्थात् जिस प्रकार मोरों में शिखा और नागों में मणि का स्थान सबसे ऊपर है, उसी प्रकार वेदांग और शास्त्रों में गणित का स्थान सबसे ऊपर है।

कुछ हद तक आमजन गणितज्ञ ही होते हैं प्रत्येक दिन हम गणित का इस्तेमाल करते हैं। जैसे सुबह उठकर घड़ी में समय देखते हैं, अपने खरीदे गए सामान का हिसाब जोड़ते हैं, घर से विद्यालय जाते समय दूरी का ज्ञान रखते हैं, साथ ही सुबह उठकर नहाते वक्त पानी का हिसाब रखना, कपड़े धोते वक्त पानी का हिसाब रखना, घर से विद्यालय जाने में लगे समय का ज्ञान रखना, विभिन्न प्रकार के खेलों के स्कोर का लेखा-जोखा रखना इत्यादि। इसी प्रकार जलयान का चालक मार्ग के दिशा निर्धारण के लिए ज्यामिति का उपयोग करता है।

राडार प्रणालियों की अभिकल्पना तथा चांद और ग्रहों आदि तक राकेट यान भेजने में गणित का उपयोग किया गया है। आज दुनिया कम्प्यूटर पर निर्भर होती जा रही है क्योंकि यह हमारी कार्य शैली का हिस्सा बन चुका है। कम्प्यूटर भी गणित के ज्ञान पर आधारित एक यंत्र है जो गणितीय घटनाओं को शीघ्रता से संपादित करता है। आज जीवन तथा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में गणित का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

महान गणितज्ञ श्री महावीर आचार्य का कथन है 'लौकिक, वैदिक तथा सामाजिक जो व्यापार है इन सब में गणित का उपयोग है।'

एक दिन मैं जयपुर गया था। मैं रिक्शे वालों की तरफ गया। वहाँ पर कई रिक्शा चालक थे। मैंने एक रिक्शा चालक को इशारा कर मेरी ओर बुलाया, वह रिक्शा चालक अनपढ़ लग रहा था। मैंने उसे 3 किमी. दूर जाने का भाड़ा पूछा। उसने 100 रुपये बताए। जब मैंने उससे 5 किमी दूर का भाड़ा पूछा तो भाड़ा 150 रुपये बताए, फिर मैंने उससे 1 किमी फ्लाई ओवर का भाड़ा पूछा तो उसने 100 रुपये बताये। जब मैंने पूछा 3 किमी. के 100 रुपये, 5 किमी. के 150 रुपये व 1 किमी फ्लाई ओवर करने के 100 रुपये। इसके जबाब में उसने कहा कि फ्लाई ओवर में सबसे अधिक मेहनत लगेगी। इसका तात्पर्य यह है कि 'रिक्शे वाले को उँचाई, दूरी, कार्य आदि का संपूर्ण ज्ञान है'

यही तो गणित है जो प्रतिदिन गृहिणी को चूल्हे चौके में अगर 5 व्यक्ति का खाना बनाना है तो कितने भोजन की आवश्यकता होगी, अगर 3 व्यक्ति और बढ़ जाए तो भोजन की मात्रा कितनी बढ़ानी होगी।

किसान को कृषि कार्य में खेत का आकार क्या है? वर्गाकार है तो बीज की कितनी आवश्यकता होगी, आयताकार है तो बीज की कितनी आवश्यकता होगी, त्रिभुजाकार व चतुर्भुजाकार है तो कितनी बीज की आवश्यकता होगी? कौनसा अनाज कितने बीघे में बोने से कितना प्राप्त होगा? क्या इस अनाज से सभी घर के सदस्यों की पूर्ति वर्ष भर हो जाएगी? इत्यादि। यहाँ किसान अनपढ़ है तो भी उसे ज्यामिति, अंकगणित, समय इत्यादि का गणितीय ज्ञान है।

- सब्जी, सामान आदि खरीदते समय हिसाब के लिए गणित चाहिए।
- सप्ताह भर घरेलू सामान के आकलन के लिए गणित का ज्ञान होना चाहिए।
- आपके मासिक वेतन को कहाँ-कहाँ पर खर्च करना है कितना बचाकर रखना है।
- यदि किसी शॉपिंग मॉल में 2000 रुपये लेकर गए है वहाँ कपड़ों पर 20 प्रतिशत का डिस्काउंट चल रहा था तो हमें कितने कपड़े खरीदने है इसका हिसाब लगाने के लिए गणित चाहिए।

''शून्य से शुरू हुआ जीवन, मकसद अनन्त तक जाना है।'

'एक और एक प्यार से पास-पास बैठ जाए तो ग्यारह होते हैं अर्थात संगठन में शक्ति है।'

गणित का उपयोग हम दिन भर करते हैं परन्तु हमें पता ही नहीं चलता, हमारे मन में प्रायिकता या संभाव्यता नाम का शीर्षक काम कर रहा होता है और हम जानते हैं कि हमारे लगभग कितने प्रश्न सही है और इतने से अधिक अंक वालों का चयन हो सकता है तो हमारा मन प्रायिकता का उपयोग कर निकाल देता है कि हमारा चयन होने की संभावना कितनी है।

जब हम चाय बनाते हैं तो शक्कर/चाय पत्ती/पानी/दूध का अंदाजा हम अनुपात और समानुपात फार्मूला से लगाते हैं कि 3 कप के हिसाब से चाय बनाने के लिए शक्कर/चाय पत्ती/पानी/दूध की कितनी मात्रा का उपयोग होगा।

कोई चीज जैसे घर की छत कितनी झुकी है इसमें कितने डिग्री कोण बना हुआ है। बढ़ई द्वारा बने मेज, उसकी टाँगे एवं बढ़ई लकड़ी द्वारा बनी हर वस्तु में किसी न किसी तरह गणित का इस्तेमाल करता है। हर व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार गणित का इस्तेमाल करता है। गणित के ज्ञान के अभाव में न पानी के बाँध बन पाएँगे और न बिजली की उत्पत्ति होगी, परिणामस्वरूप खेतों की सिंचाई के साधन भी उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। ऐसा होने पर संभव है आधुनिक मनुष्य पुरातन काल के मानव जैसा जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाए। अत: गणित की अज्ञानता के अभाव में हमारी जीवनरूपी गाड़ी का महत्त्वपूर्ण पहिया निकल जाएगा।

यदि गणित का शिक्षक पढ़ाते समय विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के दैनिक जीवन में उपयोगी उदाहरण से जोड़कर गणित का अध्ययन कराए तो विद्यार्थी ज्यादा सरलता से समझ सकते हैं साथ ही विद्यार्थी की रुचि भी इस विषय में बढ़ सकती है।

जैसे कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों को किसी वस्तु के पृष्ठीय क्षेत्रफल व आयतन के

Rajasthan Education Department

बारे में अध्ययन करवाना है तो क्षेत्रफल व आयतन का अन्तर स्पष्ट करते हुए अध्ययन की शुरूआत कराए जैसे घन व घनाभ का सम्पूर्ण पृष्ठीय क्षेत्रफल ज्ञात का सूत्र याद कराना है तो घन के लिए शुरूआत वर्ग से करनी चाहिए जैसे वर्ग के क्षेत्रफल का सूत्र =भुजा×भुजा होता तब शिक्षक द्वारा कक्षा में चोक के डिब्बे का उपयोग कर विद्यार्थियों को समझाना चाहिए कि छ: वर्गाकार फलकों को मिलाकर एक घन का निर्माण होता है जिससे घन का क्षेत्रफल वर्ग के क्षेत्रफल का छ: गुणा होगा। अत: हमें घन का पृष्ठीय क्षेत्रफल ज्ञात करने का सूत्र= 6×भुजा×भुजा प्राप्त होता है। इसी तरह आयताकार वस्तु का उदाहरण लेकर हम विद्यार्थियों को घनाभ का क्षेत्रफल भी आसानी से समझा सकते हैं।

इसी तरह बेलन व शंकु का आयतन ज्ञात करने का सूत्र परस्पर संबंधित होता है। बेलन व शंकु के आयतन का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक कक्षा में निम्न प्रयोग का उपयोग कर सकते हैं- 'एक बेलनाकार बर्तन में रेत भरकर रख दे और इनकी मात्रा को तोलकर नोट कर लेंवे, इसी प्रकार शंकु के आकार के बर्तन में भी रेत भरकर उसकी मात्रा को तोलकर नोट कर लेंवे। तत्पश्चात दोनों नोट की हुई मात्राओं का अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि शंक्वाकार बर्तन में भरी हुई रेत की मात्रा, बेलनाकार बर्तन के अंदर भरी हुई रेत की मात्रा के तीसरे हिस्से के बराबर है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि बेलन के आयतन का सूत्र व शंकु के आयतन का सूत्र बेलन के आयतन का तीसरा हिस्सा होता है।'

बेलन का आयतन = $\pi r^2 h$

शंकु का आयतन=$1/3$ बेलन का आयतन = $1/3\ \pi r^2 h$

इसी तरह अन्य उदाहरणों द्वारा विद्यार्थियों को गणित की सर्व समीकरणों को आसानी से समझाया जा सकता है। इस प्रकार उदाहरण देकर गणित को आसान बनाया जा सकता है जिससे विद्यार्थियों के मन भय समाप्त हो जाएगा इसके फलस्वरूप गणित के प्रति विद्यार्थियों की रुचि अधिक बढ़ जाएगी।

वरिष्ठ अध्यापक (गणित)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होडू,
बाड़मेर (राज.)
मो. नं: 9460148822

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

❐ **दिनेश कुमार यादव**

कुछ परिंदे उड़ रहे हैं आंधियों के सामने।
उनमें ताकत ना सही पर हौसला जरूर होगा।
इसी तरह आगे बढ़ते रहे तो देखना,
तय समुदर तक का फासला जरूर होगा।

इन्हीं शब्दों को हृदय में संजोए मैंने 19 अक्टूबर, 2019 को रा.मा.वि. श्री कृष्ण नगर (मुंडावर, अलवर) में प्रधानाध्यापक पद पर कार्य ग्रहण किया। नए पद के साथ नयी चुनौतियाँ मानो स्वागत के लिए तैयार खड़ी थी। प्रथम चुनौती थी विद्यालय में शैक्षिक माहौल तैयार करना। दूसरी बड़ी चुनौती थी विद्यालय का भौतिक विकास और तीसरी चुनौती थी नामांकन वृद्धि। मैंने इन्हीं चुनौतियों को ध्येय बनाया। प्रधानाध्यापक पद पर अभी नौसिखिया ही था लेकिन पद की चुनौतियों को समझने का मन में संकल्प था।

शैक्षिक वातावरण निर्माण- प्रथम चुनौती विद्यालय में शैक्षिक माहौल तैयार करना और परीक्षा परिणाम 100 % तक ले जाना था। बिना स्टाफ़ की मदद के इससे पार पाना असंभव था। सर्वप्रथम सभी स्टाफ़ साथियों को भरोसे में लिया कक्षा 5, 8 व 10 की निरंतर extra class लगाई जाने लगी। उन बच्चों को चिह्नित किया गया जो कक्षा स्तर से नीचे लेवल के थे (जो हिंदी व अंग्रेजी में किताब पढ़ना, गणित में जोड़ बाक़ी आदि भी नहीं जानते थे) उन पर अतिरिक्त मेहनत की गयी। उन्हें अलग से कापी पेन्सिल उपलब्ध करवाई गयी जो शाम को विद्यालय में ही जमा की जाती थी। घर के लिए नियमित होम वर्क दिया जाने लगा। इस कार्य में B.Ed. इंटर्नशिप के विद्यार्थियों की मदद ली गयी। प्रत्येक इंटर्न को 3-4 बच्चे दिए गए। साथ ही उन्हें टास्क दिया गया कि निर्धारित समय (एक सप्ताह या दो सप्ताह) में इन बच्चों को अमुक चीजें (आवश्यकतानुसार जोड़-बाकी, किताब पढ़ना आदि) आनी चाहिए। इसकी नियमित मॉनिटरिंग की जाने लगी। इसका लाभ यह हुआ कि बच्चों को कक्षा स्तर तक लाया जा सका और B.ed. इंटर्न की मैनपावर का भी सदुपयोग हो सका। साथ ही विद्यालय में प्रथम बार बोर्ड परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा जो आगामी वर्षों में भी निरंतर रहा। इसी दौरान पूरे विश्व में कोरोना महामारी का दौर आया। लॉकडाउन में अभी तक की गयी मेहनत चौपट हुई जा रही थी। ऐसे में लर्निंग गैप मिटाने के लिए WISEAURA नाम से अपना YOUTUBE चैनल बनाया और ऑनलाइन पढ़ाने का कार्य शुरू किया गया। बाद में smile प्रोग्राम के तहत डोर टू डोर टीचिंग का कार्य भी करवाया गया। विद्यालय में शैक्षणिक उन्नयन में मेरे कर्मठ स्टाफ साथियों का मुझे भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ जिसके लिए मैं सदैव आभारी रहूँगा। मेरे स्टाफ की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है कि मुझे कभी भी एक कार्य को करने के लिए स्टाफ को दो बार नहीं कहना पड़ा। टास्क मिलते ही उसे सफल बनाने में जुट जाते थे। मेरी शैक्षिक उन्नयन से जुड़ी उपलब्धि को लड़े सिपाही नाम हवलदार का भी माना जा सकता है।

भौतिक विकास- दूसरी बड़ी चुनौती जर्जर भवन थी। विद्यालय भवन 1971 में जन सहयोग से ही बनाया हुआ था जो उस समय के हिसाब से गारे मिट्टी से चिनाई किया हुआ था और अब जर्जर हो चुका था, छत में बड़ी-बड़ी दरारें आ चुकी थी। बरसात में पानी टपकता था। फर्श और प्लास्टर भी उखड़ा पड़ा था। कुछ कमरों की छत की पट्टियाँ गिर चुकी थी जिनमें कक्षाएँ बिठाना बंद कर दिया था। इसलिए कुछ कक्षाएँ खुले प्रांगण में बिठानी पड़ती थी। सबसे पहले स्टाफ़ साथियों के आर्थिक सहयोग से सभी कक्षा-कक्षों में ग्रीनमैट बिछवायी गयी ताकि बच्चों को बिना फर्श ना बैठना पड़े। मेरे कुछ मित्रों की मदद से टूटी हुई फ़र्श वाले कुछ कमरों में टाइल बिछवाई गयी तथा TLM की व्यवस्था की गयी। यहाँ शैक्षिक उन्नयन के लिए किए गए प्रयासों ने हमारी मदद की। जब स्कूल में गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई की रिपोर्ट बच्चों के माध्यम से अभिभावकों तक पहुँची तो ग्रामीणों में भी विद्यालय के प्रति सकारात्मक सोच का संचार हुआ। फलस्वरूप विद्यालय के जर्जर कमरों को जन सहयोग से पुनर्निर्माण के साथ-साथ ही भामाशाहों द्वारा नए कमरों का भी निर्माण करवाया गया। एक बार शुरुआत के बाद तो देखते ही देखते विद्यालय का नया भवन बनकर तैयार हो गया। विद्यालय को प्राप्त जन सहयोग से चहुँमुखी विकास हुआ।

विद्यालय की अन्य उपलब्धियों में नामांकन में 65% तक वृद्धि के अलावा विद्यालय में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाना प्रमुख रही। विद्यालय में NMMS, NTSE, सर्वोदय ज्ञान विचार परीक्षा आदि की तैयारी नियमित करवाई जाती है। हर वर्ष NMMS परीक्षा में 3-4 बच्चे चयनित होकर छात्रवृत्तियों से लाभान्वित भी हो रहे हैं। राज्य सरकार के नए नियमानुसार प्रधानाध्यापक को वाइस प्रिन्सिपल बनाए जाने के कारण 28 दिसम्बर, 2022 को छात्रों, स्टाफ साथियों और ग्रामीणों के अकूत प्यार और अभूतपूर्व विदाई समारोह की यादों को संजोए हुए नए मुकाम की ओर बढ़ चले हैं।

आगे भी शिक्षा विभाग और समाज के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने के आशा और विश्वास के साथ।

उप प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खोहर बसई,
बहरोड, अलवर (राज.)

Rajshri Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

सच्चा मित्र

एक बार की बात है, एक गाँव में दो बहुत अच्छे मित्र थे। एक का नाम मोहन, दूसरे का नाम लोकेश था। मोहन बहुत अमीर था। लेकिन लोकेश बहुत गरीब था। मोहन की एक बहुत ही बड़ी कंपनी थी। लेकिन लोकेश एक सेठ के घर पर काम करने जाता था। एक दिन मोहन का बहुत पुराना मित्र उसके घर आया। उसका नाम राम था। उसने मोहन से पूछा कि तुम्हारा सबसे अच्छा मित्र कौन है। मोहन ने झट से जवाब दे दिया। मेरा सबसे अच्छा मित्र लोकेश है। राम ने पूछा कि क्या काम करता है? मोहन ने कहा कि वह एक सेठ के घर पर छोटा-मोटा काम करता है। राम ने बोला तुम इतनी बड़ी कंपनी के मालिक हो और तुम ऐसे मित्र रखते हो। मुझे तुम पर शर्म आ रही है। मोहन बोला इसमें शर्म की क्या बात है? वह हमेशा मेरी सहायता करता है। राम बोला वह तुम्हारी हमेशा सहायता करता है, मुझे ऐसा नहीं लगता है। राम बोला चलो तुम्हारे मित्र को आजमा लेते हैं। मोहन बोला चलो मुझे भी देखना है वह क्या करता है? राम ने लोकेश को फोन किया और बोला मैं किडनैपर बोल रहा हूँ। अगर तुम मोहन को बचाना चाहते हो तो 2 घंटे में 20 लाख रुपए ले आओ। लोकेश को मोहन की इतनी चिंता थी कि वह एक ही घंटे में 20 लाख रुपए लेकर आ गया। मोहन ने लोकेश को गले लगा लिया। दोनों की आँखों में पानी आ गया। मोहन ने बोला देखा मेरे प्रिय मित्र राम। तुम बोल रहे थे ना कि उसे आजमाने की जरूरत है मुझे मेरे लोकेश के ऊपर पहले से ही पूरा विश्वास था।

शिक्षा: कभी भी सच्चे मित्र को आजमाने की जरूरत नहीं होती।

वामाक्षी जैन, कक्षा- 5
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) वल्लभनगर, उदयपुर (राज.)

बेटी हमारी शान है

बेटी हमारी शान है,
भारत की जान है,
उठती जागती सोती खेलती
बहुत मेहनत करती है,
भारत की बेटी किसी से नहीं डरती है,
हिम्मत मे झांसी की रानी बन जाती है,
स्वाभिमान मे हाड़ी रानी बन जाती है,
वक्त पड़े तो कल्पना चावला बन अंतरिक्ष पहुँच जाती है,
भारत की बेटी अपना फर्ज निभाती है,
पन्नाधाय बन अपने पुत्र का बलिदान देती है,
बन लता मंगेशकर अपने स्वरों से सुरों का सरगम गाती है,
चलो आज सोगंध लेते या,सब मिलकर शपथ उठाते हैं,
बेटी की रक्षा करने का बीड़ा हम उठाते हैं।

विमर्श जैन, कक्षा- 7
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) वल्लभनगर, उदयपुर (राज.)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

मेरी माँ

मेरी माँ सबसे प्यारी
मैं उसकी बेटी दुलारी
माँ मुझे प्यार बहुत करती है
मेरे बिना एक पल भी नहीं रहती है,
वो मेरी धूप है वो मेरी छांव है
उसके चरणों में तो मेरा निवास है।
वो डाँटती भी है, और फटकारती भी है
पर मुझे डाँट कर वो मुझसे ज्यादा रोती भी है।
इसलिए मैं यह कहती हूँ, मेरी माँ सबसे प्यारी
मैं उसकी छोटी सी दुलारी

चाहना डामोर, कक्षा–9
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुखापादर, ब्लॉक–सागवाड़ा ,
डूँगरपुर (राज.)

दोस्ती

इनके न होने से जिंदगी बेरंग है
इनके होने से ही जिंदगी रंगीन है
जिस तरह फूल में खुशबू का होना
उसकी महक को बढ़ाता है
उसी तरह जिंदगी में दोस्त का होना
जीवन को खुशहाल बनाता है।
दोस्त एक वह शख्स होता है जो
हमें हर मोड़ पर अपनी ख्वाहिश पूरी
कराने के लिए एक पाँव पर खड़ा रहता है
भले ही हम किसी भी दुख में लीन क्यों न हो,
परन्तु दोस्त ही वह इंसान है
जो हमें खुशी की सही पहचान कराता है।

पूजा माली, कक्षा–12
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय कोठारिया, खमनोर,
राजसमंद (राज.)

फौजी

हमको बचाने में अपनी जान गंवा देते हैं
सरहद पर रहकर हमारे परिवार बचा लेते हैं।
खुद तो तिरंगे में लिपट कर घर आते हैं
पर हमारे घरों में खुशियाँ भर जाते हैं
अगर मौका मिला कभी जिंदगी में तो
मैं भी उसी सरहद पर जान गंवाना चाहती हूँ
अपनों की जान बचाते-बचाते खुद कफन ओढ़ना चाहती हूँ।
शत-शत नमन है उनके माता-पिता को जिसने अपने घर का
दीपक बुझाकर
लोगों के घरों को रोशन किया है।
जिसे नहीं जानते उनके प्राणों को भी बचाया है।
हाथ जोड़कर प्रणाम है वीर जवानों को
जो मेरे देश की सीमा पर खड़े हैं और
दुश्मनों से डटकर लड़ते हैं।
सभी संकटों को वह सहते हैं तभी हम
देश के अंदर सांस ले पाते हैं
ये फौजी ही तो हैं हमारे देश की शान
इनकी वजह से ही तो है भारत महान
'जय जवान, जय किसान'

खुशी खटीक, कक्षा 12
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय कोठारिया,
खमनोर, राजसमंद (राज.)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पुस्तक समीक्षा

पराक्रमी परमारां रौ प्रकास

लेखक : संग्राम सिंह सोढ़ा; **प्रकाशक** : अरिहन्त प्रकाशन जोधपुर; **पृष्ठ संख्या**: 56; **मूल्य**: ₹ 100/-

कीरत माणी कोड सूं, भल रह नै कुरु भाण।
गौरव परमारां घणौ, अवरु उजाळी आण।।

भारत भोम सूरा अर सतवादिया री अकूंत कीरत रै अैनाणां सूं अटी पड़ी है। इतियास, कळा, संस्कृति रै झरोखा सूं वीरता, त्याग–बलिदान, अध्यात्म अर लोक–कल्याण री गरबजोग परम्परा नै आपां देख सका। इतियास साहित्य अर संस्कृति मांय परमार वंस रा जुझारां–संता आर सापुरसां री जसगाथा रौ शंखनाद सिरी संग्राम सिंह सोढ़ा री कृति 'पराक्रमी परमारां रौ प्रकास' मांय सुरु सूं लेय राजा चंदन नै रंग देवता दूहा तांई सुणीजै।

सत से कर समापियो, राजा चंदन रंग।

छप्पन पृस्ठां री आ पोथी वामन डग भरै। इणरा ऊजरा आखरां नै पढ़तां पाठक री छाती गरब–अंजस सूं फली रैवै। कवि अपभ्रंस सूं लेय'र आज लग चालती दूहे री मोकळी परम्परा मांय मध्यकालीन मोत्यां मूंघा परमार वंसीय मानवीयां रै अखै जस नै डिंगरू री ओज गुण अर वीर रस स्यूं पूरित सहज सरल भासा मांय ऐड़ा रंग दिया है कै रगत री अेक–अेक कोसिका परमांरा रै जस–तेज री हूंस मांय उफाण मारै–

शौर्य वापरे जस सुण्याँ, अंजस उपजे ओय।।

पोथी री सुरुआत परमार वंसीय कुळ देवी हरसिद्धि जकां रै पाण 'तपै भाण धर तेज' अर 'दीपै अखण्ड ऊजळो' री आराधना सूं करीजी है। कवि परमार सांपां रा लोक देव अर कुल देवीयां रा विरद हिये स्यूं उपजाया है। देवी कालिका, माल्हणदे, सगळा री सहाय सचियाय, सिद्ध सिरोमणी पिथरोजी, संत जांभोजी, हड़बूजी, सीहड़ जी स्यू लेयर अमोलक रतन विक्रमादित्य, राजा भोज, दाता री जगदेव, वीरनारायण परमार अर नवापुरा रा श्री विजयसिंह रणधीर सिंह लग वीरां नै घणा–घणा रंग दिया है तौ सागै ही परमार रामरख सुता अजबदे बिजोलिया रौ सुजस भलै आखरा गायौ है–

'इळा उजारी अजबदे, मिल कुळ राखण नाम।'

राजस्थानी रै व्हालै दूहा छंद मांय भाव भिज्या सबदां सूं परमारां रौ पराक्रम, वां री दातारी, गरिमा, संस्कृति, कळा–साहित्य री गरब जोग ओळखाण करावण में श्री संग्राम सिंह सोढ़ा री आ पोथी सफल हे। बकौल रचनाकार आ कृति वां री अप्रकासित पोथी 'सो धरती सोढाण' री पूर्व पीठिका है। सुधी पाठकां नै इण कृति री उडीक रैसी। कवि मुजब 'रग–रग में साहित रमै' परमारां री इणी भांत री कीरत ख्यात नै घणा करा ज्ञात–अज्ञात विद्वानां वाणी दीवी है, जिणनै कवि परिसिष्ट पेटै इण पोथी में सामल कर'नै इण री महत्ता बढ़ाई है।

कवि दाखळी देवै–'प्रिथमी बडा परमार', प्रिथमी परमारां तणी अर 'परणीजै सारी प्रिथी, गाइजै सोढाह' अै उक्तियां परमारां सोढा रै गौरव नै गिगना चढावै। परमारां रै जस साख भरती देवी हरसिद्धि, धारा नगरी री देवी कालिका सगती रूप मांय आज भी आखौ संसार निरखै–

करै भली मां कालिका, सैण निरख संसार।

कवि रौ मन संकट–अबखी वेळा मांय करण आळी, भव सूं तारण आळी मां कालिका नै लगोलग निरखणौ चावै–

मात बिराजै माळबै, म्है बसिया परदेस।
पाँख लगा दे सांवरा, हलै निरखां हमेस।।

कवि सिंध री घाट धरा गांव मांहदोड़ा मांय जलमिया अर जोगण माल्हण दे जानराय नै आज भी हियै सूं नित नमन करै। परमारां कुरु मांय प्रगट नै सगती सरुपा माल्हण दै 'मगरे' नै चहुँखूटां बिड़दायो–

परमारां कुळ प्रगट नै, मही बणी महमाय।
ध्यावै दिल सूं घाट रा, हरयारी हरखाय।।

विक्रमादित्य सताईसी मांय कवि बिड़दावै कै किण भांत कण–कण मांग परमारां रा कीरत पुरुस विक्रमादित्य जका गुणां री खान, प्रजा वत्सल, नव संवत चलावण आळा, विक्रमादित्य उज्जैण अर भारत ई नी आखै जगत मांय विख्यात हुआ। इणी भांत भोज परमार रौ जस आखै भारत अर विस्व खण्ड मांय ईलम साधक अर सुरसत सुत रूप मांय गाइजै–

रवि ज्यूं विक्रम राजवी, अवल राख अखियात।
उज्जैणी चाढी अवल, हुवौ विस्व विख्यात।।
भलौ भोज भव भागियौ, महि मंडायौ मान।
विद्या बांटी बोहळी, इळ मेरण अग्यान।।

अदियादित्य रा छोटा बेटा जगदेव परमार जगत मांय त्याग अर दानवीर सूरवीर महिपति रै बिड़द–जस मांय गाइजै। सोलंकी कुरु री शान जगदेव जाड़ेची राणी नै भैरव संताप सूं भुगत करावै, जयसिंह री आयु बढ़ावै। अर कंकाळी नै सीसदान करनै दातारी में घणौ ऊँचौ थरपीजै–

माँ अंजसी घण मोद सूं, देख्यौ सुत रौ दान।
जगदेवै राखी जगत, सोलंकी कुळ शान।।

आखै जगत मांय ऐड़ी कोई मिसाल नी मिळै जेड़ी संत जांभोजी (पंवार) री सीख अर थरपीज्योड़ा गुणतीस नियमा री पालणा करता थका जीव दया धरम री साख भरता पेड़ां खातर सीस रा सीस कटा दिया। लोहट जी री लाज राखता परेम रौ, पवितरता रौ पाहळ सूं आखै मिनख समाज अर जीव मात्र री रुखारु संत जांभोजी करी। कवि रै सबदां मांय–

हेत हुलस हिरणा तणौ, रूंखाँ हन्दी रीझ।
दया धरम दिल में घणी, हिंसा माथै खीज।।

कवि संग्राम सिंह सोढ़ा री कलम बाण बगती आसलदेव परमार, वीर नारायण परमार, वीरांगना अजबदे परमार अर मोकळा परमार जुझारां अर ख्याति प्राप्त खांपा रै सिरदारा रौ सूरापण, दातारी अर भलम नसाहत जकि सदिया पाछौ भी मिनख नै सद्मारग अर करमखेत मांय जुटणै री हूंस बधावै, चाए बारड़ रा परमार हुवौ या काबां परमार या सोढाण रा सूर सपूत कवि री कलम आ धरती पुत्र अर वीरांगनावां नै लगोलग घणा रंग दिया है।

कवि संग्राम सिंह जी री लेखणी लखदाद है। आप री कूंची सूं सोढे जूझार सिंह महासिंह चेलार, सूरवीर देवी सिंह परमार, कुंतलपुर, सुतन्तरता सेनानी अर गेमरसिंह हठेसिंह आद वीरां रौ सुजस गाइज्यौ है अर सुधी विद्वानां, पाठकां–शोधार्थिया सामी आयौ है इण सूं आ गौरव गाथा, जस गीत परम्परा लोक निजरां सामी आई है। वीरता रै आं दूहा रौ भाव सौन्दर्य ठेठ हियै तांई पूगै अर गरब सूं माथौ ऊँचौ हुवै।

अरिहंत प्रकासन जोधपुर सूं प्रकासित इण पोथी रौ आवरण विसय मुजब फूटरौ अर अैतिहासिक धरोहर नै सामी राखै। पोथी री छपाई सखरी अर फबूती है। सिरी मनोहर सिंह जी राठौड़ री महताऊ भूमिका अर कवि री आपणी बात पोथी नै अमोलक अर शोधार्थियां खातर मैताऊ बणावै। इतियास, साहित्य अर संस्कृति रा रूखाळा श्री संग्राम सिंह जी नै हियेतणी मोकळी बधाई अर घणा–घणा रंग–

परमारां रौ पिरथिपर परमार्थ प्रकास।
अम्ब जगदेव रौ इसो, आछो है इतिहास।।

समीक्षक : **अशोक कुमार व्यास**, व्याख्याता
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (IASE)
बीकानेर (राज.)
मो. 9079756963

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

वार्षिकोत्सव एवं पूर्व विद्यार्थी समागम का हुआ आयोजन

जयपुर- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय समेलिया, फागी में राज्य सरकार की अभिनव पहल के तहत वार्षिकोत्सव कार्यक्रम 'अभ्युदय-2023' का आयोजन धूमधाम से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी फागी श्री भगवान सहाय शर्मा व अध्यक्षता संस्थाप्रधान श्री अवधेश कुमार चौधरी ने की। कार्यक्रम के दौरान भामाशाहों का सम्मान, पूर्व विद्यार्थियों का सम्मान, बोर्ड परीक्षा परिणाम में अच्छे अंक लाने वाले विद्यार्थियों का सम्मान, SUPW कैंप के दौरान विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। ग्राम पंचायत सरपंच द्वारा विद्यालय में 03 लाख की लागत से शौचालय निर्माण की घोषणा की गयी व स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा विद्यालय परिसर में माँ सरस्वती के मंदिर निर्माण की घोषणा की गयी व कार्यक्रम के दौरान ही उपस्थित जनसमुदाय से इस बाबत 40,000/- रुपये की राशि एकत्र की गयी।

विद्यालय में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

अजमेर- महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) वैशाली नगर अजमेर के भव्य वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह 'Ventura-2023' का आयोजन 25 जनवरी, 2023 को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के राजीव गाँधी सभागार में किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव श्री महेन्द्र सिंह रलावता के मुख्य आतिथ्य एवं श्री गजेन्द्र सिंह रलावता के विशिष्ट आतिथ्य एवं जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक श्री अनिल कुमार जोशी की अध्यक्षता में सरस्वती वंदना के साथ हुई। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा 'English Skit' एवं वर्तमान परिदृश्य में मोबाइल के बढ़ते प्रभाव पर आधारित 'Musical Act- Adverse effect of Smartphones' रहा। कार्यक्रम में राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम रहे सभी छात्र-छात्राओं को मुख्य अतिथि द्वारा स्मृति चिह्न तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ

बाड़मेर- डॉ. भीमराव अंबेडकर फाउण्डेशन (अम्बेडकर पीठ) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग जयपुर द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता 'राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता में डॉ. अम्बेडकर का योगदान' विषय पर भाग लेकर शाह जैसमल भीमराज गोलेच्छा रा.उ.मा.वि. बालोतरा (बाड़मेर) की कक्षा दशम की छात्रा चंचल जाटोल पुत्री श्री गोपीकिशन ने जिले की मेरिट में प्रथम स्थान प्राप्त कर राजस्थान सरकार द्वारा देय 2100 रुपये का नकद पुरस्कार प्राप्त कर विद्यालय का नाम राज्य स्तर पर रोशन किया। छात्रा चंचल जाटोल 27 फरवरी, 2023 को राज्य स्तर पर आयोजित होने वाली निबंध प्रतियोगिता में चयन होने पर 'महिला उत्थान में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका' विषय पर भाग लेने हेतु जाएगी।

भामाशाह ने विद्या सागर सभागार किया विद्यालय को भेंट

टोंक- श्रीमान सुरेश चन्द अग्रवाल निवासी दूनी, देवली, जिला टोंक ने अपने पूजनीय पिताजी स्व. श्रीमान् नाथूलाल जैन एवं पूजनीया माताजी स्व. श्रीमती कंचन देवी जैन की पुण्य स्मृति में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दूनी, ब्लॉक देवली, जिला-टोंक में 'विद्या सागर सभागार' का निर्माण करवाकर विद्यालय को सप्रेम भेंट किया। इनकी शिक्षा के प्रति रुचि, श्रमनिष्ठता, कर्मठता, सदैव अनुकरणीय रहेगी। आप पोस्टमास्टर से सेवानिवृत एवं सहृदयी समाज सेवक हैं। सभागार 25 गुणा 50 फीट आकार का है। इसकी लागत 15,11,111/- रुपये (पन्द्रह लाख ग्यारह

Rajshiv Education Department
सत्यमेव जयते

हजार एक सौ ग्यारह) है। सभागार का लोकार्पण माँ सरस्वती का पूजन कर मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रकाश जी एवं गुरु माता श्रीमती मीनू देवी माननीय संचालक जागृति व्यक्ति विकास फाउन्डेशन, टोंक के कर कमलों एवं प्रधानाचार्य श्री भंवरलाल कुम्हार की अध्यक्षता में दिनांक 22 जनवरी, 2023 रविवार को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भामाशाह श्री सुरेशचन्द अग्रवाल- श्रीमती चन्द्रकला जैन, भाई मुन्नालाल अग्रवाल-गीता देवी जैन, रमेशचन्द जैन-पदमा देवी जैन एवं परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में श्रीमान् मोती लाल ठागरिया मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी देवली, एसएमसी/एसडीएमसी सदस्य, शाला परिवार एवं दूनी के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। शाला परिवार द्वारा भामाशाह, उनके परिवार एवं परिजनों का तिलक, अक्षत, माल्यार्पण, साफा, शॉल, स्मृति चिह्न, प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मान, स्वागत एवं आभार प्रकट किया गया। श्री प्रकाश जी द्वारा प्रकृति एवं मनुष्य जीवन विषय पर व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम में भामाशाह द्वारा परिजनों, शाला परिवार एवं गणमान्य व्यक्तियों हेतु सामूहिक भोज का आयोजन भी किया गया।

मेरा विद्यालय मेरा अभिमान कार्यक्रम

जालोर- श्रीमान निशांत जैन, जिला कलक्टर महोदय जालोर के द्वारा जालोर जिले में किए जा रहे नवाचार 'मेरा विद्यालय मेरा अभिमान' के तहत रा.उ.मा.वि. बिशनगढ़ (सायला) में नो बैग डे पर विद्यार्थियों के आई टेस्ट, हीमोग्लोबिन टेस्ट, ब्लड ग्रुप जाँच, पेयजल टाँकों की सफाई, शौचालय व विद्यालय परिसर की साफ-सफाई, वेस्ट से बेस्ट का निर्माण, गीत, संगीत, चित्रकला, भाषण, वाद-विवाद व सृजनात्मक प्रतियोगिता व शतरंज व अन्य आनन्ददायी खेलों का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रधानाचार्य सरदार सिंह चारण ने बताया कि नो बैग डे की आयोजित गतिविधियों का एसडीएमसी सदस्यों ने भी अवलोकन कर नवाचार की प्रशंसा की तथा इसे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु बहुत ही अच्छा नवाचार बताया।

विश्व चिंतन दिवस का आयोजन

बूँदी- स्काउटिंग के जनक लार्ड बेडेन पावेल का जन्म दिवस पूरे विश्व में विश्व स्काउटिंग दिवस व चिंतन दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर विद्यालय में सर्व धर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया जिसमें प्रातः स्मरामि, राम धुन, नाम धुन, वैदिक प्रार्थना, मौन प्रार्थना, स्वस्ति वाचन, हम होंगे कामयाब, हर देश में तू, चल चल रे राही आदि गीतों एवं भजनों के माध्यम से प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। विद्यालय के यूनिट लीडर जितेन्द्र शर्मा, स्काउट्स योगेश कुमार, विजय प्रजापत, विमलेश मीणा ने इस अवसर पर इको क्लब वाटिका में

वृक्षारोपण किया तथा स्काउट को सार संभाल की जिम्मेदारी दी। इस अवसर पर विद्यालय में छात्र-छात्राओं द्वारा सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थाप्रधान जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि स्काउटिंग विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है जो 218 से भी अधिक देशों में संचालित है। बेडेन पावेल के जीवन से हमें ईश्वर, देश और स्वयं के कर्त्तव्यों को यथाशक्ति से करने की प्रेरणा मिलती है।

शिक्षक पंचाल ने शुरू किया ऑपरेशन नीड़ अभियान

उदयपुर- गर्मी शुरू होते ही हमारे आस-पास पक्षी अपना घोंसला बनाने के लिए इधर उधर उड़ते रहते हैं। पक्षियों को विशेषकर गौरैयों को घोंसले में रहना पसंद है। पक्षियों को अपना बना बनाया घोंसला मिले। इस सपने को साकार करने के लिए स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल रानीवाड़ा के शिक्षक रमेश कुमार पंचाल ने ऑपरेशन नीड़ अभियान की शुरुआत की। शिक्षक पंचाल ने अपनी कला से छोटे-छोटे कृत्रिम घोंसले बनाए हैं। घोंसले बनाने का कार्य उन्होंने फरवरी माह से ही अपने घर पर प्रारंभ कर दिया था। शिक्षक ने मोटे कागज के गत्ते से डिजाइनदार छोटे छोटे लगभग एक सौ घोंसले बनाए हैं। उनका इनके अलावा भी और घोंसले बनाने का इरादा है। साथ ही लोगों को प्रेरित करते हुए इस अभियान से जोड़कर पक्षियों के लिए घोंसले बनाने का संकल्प लिया है। अभियान की शुरुआत रानीवाड़ा उपखण्ड अधिकारी कुसुमलता चौहान द्वारा उपखंड कार्यालय परिसर में घोंसला स्थापित करके की गई। चौहान ने इस अभियान की सराहना करते हुए लोगों को इस अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इसके अलावा कई कार्यालयों में जाकर अधिकारियों को भी घोंसले भेंट किए जाएंगे। मॉडल स्कूल में भी सभी शिक्षक साथियों को घोंसले भेंट करके पक्षियों को बचाने का संकल्प लिया गया। उनकी यह मुहिम पिछले दस सालों से अनवरत जारी है। उन्होंने बचपन में कई गोरैयों को घोंसला बनाने की जुगत में अपने घर में उड़ते हुए देखा है। उड़ते उड़ते गौरैया कई बार छत पंखे से टकराकर अपनी कुर्बानी दे देते हैं। उस समय हर किसी का दिल पसीज जाता है। तब से उन्होंने सोचा कि क्यों न हम इन पक्षियों की जान बचाकर उनका सहारा बने। उनके द्वारा घोंसले बनाने के अभियान में कई लोगों को जोड़ना है। ताकि लोग अपने मन में दयालुता का भाव रखते हुए पक्षियों का सहारा बने। हमें पक्षियों के घोंसले बनाने के साथ दाना पानी की व्यवस्था करनी चाहिए। इनका कहना है प्रत्येक व्यक्ति को अपने पेशेवर कार्य के अलावा भी सामाजिक सरोकारों के साथ ही कई अन्य पुण्य के कार्य भी करने चाहिए। हमें मूक प्राणियों की सेवा करने में आगे आना चाहिए।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कूंजेला, नादौती, करौली

❒ हंसराज मीना

पृष्ठभूमि:–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कूंजेला, ब्लॉक–नादौती (करौली) सन् 1937 में प्राथमिक विद्यालय के रूप में आजादी के पूर्व से स्थापित है। करौली जिले के नादौती ब्लॉक के गाँव कूंजेला जो आबादी को लेकर क्षेत्र का सबसे बड़ा गाँव है। यह विद्यालय गाँव के पूर्वी भाग में स्थित है जो देखा जाए तो गाँव की गोद में बसा हुआ है। इस विद्यालय की स्थापना अंग्रेजी शासन काल में सन् 1937 में प्राथमिक विद्यालय पाठशाला के रूप में नींव रखी गई है जो सत्र 2014–15 में उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत हुआ है।

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर:– सर्वप्रथम गाँव के पंच पटेलों ने 3,05,000/– रुपये का आर्थिक सहयोग दिया जिससे मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजनान्तर्गत विद्यालय के 7 कक्षा–कक्षों को मरम्मत कार्य करवाया। माननीय विधायक महोदय द्वारा 20 लाख रुपये के योगदान से 21×25 के 02 कक्षा–कक्षों का निर्माण करवाया गया। 26 जनवरी, 2022 को भामाशाहों ने 8 लाख रुपये का सहयोग देकर ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना के माध्यम से कुल 20 लाख रुपये की मदद से 02 अतिरिक्त कक्षा–कक्षों का निर्माण कार्य प्रक्रियाधीन है। सभी कक्षा–कक्षों एवं विद्यालय परिसर में राशि रुपये 1.25 लाख की लागत से सम्पूर्ण परिसर में सीसीटीवी कैमरे लगवाए गए। विभाग एवं भामाशाह के सहयोग से विद्यालय में स्मार्ट कक्षा का संचालन हुआ। विद्यालय स्टाफ एवं विद्यार्थियों के लिए 2,00,000/– रुपये की लागत से क्रियाशील शौचालय एवं मूत्रालयों का निर्माण करवाया। भामाशाह श्री लाल मीना सेवानिवृत्त अध्यापक द्वारा 50,000/– रुपये की लागत से पानी की टंकी का निर्माण करवाया गया। 2 लाख रुपये की लागत से भामाशाह ने सभी कक्षा के लिए फर्नीचर उपलब्ध करवाया। विद्यालय में आज सारी भौतिक सुविधाएँ

Rajasthan Education Department

उपलब्ध है जिसमें फ्रिजर, ऑटोमैटिक वेल, ग्रीनबोर्ड, आदर्श वाक्य बोर्ड, सौफा सैट, पर्दे एवं अभी हाल ही में ग्राम पंचायत की ओर से 6 लाख रुपये की लागत से विद्यालय परिसर में इन्टर लॉकिंग कार्य करवाया गया। रामनिवास मीना प्रधानाचार्य महस्वा निवासी कूंजेला के द्वारा 1.25 लाख रुपये की लागत से माँ सरस्वती मंदिर व मूर्ति का अनावरण विद्यालय परिसर में करवाया गया।

विद्यालय नामांकन–उपखण्ड क्षेत्र का आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा गाँव माना जाता है। जिसमें लगभग 700 घरों की बस्ती है। यहाँ पर नौकरी पेशे वाले व्यक्तियों की संख्या अधिक होने से अधिकांश परिवार बाहर शहरों में निवास करते हैं फिर भी जब मैंने कार्यग्रहण किया था उस समय विद्यालय का नामांकन सत्र 2020–21 में 160 था जो निरन्तर बढ़ता हुआ सत्र 2021–22 में 503 हुआ और आज विद्यालय का नामांकन 490 है। आगामी सत्रों में विद्यालय का नामांकन का लक्ष्य 700 करना है।

सहशैक्षिक गतिविधि:– विद्यालय के सम्पूर्ण स्टाफ सदस्यों द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ सहशैक्षिक गतिविधियाँ भी सत्र पर्यन्त चलती रहती हैं जिसमें खेल–कूद, नृत्य, निबंध लेखन, गीत–गायन, पोस्टर, प्रश्नोत्तरी वार्तालाप प्रतियोगिता का आयोजन समय–समय पर करवाया जाता है। विद्यालय स्तर पर छात्र संसद, मीना मंच, राजू मंच, ईको क्लब, लक्ष्मी बाई क्लब के नाम से कई मंचों का गठन कर रखा है जिसमें आए दिन अनेक प्रकार की गतिविधियाँ विद्यार्थी विकास के लिए आयोजित होती रहती है।

भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न हमारा विद्यालय:–विगत दो वर्ष पूर्व विद्यालय में भौतिक सुविधा के नाम पर कोई साधन उपलब्ध नहीं थे लेकिन आज इस विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए वाटर कूलर, स्टाफ फ्रिजर, क्रियाशील शौचालय एवं मूत्रालय, सभी कक्षा–कक्षों में सीसीटीवी कैमरे, अत्याधुनिक स्टेज, पेयजल टंकी, वॉलीवॉल कोर्ट, छात्रों के लिए फर्नीचर, खेल उपकरण, ग्रीन बोर्ड, आदर्श वाक्य लेखन बोर्ड, स्मार्ट कक्षा, सभी कक्षा–कक्षों में विद्युत सुविधा एवं पंखे, खेल उपकरण, ऑटोमैटिक वेल इत्यादि सुविधाएँ उपलब्ध है।

पर्यावरण संरक्षण:– हरियाली किसी भी परिसर की सुंदरता में चार चाँद लगाने का काम करती है तो इस दृष्टि से भी यह विद्यालय पर्यावरण संरक्षण का अनूठा उदाहरण है। विद्यालय स्टाफ के सहयोग से परिसर में लगभग 100 पौधें लगाए गए जिनमें आयुर्वेदिक औषधीय, फलदार एवं फुलवारी आदि कई किस्में लगाई गई हैं। बड़ी संख्या में पौधों की

वजह से यह विद्यालय किसी हरित वाटिका से कम नहीं है। पेड़ पौधों से युक्त हरियालीमय वातावरण परिवेश में एक तरह का आनन्द भरता है जिससे विद्यार्थी भी सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण रहते हैं।

खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन :– स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क को जन्म देता है इस उक्ति को आत्मसात करते हुए विद्यालय में समय–समय पर खेल–कूद गतिविधियों का आयोजन संकाय सदस्यों द्वारा करवाया जाता है। विद्यालय की टीम जिला एवं विद्यालय स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करती रही है।

प्रधानाचार्य की कलम से– मैंने संस्थाप्रधान के रूप में 07 जनवरी, 2021 को कार्यग्रहण किया। जब मैंने इस विद्यालय में कार्यग्रहण किया था उस समय विद्यालय की शैक्षिक एवं भौतिक गतिविधि पूर्ण रूप से बाधित थी। जहाँ भौतिक गतिविधि को लेकर कहा जाए तो विद्यालय परिसर चारों ओर से खुला था। विद्यालय की चारदीवारी नहीं होने की वजह से परिसर में आवारा पशुओं का आश्रय स्थल बना हुआ था। कक्षा–कक्ष जमींदोज थे एवं विद्यालय का पानी बारिश के दिनों में कहीं निकासी नहीं होने से परिसर पूरी तरह टापू बना रहता था और शैक्षिक गतिविधियाँ इतनी अच्छी तो नहीं कह सकते क्योंकि बच्चों का नामांकन 160 था। कक्षा 12 का परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत रहता था लेकिन गुणवत्ता नहीं थी जबकि दसवीं का परीक्षा परिणाम विगत तीन सालों से 33 प्रतिशत था। मैंने हर समस्या को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया और धीरे–धीरे विद्यालय की भौतिक और शैक्षिक गतिविधियों में पूरी तरह से आमूल चूल परिवर्तन किया। सभी स्टाफ सदस्य एवं ग्रामीण भामाशाहों के सहयोग से धीरे–धीरे विद्यालय का सम्पूर्ण ढाँचा पूरी तरह से बदल दिया।

विद्यार्थियों का नामांकन जहाँ 160 था, वहीं आज विद्यालय में 500 विद्यार्थी अध्ययनरत है। विगत सत्र का सम्पूर्ण बोर्ड कक्षाओं का परीक्षा परिणाम शत–प्रतिशत था साथ ही गुणवत्ता से युक्त था जिस समय मैंने कार्यग्रहण किया उस समय विद्यालय एक स्टार था लेकिन आज 4 स्टार है। एक संस्थाप्रधान होने के नाते मेरे लिए संस्था के कार्य ही प्रधान रहे और विद्यालय की भौतिक और शैक्षिक गतिविधियों को सुचारू बनवाने के लिए हर संभव प्रयास किया जिसका परिणाम यह रहा है कि आज विद्यालय में भामाशाह और दानदाताओं की आर्थिक मदद के चलते 70 लाख रुपये के भौतिक और शैक्षिक कार्य करवाए जा चुके है।

संस्थाप्रधान
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कूंजेला,
तह.–नादौती, जिला–करौली (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह–फरवरी 2023 में 50000 एवं अधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	Surana Foundation	Mahatma Gandhi Govt. School Baniya Bass Gopalpur (405581)	Sujangarh	Churu	4116000
2	Trilok Chand Jat	Govt. Senior Secondary School Aabsar (215463)	Sujangarh	Churu	426300
3	Madan Lal	Govt. Senior Secondary School Jagmalpura Sikar (213386)	Piprali	Sikar	375000
4	Doctor Madhav Singh	Govt. Senior Secondary School Jagmalpura	Sikar	Sikar	375000
5	Raghubir Singh	Shahid Hanuman Singh Govt. Senior Secondary School Shishiyan (215646)	Jhunjhunu	Jhunjhunu	320000
6	Satyam Motors Balrai Pali	Govt. Girls Senior Secondary School Daulatpura (213380)	Piprali	Sikar	300000
7	Mada Natha Rebari	Govt. Upper Primary School Dhani Ghatau (502557)	Dovda	Dungarpur	300000
8	Jagdish Prasad Bhanwaria	Govt. Senior Secondary School Lalasi (213222)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	300000
9	Sant Kumar	Govt. Senior Secondary School Lalasi (213222)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	300000
10	Shiv Dayal Singh	Govt. Senior Secondary School Lalasi (213222)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	300000
11	Sushil Dhayal	Shaheed Rajeskumar Govt. Senior Secondary School Jhanjhot (215819)	Chirawa	Jhunjhunu	300000
12	Subhash Khayalia	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	350000
13	Indra Devi	Govt. Upper Primary School Bajisar (478899)	Mandawa	Jhunjhunu	251000
14	Vishnu Kumar	Govt. Senior Secondary School Dhani Asha (215171)	Taranagar	Churu	250000
15	Aero Plast Ltd	Govt. Senior Secondary School Suratpura (212406)	Bhadra	Hanumangarh	217000
16	Ankitha	Govt. Senior Secondary School Jindras (222358)	Asind	Bhilwara	200000
17	Dr Suresh Kumar Dhaka	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	200000
18	Dr Sunil Kumar Meel	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	200000
19	Raju Ram Khadaw	Govt. Girls Senior Secondary School Khinwsar (500176)	Khinwsar	Nagaur	118000
20	Sanwal Ram Pindel	Govt. Senior Secondary School Tanavada	Jodhpur	Jodhpur	101000

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

21	Sandeep Meel	Govt. Senior Secondary School Lalasi (213222)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	101000
22	Sanjay Kumar Khichar	Gvu Sanskrit School Ludi Jhabar (215227)	Rajgarh	Churu	100000
23	Ram Kumar Singh	Govt. Senior Secondary School Meharadasi (211569)	Mandawa	Jhunjhunu	100000
24	Om Prakash Sharma	Govt. Senior Secondary School Suroth (212499)	Hindaun	Karauli	100000
25	Vimala	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	100000
26	Gori Shankar	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	100000
27	Tara Singh Ruhela	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	100000
28	Khemani Welfare Foundation	Smt. Nani Bai Jaipuria Govt. Girls Senior Secondary School Mandawa (211585)	Mandawa	Jhunjhunu	100000
29	Jaypal Meel	Govt. Senior Secondary School Lalasi (213222)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	100000
30	Mahendra Singh	Govt. Senior Secondary School Thorasi (227432)	Dhod	Sikar	100000
31	Asa Ram Jat	Shaheed S.i. Hemraj Sharma Govt. Senior Secondary School Mamroda (219792)	Deedwana	Nagaur	100000
32	Tara Singh Ruhela	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	100000
33	Kana Ram	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	99000
34	Dimple	Govt. Senior Secondary School 8 Sds (211977)	Sadulshahar	Ganganagar	90000
35	Ramesh Chand Sharma	Mahatma Gandhi Govt. School Jhiwana (215073)	Tizara	Alwar	84000
36	Vijendra Kumar Sharma	Gups Girls Dhani Panchera	Sardarshahar	Churu	80000
37	Ramdev Singh	Govt. Senior Secondary School Binjasi (213242)	Dhod	Sikar	80000
38	Shyama Ram	Govt. Upper Primary School Rampura B (477029)	Jayal	Nagaur	80000
39	Sanjay Kumar Meena	Govt. Senior Secondary School Bachhola (221636)	Nainwa	Bundi	80000
40	Udaram Vishnoi	Govt. Upper Primary School Madawa (498447)	Fagliya	Barmer	75000
41	Suresh Kumar Khyaliya	Govt. Upper Primary School Deeppura Charnan (488242)	Dhod	Sikar	71000
42	Ami Chand	Govt. Senior Secondary School Ghadsisar (215338)	Sardarshahar	Churu	70000
43	Aditya Vijay	Govt. Senior Secondary School Awan (216710)	Sangod	Kota	68500
44	Ramavatar Sharma	Govt. Senior Secondary School Padalwas (217032)	Nagar	Bharatpur	65000
45	Heera Ram	Govt. Primary School Khanedi Nadi Nainol (408731)	Sarnau	Jalor	63060
46	Atmaram Tak	Govt. Senior Secondary School Gajoo (220003)	Mundwa	Nagaur	63000
47	Gagdish	Shahid Rajendra Singh Poonia Govt. Upper Primary School Sardarpura (420030)	Rajgarh	Churu	62300
48	Baldev Singh Punia	Smt.banarsi Devi Bagdodia Govt. Senior Secondary School Bagdoda (213142)	Fatehpur	Sikar	61000
49	Bhadana Constructions	Govt. Senior Secondary School Pagara (214323)	Pisangan	Ajmer	61000
50	Sita Ram Jakhar	Govt. Senior Secondary School Chhajusar (215304)	Sardarshahar	Churu	61000
51	Meena	Govt. Upper Primary School Dhandhal Shera (406690)	Rajgarh	Churu	60800
52	Saroj Wati	Govt. Upper Primary School Pantharia (465369)	Pilani	Jhunjhunu	60000
53	Balran Meena	Govt. Senior Secondary School Bhukha (212818)	Malarna Doongar	Sawaimadhopur	60000
54	Mala Ram	Govt. Girls Senior Secondary School Khinwsar (500176)	Khinwsar	Nagaur	60000
55	Shrilal Akheriya	Govt. Primary School Khatoli (418246)	Chhabra	Baran	60000
56	Rajni Shekhawat	Mahatma Gandhi Govt. School Bjs Jodhpur (220398)	Jodhpur City	Jodhpur	60000
57	Ramniwas Jangir	Govt. Senior Secondary School Ramsara Tal (215191)	Rajgarh	Churu	55000
58	Surendra Kumar Baliwal	Govt. Senior Secondary School Malsar (215636)	Jhunjhunu	Jhunjhunu	54000
59	Naina Ram	Govt. Senior Secondary School Tanavada	Jodhpur	Jodhpur	53000
60	Jai Singh Chahar	Govt. Senior Secondary School Phogari (219808)	Molasar	Nagaur	51111
61	Suresh Chandra Sharma	Govt. Senior Secondary School Gothada (224781)	Dhariyawad	Pratapgarh	51000
62	Jaswant Singh Poonia	Govt. Senior Secondary School Satyun (215174)	Taranagar	Churu	51000
63	Teekaram Meena	Govt. Senior Secondary School Bhukha (212818)	Malarna Doongar	Sawaimadhopur	51000
64	Sahiram	Shaheed Istiyak Ahmed And Seth Phoolchand Jalan Govt. Senior Secondary School Nua (211558)	Mandawa	Jhunjhunu	51000

Rajasthan Education Department

65	Dinesh Kumar	Govt. Senior Secondary School Bharu (211573)	Mandawa	Jhunjhunu	102000
66	Kamal Meena	Govt. Senior Secondary School Ranwal (217913)	Sawai Madhopur	Sawaimadhopur	51000
67	Santosh	Gvu Sanskrit School Ludi Jhabar (215227)	Rajgarh	Churu	51000
68	Iliyas Khan	Govt. Senior Secondary School Nimbi Khurd (219800)	Deedwana	Nagaur	51000
69	Harveer Singh Jakhar	Govt. Senior Secondary School Lalasari (219790)	Deedwana	Nagaur	51000
70	Padma Ram	Govt. Senior Secondary School Lachhari (213478)	Ladnun	Nagaur	51000
71	Sulochana Kumari	Govt. Senior Secondary School Gokulpura (213394)	Piprali	Sikar	51000
72	Sahiram	Shaheed Istiyak Ahmed And Seth Phoolchand Jalan Govt. Senior Secondary School Nua (211558)	Mandawa	Jhunjhunu	51000
73	Sharwan Kumar Bunkar	Govt. Senior Secondary School Banuda (213307)	Dantaramgarh	Sikar	51000
74	Manphool Singh	Govt. Senior Secondary School Pardoli Bari (213270)	Dhod	Sikar	51000
75	Khemchand Sharma	Govt. Upper Primary School Kakala (467342)	Nadoti	Karauli	51000
76	Dalip Singh	Sahid Mukhram Budania And Sahid Dharamveer Singh Govt. Senior Secondary School Deenwa Ladkhani (213143)	Fatehpur	Sikar	51000
77	Rahish Kumar	Govt. Senior Secondary School Singhana (215903)	Singhana	Jhunjhunu	51000
78	Nitin Kumar Mehara	Govt. Primary School Panchpipali (474205)	Manoharthana	Jhalawar	51000
79	Dharm Pal Singh	Govt. Senior Secondary School Chandpur (216288)	Mundawar	Alwar	51000
80	Chiranji Lal	Govt. Senior Secondary School Banota (464623)	Sawai Madhopur	Sawaimadhopur	51000
81	Nanulal Charpota	Govt. Senior Secondary School Bhatar (214965)	Arthuna	Banswara	51000
82	Ramji Lal Meena	Govt. Upper Primary School Ramjanganj (490020)	Uniyara	Tonk	51000
83	Naresh Kumar	Govt. Upper Primary School Kaman (411092)	Rajgarh	Churu	51000
84	Ganga Ram	Govt. Senior Secondary School Pamana (213710)	Sanchore	Jalor	51000
85	Parvati	Shaheed Gyan Singh Govt. Upper Primary School Patti Dobariya (500981)	Makrana	Nagaur	51000
86	Rajendra Kumar Mishra	Govt. Upper Primary School Ups Girdharpura (400604)	Lawan	Dausa	50500
87	Sanjeev Kumar	Govt. Senior Secondary School Ramdevra (215381)	Churu	Churu	50000
88	Tilak Raj Bhati	Govt. Senior Secondary School Ghughra Ajmer (214275)	Ajmer Rural	Ajmer	50000
89	Ashok Kumar Poonia	Shaheed Ranjit Singh Govt. Senior Secondary School Neema (215252)	Rajgarh	Churu	50000
90	Seema Trivedi	Mahatma Gandhi Govt. School Rohat (221202)	Rohat	Pali	50000
91	Sodan Lal Meena	Govt. Senior Secondary School Jalindri (222661)	Bijoliya	Bhilwara	50000
92	Vishnu Dev Bishnoi	Govt. Senior Secondary School Pheench (219628)	Dhawa	Jodhpur	50000
93	Aceanalytics Private Limited	Govt. Girls Senior Secondary School Gurudwara Rani Bazar (211236)	Bikaner	Bikaner	50000
94	Chitra Pandey	Shaheed Ajay Ahuja Govt. Senior Secondary School Bhimganjmandi (216777)	Kota	Kota	50000
95	Vimala	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	100000
96	Ps Logistics	Govt. Senior Secondary School Achhapur (215240)	Rajgarh	Churu	50000
97	Mukesh	Govt. Upper Primary School Padampura Sanwreej (481084)	Phalodi	Jodhpur	50000
98	Dhara Singh Meena	Govt. Senior Secondary School Banota (464623)	Sawai Madhopur	Sawaimadhopur	50000
99	Banwari Lal Saini	Govt. Senior Secondary School Hanspur (219341)	Shri Madhopur	Sikar	50000
100	Manoj Kumar Meena	Govt. Senior Secondary School Badipura (217631)	Kishanganj	Baran	50000
101	Arun Kumar	Govt. Girls Senior Secondary School Khanpur Mehrana (215906)	Singhana	Jhunjhunu	50000
102	Neeta Sharma	Govt. Girls Senior Secondary School Pachlangi (216152)	Udaipurwati	Jhunjhunu	50000
103	Damoder Prasad Shrma	Govt. Primary School Naik Meghwalon Ki Dhani Panchala Siddha (426367)	Khinwsar	Nagaur	50000
104	Swarnjeet Kaur	Govt. Senior Secondary School Kharakheda (211151)	Tibbi	Hanumangarh	50000

Rajasthan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–फरवरी 2023 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	583	9964864
2	SIKAR	548	5500867
3	JHUNJHUNU	437	2979393
4	NAGAUR	420	2080729
5	BANSWARA	796	1110748
6	JAIPUR	1063	939976
7	JODHPUR	442	897968
8	BARMER	1141	831644
9	SAWAIMADHOPUR	318	818021
10	UDAIPUR	2843	768541
11	DUNGARPUR	1821	742537
12	ALWAR	1063	681207
13	JHALAWAR	592	659770
14	BUNDI	860	622523
15	TONK	1994	613605
16	BHILWARA	1050	612579
17	HANUMANGARH	322	590427
18	PRATAPGARH	562	566014
19	RAJSAMAND	940	554877
20	GANGANAGAR	2241	542273
21	AJMER	606	533666
22	DAUSA	689	425632
23	BHARATPUR	375	420306
24	KOTA	633	406468
25	PALI	631	402179
26	JALOR	673	395357
27	CHITTAURGARH	231	378477
28	BIKANER	515	355148
29	BARAN	111	349192
30	KARAULI	104	265702
31	DHAULPUR	595	215981
32	JAISALMER	421	100152
33	SIROHI	170	34506
	Total	**25790**	**36361329**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थानों/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Projects Submit किए गए एवं Adopt to school में 01 राजकीय विद्यालय को गोद लिया गया। माह फरवरी 2023 में 5 करोड़ 19 लाख से अधिक की लागत से कुल 26 Projects स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects निम्नानुसार है:–

क्र. सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/ व्यय (लाख में)
1	चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड कैमिकल लिमिटेड	1248	कोटा जिले के 09 व बांरा जिले के 03 राजकीय विद्यालयों में खेल मैदान का विकास का कार्य	172.00
2	जयपुर राउण्ड टेबल चैरिटेबज ट्रस्ट	1265	राउमावि बनी पार्क, जयपुर पश्चिम, जयपुर में बिल्डिंग, कक्षा–कक्ष, छात्र–छात्राओं के शौचालय, बिजली की सुविधा/बिजली की फिटिंग, पीने का पानी, बाउंड्री वॉल, एचएम रूम, रैंप, पानी की व्यवस्था, खेल का मैदान विकास, हैंड वाश सिस्टम, का कार्य	135.00
3	पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन आफ इण्डिया लिमिटेड	1243	राउमावि भाडाडर, धोड, सीकर में अन्य कक्षा–कक्ष का निर्माण कार्य	68.67
4	हल्दीराम एज्युकेशनल सोसायटी	1272	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बधिर, बीकानेर में छात्र–छात्राओं के शौचालय, बिजली की सुविधा/ बिजली की फिटिंग, पीने का पानी, फर्नीचर, मरम्मत एवं स्मार्ट क्लासरूम आदि का कार्य	43.00
5	श्री ओमाराम	1270	राउमावि करानी, केरू, जोधपुर में छात्र–छात्राओं हेतु हाथ धोने की व्यवस्था का कार्य	0.20
6	आइआइएल फाउण्डेशन	1269	राजकीय माध्यमिक विद्यालय जोडियामेव, तिजारा, अलवर में कक्षा–कक्ष का निर्माण कार्य	6.00
7	श्री छोक सिंह भाटी	1268	राउमावि गज्जु, मूंडवा, नागौर में रसोई विस्तार एवं बरामदा निर्माण कार्य	10.25
8	श्री पत्ता राम	1266	राउमावि ढींगसरा, खींवसर, नागौर में प्रधानाध्यापक कक्षा–कक्ष का निर्माण कार्य	7.16

Rajasthan Education Department

9	श्री कन्हैयालाल मीना	1264	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, धरियावाद, प्रतापगढ़ में मेन गेट का निर्माण कार्य	4.00
10	श्री लूणा राम भील	1262	राउमावि अडागरा भोनसागर, शेरगढ़, जोधपुर में मेन गेट का निर्माण कार्य	2.52
11	संगीता पांचाल	1261	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में वाटर कूलर की व्यवस्था का कार्य	0.50
12	श्री नरेश पाठक	1260	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में वाटर मोटर की व्यवस्था का कार्य	0.20
13	श्री योगेश शुक्ला	1259	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में चाइना मोजेक वर्क का कार्य	0.40
14	श्री प्रदीप शाही	1258	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में गार्डन पार्क निर्माण का कार्य	0.35
15	श्री अरूण कुमार डामोर	1257	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में बिजली फिटिंग का कार्य	0.35
16	श्री दिलीप कुमार पाटीदार	1256	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में मार्बल फिटिंग का कार्य	0.18
17	श्री दयाललाल पाटीदार	1255	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा हेतु मार्बल क्रय का कार्य	0.30
18	श्री दिनेश चन्द्र दवे	1254	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में फर्नीचर का कार्य	0.50
19	श्री मोहित जैन	1253	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में सीसीटीवी एण्ड कैमरा का कार्य	0.79
20	श्री दिगपाल सिंह पवार	1252	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में चाइना मोजेक वर्क का कार्य	1.06
21	श्री विनोद कलाल	1251	महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, अरथुना, बाँसवाड़ा में टीन शैड का कार्य	1.03
22	श्री सुमेर सिंह काजला	1263	सेठ गोपालराय हरसुखदास राउमावि लॉयल, खेतड़ी, झुंझुनू में इंटर लॉक लगवाने का कार्य	1.50
23	श्री श्रवण कुमार	1245	राउमावि मारोठ, नावा, नागौर में लैब उपकरण का कार्य	0.21
24	श्री आसु राम	1242	राउप्रावि वासन चौहान, सांचोर, जालोर में कक्षा-कक्ष का निर्माण कार्य	6.00
25	मोजेक इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड	1249	राउमावि भजेड़ा, किशनगढ़ बास, अजमेर में बिल्डिंग, कक्षा-कक्ष (1-8), छात्र-छात्राओं का शौचालय, पीने का पानी, बाउंड्री वॉल, रैंप, पानी की व्यवस्था, खेल का मैदान विकास, वर्षा जल संचयन, हाथ धोने की व्यवस्था, अन्य कमरे, प्रमुख मरम्मत का कार्य	35.33
26	मोजेक इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड	1250	राउप्रावि राठोड़ा का बास, बानसुर, अलवर में बिल्डिंग, कक्षा-कक्ष (1-8), छात्र-छात्राओं का शौचालय, पीने का पानी, बाउंड्री वॉल, रैंप, पानी की व्यवस्था, खेल का मैदान विकास, वर्षा जल संचयन, हाथ धोने की व्यवस्था, अन्य कमरे, प्रमुख मरम्मत का कार्य	21.91
			योग	**519.41**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के अन्तर्गत Adopt to school के माध्यम से गोद लिए गए विद्यालय

क्र. सं.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा तीन वर्षों के लिए गोद जाने वाले विद्यालय	अनुमानित लागत/ व्यय (लाखों में)
1	श्रीमति रूमा देवी (ग्राम विकास एवं चेतना संस्थान) बाड़मेर	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चवा, बाड़मेर	7.62

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अप्रेल, 2023 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा : अप्रेल, 2023

Kalpesh Dabi,
MGGS. Aanjana, Banswara

सुलोचना चौधरी,
राउमावि. सतवाड़ा, टोंक

Dhani Suthar,
MGGS. Aanjana, Banswara

Manasvi Jain,
MGGS. Aanjana, Banswara

Divya Makwana,
MGGS. Talwara, Banswara

पूजा कीर, रमती बैरवा,
राउमावि. सतवाड़ा, टोंक

खुशी,
राउमावि. सतवाड़ा, टोंक

रविना कुम्हार,
महात्मा गाँधी रावि. जाशमा, चित्तौड़गढ़

राजवन्ती,
राउमावि. सतवाड़ा, टोंक

वर्षिता सैनी,
राउप्रावि. बासबूरिया, अलवर

Niyati Patidar,
MGGS. Aanjana,
Banswara

पुनिता स्वामी,
राउमावि. बीएसएफ.,
बीकानेर

Jay Trivedi,
MGGS. Talwara,
Banswara

Megha Kadoti,
MGGS. Talwara,
Banswara

Rajasthan Education Department

Mohak Lodha,
MGGS. Nathdwara, Rajsamand

Mridul Sharma
MGGS. Nathdwara, Rajsamand

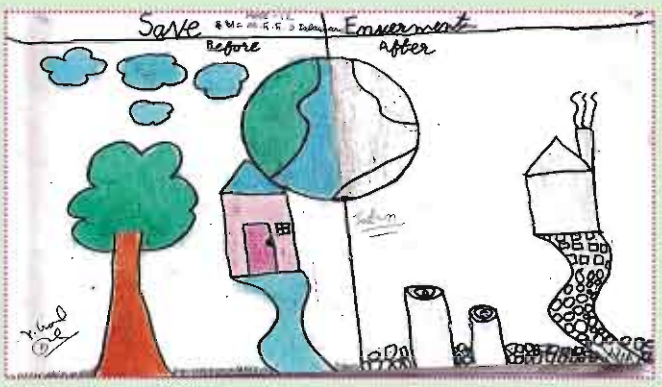

Jatin Upadhyay,
MGGS. Talwara, Banswara

Atulya and Kavyashi,
MGGS. Talwara, Banswara

राशि,
श्रीमती राधा राउप्रावि. बींजवाड़िया, जोधपुर

गायत्री,
श्रीमती राधा राउप्रावि. बींजवाड़िया, जोधपुर

Manas Trivedi
MGGS. Talwara, Banswara

Anita Meena,
GPS. Bijlai, Rajsamand

Deep Vyas,
MGGS. Talwara, Banswara

Neetu Gameti,
GPS. Bijlai, Rajsamand

Sangeeni Paliwal,
MGGS. Nathdwara, Rajsamand

वन्दना कुमारी,
राउप्रावि. माताजी का गाँव, राजसमंद

Rajasthan Education Department

चित्र वीथिका : अप्रेल, 2023

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में आयोजित सभी के लिए चिरस्थाई, मापनीय एवं प्रभावी शिक्षा हेतु बीकानेर संभाग प्रशासन एवं ICICI बैंक के सहयोग से कक्षा X व XII की छात्राओं को 25000 पॉकेट डिक्शनरी वितरण कार्यक्रम के आगाज की झलकियाँ

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/414/2023-25 शिविरा पत्रिका (मासिक) • अप्रेल, 2023 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अप्रेल, 2023 पृष्ठ 56 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्री अशोक गहलोत की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित शेखावाटी पर्यटन महोत्सव में महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) लक्ष्मणगढ़ की छात्रा पलक पाराशर मंच का अभिवादन करते हुए।

माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला के कर कमलों से सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर में हैन्डबॉल व बास्केटबॉल मैदान का शिलान्यास। इस शुभावसर पर श्रीमान गौरव अग्रवाल, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान; श्रीमान संजय धवन, वित्तीय सलाहकार, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान एवं अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते